परम पूजनीय योगीराज नन्दलाल ब्रह्मचारी जी महाराज



—

योगीराज स्वामी नन्दलाल ब्रह्मचारी जी के वारे में क्या कहा जाये, कठिन काम है यह; शब्द नहीं मिलते।

आपका जन्म 1902 ई० में फाल्गुण शुकल पक्ष अष्टमी (तिल अष्टमी) को श्रीनगर में आलीकदल के स्थान पर हुआ। पिताजी का नाम पं० सहजकौल था। बडा धनी, माननीय और प्रतिष्ठावान परिवार था। माता का देहान्त बचपन में ही हुआ था। पिताजी ने दूसरी शादी की थो। सौतीली माता का नाम जूनमाली था। सारा परिवार दूसरे ब्रह्ममण परिवारों की भान्ति प्रात: हारी पर्बत की परिक्रमा के लिए जाता था, जो दैनिक कार्यक्रम का हिस्सा था। बाल्यकाल में ही संसार से विमुख से हो गये। चौदह वर्ष की आयु में घर से निकल पड़े और साधु सन्तों की सेवा में लग गये। पहले पहल जिनपुर (सोपोर) में एक महात्मा के आश्रम में शरण ली और उनकी सेवा में लग गये। कई साल तक अनन्तनाग में गोसाईं गोण्ड में स्वामी आत्मारामजी और गौतमनाग में स्वामी ग्वाशाकाक जी जैसे महानुभावों और महात्माओं की संगति की। बीच में जिल्दसाज़ी का एक छोटा सा धन्धा भी शुरू किया था, जहां उनका शरीक स्वामी शामलाल जी सपरू थे, जो बाद में उनके अनुयायी और बड़े भक्त बने। संस्कृत भाषा का अध्ययन स्वामी श्रीधर बब नामी महात्मा (सोपोर के स्थान पर) के पास किया। उनसे ही शास्त्रों का ज्ञान भी प्राप्त किया और निपुन्न बने।

ध्यान धारणा की मस्ती की दशा में उत्तरी काश्मीर की घाटी का खूब भ्रमण किया। सारे जंगल छान मारे। इन दिनों उनकी दशा

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कुछ ऐसी थी, जो परमहंस रामकृष्णजी की तांत्रिक क्रियाओं के अभ्यास के समय बताई जाती हैं। नाखुन बड़े हुए थे, सारा शरीर धूल और मैल से लतपुत था; शरीर के कपड़ों का कोई होश न था। लोग उनके मस्तानापन और चमत्कारों को देखकर भय अनुभव करते थे। मानसरोवर और लद्दाख तक की यात्रा की। करीब दो साल 1945 ई० से 1947 ई० तक - शारदादेवी तीर्थस्थान टीठवाल में (जो अब पाकिस्तान में है) तपस्या की। उस समय उनका आचरण और उठने बैठने में परिवर्तन आया हुआ था और वह पूर्ण रूप से साधु-महात्माओं का सा जीवन व्यतीत करते थे। पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन और हवन-यज्ञ खूब करवाते थे। सारे हिन्दू परिवार जो शारदाजी के स्थान पर रहते थे, आपके अनुयायी बन गये थे।

1947 ई० को जब पाकिस्तान ने काश्मीर की घाटी को हथियाने के उद्देश्य से आक्रमण किया तो स्वामी जी शारदाजी में ही थे। आप के चमत्कारों की कहानियां मुसलमानों के मुख से सुनकर और आप से वार्ता-लाप से आक्रमणकारी बहुत प्रभावित हुये और उनकी इच्छानुसार उन को सही-सलामत सारे हिन्दू परिवारों के साथ भारतीय सीमा के भीतर कुपवारा ले आये और आज़ाद कर दिया। इसके बाद स्वामीजी ने उत्तरी घाटी में परिवर्तित परिवारों को फिर से हिन्दू धर्म में लाने का बड़ा कार्य सम्पन्न किया, जिसकी सारे लोगों ने काफी सराहना की। कुछ देर के लिये गौरीपोर-बुमई (सोपोर) में एक सेब के बगीचे में अपनी साधना और तपस्या जारी रखी। अन्तरध्यान होने तक काफी चरस पीते थे, चौबीसों घन्टे चिल्म मुंह से लगी रहती।

टिक्कर गांव में एक अपनी कुटिया बनाई, और आश्रम और धर्मशाला की स्थापना भी की। आपके दर्शन पाने के लिए दूर-दूर से लोग आने लगे। सारे धर्मों के लोग आप से प्रभावित थे। मुसलमान संगीतज्ञ भी सोफियाना संगीत सुनाने के लिए आपके पास आते और आपके विचारों को सुनकर कृतार्थ हो जाते। कहते थे, कि साधु-सन्यासी एक बड अथवा चिनार वृक्ष के सामान होता है, जिसकी छत्र-छाया पाने के अभिप्राय से गृहस्थी अपने प्रतिदिन के कष्टों का निवारण के लिए थोड़ी देर के लिए खींचे चले आते हैं। साधु उनको सांत्वना देता है, हिम्मत बंधाता है, पानी पिलाता है और थोड़ी सी खाने की

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सामग्री देता है, जिससे गृहस्थियों को शक्ति का संचार होता है और वह फिर अपने काम में लग जाते हैं। बार बार कहते कि परोपकार बहुत बडी साधना और तपस्या है।

यह कहना गल्त न होगा कि आप महाऋषि थे। आपने अपने तपोबल और अपनी साधना से काल पर विजय पा ली थी। उनके पास बैठने से ऐसा प्रतीत होता था कि समय की घड़ी और काल चक्कर थम सा गया है। उनकी शशिकला जाग उठी थी; वह छठी ह्यस के स्वामी थे। प्रश्नों का उतर बिना पूछे फट से देते थे। आगन्तुक को देख कर ही जान जाते थे कि वह कहां से आया है और उसके आने का क्या अभिप्राय है? उसकी समस्या का समाधान होगा भी या नहीं? उस के संस्कार क्या हैं? आगन्तुक यह बातें सुनकर विस्मयता से भर जाता और थोडी देर के लिये होश गंवा देता। कई तो पसीने से पानी पानी हो जाते। समय पड़ने पर यह सब बातें विस्तारपूर्वक बताते थे।

आजकल के ज़माने में बुद्धिजीवियों का बोलबाला है। हर एक बात को बुद्धि की कसौटी पर परखा जाता है। पर आपके चरण कमलों में बैठकर बुद्धि दम तोड़ देती थी और मस्तिशक काम करना ही छोड़ देता था। अपने जीवन काल में ऐसी करामातें की, जिनपर अब विश्वास नहीं होता। पर सत्य यह है कि आपने मुर्दों को पुन: जीवन दान दिया। गुन्ना (Russel's Viper) से डसे हुये पुरुष को फिर से जीवत किया और वह देखते-देखते उठ खडा हुआ। दिल की बीमारियों से पीडित व्यक्तियों को नया जीवन जीने का अवसर प्रदान किया, जिनको डाक्टरों ने निराशाजनक बताकर तिरस्कृत किया हुआ था। त्यागी हुई कन्याओं को फिर से उनके पतियों से मिलवाया। बांझ गायों के थनों से याचना करने पर दूध की धारायें प्रवाहित होने लगी। दमे-खांसी रोगों से पीड़ित लोग चलने फिरने लगे और फिर से अपने काम में जुट गये। कर्मवान पुरुषों को समाधि में जाने का रास्ता मिल गया और आध्यात्मिक उत्थान हुआ। संसारिक भोग-विलास और धन-वैभव की प्राप्ति तो साधारण सी बात थी। पाखंडी फकीरों की चुन्नौतियां स्वीकार की और उनको नीचा दिखाया। आप पीडितों को भिन्न भिन्न प्रकार के अचार खिला कर स्वस्थ कर देते थे।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भगवान श्री कृष्णजी ने गीता जी में कहा है—

"मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वत:।"

(अर्थात हज़ारों मनुष्यों में कोई ही मनुष्य मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करता है, और उन यत्न करने वाले योगियों में भी कोई ही पुरुष मेरे परायण हुआ, अथवा सिद्धि प्राप्त कर ली, और उन सिद्धों में से कोई विरला ही मेरे मत को जानता है; यथार्थ मर्म से जानता है) इस श्लोक की कसौटी पर स्वामी नन्दलालजी ब्रह्मचारी पूरे उतरते हैं, इसमें कोई शंका नहीं। यह अतिशयोक्ति कदापि नहीं। इनके जन्म पर ही इनही के परिवार के एक निष्ठावान और धर्मवान पुरुष श्री अमरकौल ने भविष्यवाणी की थी कि यह लड़का हमारे परिवार के नाम को चार चांद लगायेगा।

आपके गुरू महाराज, स्वामी लालजी महाराज (काशी वाले, जो अपने अखाड़े के हाथी पर गर्मियों के चंद मास गुज़ारने के लिए, लगभग हर वर्ष काश्मीर जाते थे) ने एक बार कहा भी था कि ब्रह्मचारी नन्दलाल ने वह सब कुछ केवल छ: मास में प्राप्त किया जिसको पाने के लिये स्वयं लालजी महाराज को बारह वर्ष की कठिन तपस्या और निरन्तर प्रयास करना पड़ा था। स्वामी नन्दलाल जी ब्रह्मचारी के योग अभ्यास की उपलब्धियों को देखकर स्वामी लालजी अपने प्रिय शिष्य के लिए स्वयं ही आसन लगाते थे। यह किसी भी शिष्य के लिए बड़े ही हर्ष और गर्व की बात हो सकती है। यह अलग बात है, कि स्वामी नन्दलालजी ब्रह्मचारी अपने गुरु के सामने आसन गृहण नहीं करते, ऐसा गुरु शिष्य मर्यादा की अवेहलना होती, पर वह इस मान की स्वीकृति अपनी उंगुलियों और अंगूठे के स्पर्शमात्र से करते और अपने नेत्रकमलों पर लगाते। फिर अपने प्रिय गुरु की सेवा में जुट जाते।

स्वामीजी का एक एक शब्द भविष्यवाणी होता था। आपने अपने जीवन काल में दो आश्रमों की स्थापना की। एक टिक्कर में कुपवारा के निकट और दूसरा हुशरू में—चाडुरा तहसील में। दोनों आश्रम यात्रियों के लिए तीर्थ स्थान बन गये हैं और सारी घाटी में और बाहिर भी काफी प्रख्यात हैं।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

जब अन्तरध्यान होने का समय आ गया तो डंके की चोट से कह डाला कि गौरी तृतीया को समाधिष्ठ होना है। और 1968 ई० को देहली में पम्पोश कालोनी में पं० प्रेम नाथ जी साधु के निवासस्थान पर समाधि द्वारा अंतरध्यान हो गये, जिस बारे में उन्होंने सारा ब्यौरा साधु साहिब को पहले ही बताया था। आपको अन्तरध्यान हुये इतना समय गुज़रा फिर भी आप मुश्किल पड़ने पर और संकट की दशा में अपने सेवकों की सहायता करते हैं। आपका नाममात्र ही कई लोगों के ज़ख्मों पर फाहे का काम करता है; धर्म-कर्म करने की प्रेरणा भी मिलती है।

आपके तीन शिष्य हुये हैं—स्वामी विभीशणजी, स्वामी कराल बब और स्वामी मस्तरामजी। विभीषण जी जम्मु में हैं और धर्म प्रचार में लगे हुए हैं। करालबब जी का देहान्त इसी वर्ष हुआ। आप बड़े सिद्ध पुरुष थे। आपके अनुयायी-सेवक सैंकड़ों की तादाद में हैं। स्वामी मस्तरामजी की जीवनी का वर्णन इसी पुस्तक में अलग से दिया गया है।

भाग्यवान और कर्मवान थे वह सब लोग जिनको योगीराज स्वामी नन्दलाल ब्रह्मचारी जी के चरण कमलों में बैठने का अवसर मिलता था और सत्संग के भागीदार बन जाते थे।

जून, 1991
जम्मू।

—मोती लाल "साकी"
—राज कुमार खशु
—काशी नाथ भट (वकील)

—o—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri



परम पूजनीय योगीराज श्री मस्तबब जी महाराज

परमेश्वर क्या है और परमार्थ क्या ? इस पर भिन्न-भिन्न धर्मों के भिन्न-भिन्न मत और धारणायें हैं, और परमब्रह्म परमेश्वर को अनुभव में लाने और साक्षातकार करने के लिए कई रास्ते दर्शाये गए हैं। स्वामीजी ने इस लक्ष्य को पाने के लिए भक्ति मार्ग अपनाया हुआ है, जो रास्ता लंबा अवश्य है, पर है सुगम, जिसमें बाधायें बहुत कम आती हैं। यह बात स्वामीजी ने स्वयं ही एक प्रश्न के उत्तर में एक जिज्ञासु पुरुष को बताई।

स्वामीजी जीवनमुक्त महात्मा हैं। आपके सामने बैठने से सारे संकल्प-विकल्प क्षणमात्र में दूर हो जाते हैं और मस्तिशक हल्का हो जाता है। अपार शान्ति प्राप्त होती है। अपने स्वाभाविक प्रेमपूर्ण बर्ताव से अतिथियों और सेवकों का मन मोह लेते हैं। आपमें अद्‌भुत आकर्षण शक्ति है। कहते हैं, प्रेम का बांटना ही साधना है और परोपकार तपस्या। मूक रूप से अनुभव कराते हैं, पास बैठे व्यक्ति के संशयों का समाधान तुरन्त मिल जाता है, केवल दृष्टिमात्र से। शायद आपके बारे में ही स्वामी लछकाक जी ने कहा है कि "ज़ीव यलि गछ़ि आत्मस लीन सु ज़ीव अद्‌ ईश्वर" अर्थात जब जीवात्मा आत्मा में लींन हो जाती है, तो यही जीवात्मा ईश्वर स्वरूप बन जाती है।

स्वामीजी का नाम सोहनलाल था, जिसको बदलकर उनके गुरु महाराज स्वामी नन्दलालजी ब्रह्मचारी ने मस्तराम कर दिया। आपके गुरु ने देखा था कि आप काफी लग्न के साथ उनकी सेवा में सदा ही तत्पर और मस्त रहते हैं।

स्वामीजी एक खुली किताब हैं, जिस आसन पर विराजमान हैं, वहीं पर भोजन करते हैं। आगन्तुकों का आदर-सत्कार करते हैं। वहीं पर बैठे-बैठे सत्संग करते हैं। भजन गाते हैं, ध्यान धारणा में लगे रहते हैं। कोई अलग सा कमरा नहीं और कोई निजी बैंक खाता भी नहीं। यह सब बातें महाऋषि रमन में भी थी, ऐसा सुनने में आया है।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

यदि चमत्कार करना ही परमार्थ-प्राप्ति की निशानी है, तो ऐसे कई लोग हैं, जिनको स्वामीजी के प्रताप से काफी फल मिला है। नौकरियां मिल गई, मकान बन गए, बेटे-बेटियों की शादियां हुई। धन दौलत मिली, वैभव मिला और संसार की भोग-विलास की सामग्री प्राप्त हुई। कई ऐसे पुरुष भी हैं, जो विषम से विषम बीमारियों से मुक्त हो गये। कई ऐसे भी उदाहरण हैं, जब कई सेवक जटिल और खतरनाक परिस्थितियों में आपके नाम लेने से ही ऐसी दुर्दशा से बिना किसी कष्ट के निकल आये।

आपने पंजाब में भठिंडा ज़िला के बुढलाड़ा गांव में 1930 ई० में मघर शुकल पक्ष अष्टमी को जन्म लिया। आपके पिता का नाम श्री ब्रह्मानन्द था और माता का नाम श्रीमती परमेश्वरी देवी। सांझा ब्रह्मण घराना था। समृद्ध प्रतिष्ठावान लोग थे। सारा परिवार साधु सन्तों की सेवा में लगा रहता था, जिसमें स्वामीजी पेश-पेश रहते थे। साधु-सेवन, पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन, हवन-यज्ञ में छुटपन से ही लगाव था।

आपकी शादी 23 वर्ष की आयु में श्रीमती हुकम देवी से हुई। छः साल तक गृहस्थ आश्रम में रहे, और तीन संतानें हुई—दो लडकियां और एक लडका। पर मन न लगा, वैराग्य हुआ और संसार गृहस्थ से विमुख हो गये। सन्यास लिया और भारत का भ्रमण किया। अपने उद्दश्य की प्राप्ति के लिये काश्मीर पधारे। टिक्कर गांव (कुपवारा) में ब्रह्मचारी स्वामी नन्दलाल जी से मुलाकात हुई। आकर्षित हुए और उन्हीं के हो गये। गुरु-शिष्य का रिश्ता बंध गया। स्वामी नन्दलाल जी ने आपके लिए आसन छः मास पहले ही लगा रखा था और अपने सेवकों से कह रखा था, कि इस आसन को गृहण करने के लिए एक बाबाजी आ रहा है। मानना पड़ता है, कि गुरु-शिष्य का नाता जन्म-जन्मान्तर का होता है।

अपने गुरु महाराज के साथ रहने का केवल चार साल का अवसर मिला— 1964 ई० से 1968 ई० तक। अपने प्रिय गुरु के महा समाधि लेने पर आपको काफी दुख हुआ और परेशान भी रहे। उन की आज्ञानुसार कुछ देर के लिए हुशरू आश्रम में रहे, पर मन न लगा। प्रेरणा मिली और दृष्टान्त हुआ। बादीपोर (नागाम-चाडुरा) के प्राचीन अस्थापन श्रीमहाराज्ञा भगवती के मन्दिर के निर्माण कार्य में जुट गए। अपने कर-कमलों से पहाड़ को काट-काट और खोद-खोद कर इस पवित्र

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

स्थान के लिए जगह बना ली और साथ में एक आश्रम भी खड़ा किया। इस निष्काम कर्म से भक्तजन काफी प्रभावित हुए और स्वामीजी के अनुयायी बन गए। आपके प्रताप से इस पहाड़ी पर जल का एक स्रोत फूट पड़ा, जिस से अब सारा साल निर्मल स्वच्छ जल-प्रवाह बहता है, जो खाने-पीने और पूजा-पाठ के लिए पर्याप्त है। यह आश्रम काफी ऊंचाई पर सुन्दर रमणीय स्थान पर स्थित है, जहां से काश्मीर घाटी के सुन्दर प्राकृतिक दृष्य का निरीक्षण होता है। सारा आश्रम और पवित्र मन्दिर एक हरे भरे कुन्ज से घिरे हुए हैं, जो काफी सुहावना लगता है। वास्तविक स्वर्ग है।

जम्मू में भी 1975 ई० को पटोली मंगोत्रियां में एक और आश्रम की स्थापना की, जो अब श्री मस्तबब आश्रम के नाम से संस्कृति का अनुपम केन्द्र बन गया हैं। यह आश्रम भी बादीपोर आश्रम की भान्ति काफी प्रख्यात हैं। हर समय यात्रियों का तांता बना रहता है। भजन-कीर्तन, पूजा-पाठ, धार्मिक सत्संग और हवन-यज्ञ तो इस आश्रम के प्रतिदिन के कार्य-क्रम बन गये हैं।

इनके सहवास से कई पुरुषों और स्त्रियों का अलौकिक चमत्कार देखने को मिलते हैं और कई तो देखते-देखते स्माधिष्ठ हो जाते हैं। स्वामी जी को बहुत काश्मीरी भजन कंठस्थ हैं, हालांकि काश्मीरी आपकी मात्रभाषा नहीं है। समय पड़ने पर वह सारी रात यह भजन गा सकते हैं। पर इस समय वह पिछले चार वर्ष से मौन धारण किये हुए हैं। आप पूरी तरह काश्मीरी ब्राह्मणों की संस्कृति में रंगे हुए है।

आपने अब तक सात महा गायत्री जप-यज्ञों का अनुष्ठान करावाया। जिसमें छप्पन लाख मंत्रों का पाठ हुआ। यह सारे यज्ञ पूरी वैदिक रीति और कर्मकांड के अनुसार कराये गये। आचार्यों और पंडितों ने इस कार्य को बड़ा सराहा और प्रशंसा की। प्रति यज्ञ सात से दस दिन तक चलता रहा, जिनमें सैंकडों भक्तजन सम्मिलत हुये। इस कलिकाल में इतनी मेहनत और लग्न से इन जप यज्ञों का आयोजन और सम्पन्न करवाना आश्चर्यजनक बात है। भाग्यवान हैं वह सज्जन और सतपुरुष जिनको आपके चरण-कमलों की छांव में बैठने के लिए स्थान और समय मिलता है।

जून, 1991 —राज कुमार खशु
जम्मू। —एच. सी. कटोच

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

विषयसूची

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

—o—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

*शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध-जो छपा है	शुद्ध-जो होना चाहिये
2	8	अवय	ओय
13	5	यमे	यमी
13	15	स्थानस	अल्थानस
15	8	65	63
15	11	वादशाह	बादशाह
15	15	में	के
17	5	मुह	भुह_
17	7	त्यलि	यलि
18	18	रक्षसस	रखचस
19	17	काय	काम्
20	9	ज्ञनका	ज्ञलका
21	4	जनका	जालका
22	23	वर्षं	वर्षं
29	11	फो'जा	फो'जसे
37	6	(तस और गुरु के बीच 'यस' होना चाहिये)	
37	6	नाथो	राणो
37	6	रानम	रा'ञिम
37	8	ओसुभ दुर्लभ बन्योम सुलभ	सुलभ आ'सिथ गोमो दुर्लभ
37	8	स्वराज लो'बुम वो'न्दे मंज्ञ	सु राज लो'बुम घरे वया
38	25	साध् वन्य्	साध्वुन
41	15	छुय बिहित	व्यूठुय
62	21	तुलन	तोलनै
65	22	हृतकार	हितकार

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध-जो छपा है	शुद्ध-जो होना चाहिए
75	6	मूलाधारुक	मूलाधार दारुक
85	5	नमनि	निर्गुण
85	8	ज्ञान दानु-२ खास घासु मंज़ु चा़र	ज्ञान दानि घासु मंज़ु दानु दानु चा़र
86	13	संज़ा	मंज़ा
109	15	रोज़नम	रोज़्यस न
119	12	कर्य	कर्म
119	23	स्परूप	स्वरूप
126	19	ख्यूनुय	ह्यूनुय
129	8	त्यठ	प्यठ
140	14	नार	नारुताव
150	19	वालुवुन	पालुवुन
155	17	वोंन्य	वदुन
157	18	छोर	छो़'र
167	16	वान	पान
169	9	हे	तस
169	18	च'व	च़य
170	8	चा़मुच़	चोमुत
171	15	शीतल	शीन
171	19	ओतुर	आतुर
172	6	ज्ञानकुल	ज्ञानुकुय
181	1	नाम्र	नाम
181	19	छ्जि	ज़ि
181	20	ति	छि
187	6	ज़ेठ	च़ेर
191	11	पो'क्तस	मो'क्तस
196	6	सरु	सरु
197	11	राज़	राग
197	15	तलवुन	ललवुन

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध-जो छपा है	शुद्ध-जो होना चाहिये
202	6	दयान	दयाल
203	12	गछ़ुमु	गछ़_तम
205	21	अन्तग	अन्तर
205	21	भाति	भाग्य
206	3	वृच़्_	व्रच़्_
206	6	वो'ज़	बो'ज़
208	17	गा'मच़्	गोमुत
210	15	गा'सिल	वा'सिल
210	22	अह्वाल	अवह्ाल
220	8	आमुत	गोमुत
222	14	निर्मल	नोव् नोव्
224	4	दीवो	शीवो
229	3	जामय	जामा'य
229	9	नमा'य	नामा'य
234	10	खान	खान के
234	11	जो	(जो
234	13	थे;	थे)
234	25	का	के
234	25	प्रपात	का पात्र
		किसी पर	कोई

—o—

*कृपया इस पुस्तक की ऊपर दी हुई अशुद्धियां ठीक कीजिए ।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

काश्मीरी भक्ति काव्य-एक समीक्षा

काश्मीरी काव्य का इतिहास लल द्यद के आत्मज्ञान और आत्मबोध से भरे 'वाख्यों' से होता है। लल द्यद सिर्फ कवयित्री ही नहीं थी, बल्कि एक महान योगिनी और दार्शनिक भी थी। आपके 'वाख्य' आत्मज्ञान का वह अमृत हैं, जिसे पीकर पाठकगण हर्ष और उल्लास की परम सीमा को पहुंच जाते हैं। लल द्यद की हम सब पर सब से बड़ी कृपा यही है कि उसने काश्मीरी शैवमत की सूक्ष्म वाणी को ज्ञानियों और आचार्यों के दायरे से बाहर निकाल कर एक साधारण पाठक के लिए समझने योग्य बना दिया। कवयित्री की हसियत से आपका यह महान कार्य हमेशा याद रखा जायेगा कि लल द्यद ने काश्मीरो शैवमत के निर्गुणवाद को काव्य का रूप दे दिया। लल द्यद 'वाख्यों' को महानता का और नया प्रमाण हो सकता है कि उनके 'वाख्यों' का पाठ मन्त्र समझकर प्रतिदिन प्रातः और सायंकाल को किया जाता था। उनकी महानता पिछले छः सौ साल से लगातार लोगों को अपनी ओर प्रेरित और आकर्षित किये हुये हैं।

2. लल द्यद के साठ 'वाख्यों' का संस्कृत अनुवाद अठारवीं शताब्दी में भास्कर राज़दान ने किया था और यह लल द्यद पर लिखी जाने वाली पहली पुस्तक थी। लल 'वाख्यों' का अंग्रेज़ी अनुवाद सबसे पहले सर जार्ज ग्रयर्सन ने किया और इसके बाद सर रिचार्ड टेम्पल ने इस काम को हाथ में लिया। प्रो० ज़ियालाल कौल ने भी ललद्यद के वाख्यों का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया है, और पं० जानकी नाथ भान और प्रोफ़ेसर बी. ऐन. पारिमू ने भी। लल द्यद के वाख्यों का हिन्दी अनुवाद शम्भूनाथ हलीम, डा० शशी तोशखानी और डा० शिबन कृष्ण रैना नें किया है। इन वाख्यों का उर्दू अनुवाद प्रो० नन्दलाल कौल 'तालिब' ने भी किया है, और मोती लाल साकी ने भी इनका काश्मीरी गद्य में अनुवाद किया है। आपके वाख्यों का फार्सी अनुवाद भी चन्द ऋषिनामों (नुन्द ऋषि की रचनाओं का संग्रह) में दिया हुआ है। ललद्यद काश्मीर की वह महान योगिनी और कवयित्रि है, जिसके बारे में सबसे ज्यादा और काफी मेहनत से लिखा गया है, यद्यपि उनके वाख्यों के सम्पादन में किसी किसी जगह सहज़ानन्द, रूप भवानी, लछ काक और यहां तक कि कृष्णजी राज़दान की कविता को भी उनके खाते में डाल दिया गया है।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

3. लल द्यद के बाद हमारे आत्मज्ञान और आध्यात्मिक कविता का दूसरा पडाव सहज़ानन्द हैं, जिन्हें काश्मीरी हिन्दू नुन्द ऋषि के नाम से जानते हैं। उनकी कविता का रूप "शु्यक" (श्लोक की काश्मीरी रूपरेखा) हैं। सच पूछिये, तो काश्मीरी भाषा में भजन का प्रारम्भ सहज़ानन्द की कविता से ही होता है। सहज़ानन्द के श्लोक ज्ञान-विज्ञान और आध्यात्मिकता के साथ-साथ, अहिंसा, भातृभाव और छल कपट से दूर रहने का संदेश देते हैं। सहज़ानन्द ने अपना सारा जीवन शाकाहारी और वैष्णवी रह कर गुज़ारा। पहले केवल सब्ज़ियां खाकर निर्वाह करते थे, बाद में सब्ज़ी फल-फूल का आहार भी त्याग दिया और सिर्फ पानी पीकर ही आत्मरक्षा की। उनकी ज़ात 'सलिलाहार' और 'पत्राहार' ऋषि घरानों का संगम नज़र आती है।

4. इसके बाद हमारी दृष्टि अल्लखेश्वरी माता रुपभवानी के "वाख्यों" पर पडती है। माता अल्लखेश्वरी जगतमाता का साकार रूप थी। उनकी अमृत वाणी तो भक्तजनों के लिए दया का सागर है। लल द्यद और सहज़ानन्द की भांति आपके वाख्यों में भी भक्ति और परमात्मा के प्रति अपार स्नेह और भावना की मधुरता और संगीत है। आपकी रचनाओं पर बहुत कम काम हुआ है।

5. अरिणिमाल की कविता यद्यपि आत्मज्ञान या भक्तिरस के दायरे में नहीं आती, परन्तु इस भाग्य की मारी कवयित्री को काश्मीरियों ने बिल्कुल ही भुला दिया है। इस कवयित्री पर एक ओर तो विधाता का प्रकोप था ही, दूसरी ओर हमने भी उनकी कविता की तरफ कोई ध्यान न दिया। हमने अब प्रयास किया था, कि उनकी कविता को किसी प्रकार इक्कठा किया जाये, इसमें हमें सफलता नहीं मिली। फिर भी जो कुछ थोडा इस पुस्तक में दिया गया है, एक उपहार समझना चाहिये।

6. भक्तिकविता में अगला नाम वासुदेवजी का आता है। आपकी कविता में रस है और संगीत भी। वह अपने भीतर के अनुभव को मीठे और सुरीले शब्दों में पिरोता रहा है। वासुदेवजी के बारे में मालूम नहीं कि वह कब पैदा हुये और कब अन्तरध्यान। परन्तु यह बात सिद्ध है कि वह प्रकाशराम जी से पहले हो गुज़रे हैं। अनुमान है, कि वासुदेव जी मागाम (बीरवाह) इलाके के रहने वाले थे। आपके कुछ भजन हमें प्रकाशराम के रामायण में शामिल नज़र आते हैं।

7. भक्तिमार्ग में प्रकाशराम का रामायण काश्मीरी में महाकाव्य

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

का मार्ग दर्शन करता है। प्रकाशराम के रामायण को अन्य काश्मीरी रामायणों पर श्रेष्ठता प्राप्त है। उनके रामायण की खास बात उसका मुकामी रंग है। लगता है कि सारे रामायण की घटनाओं का सम्बन्ध सिर्फ काश्मीर की सुन्दर घाटी से है। रामायण के बारे में यह बात याद रखने योग्य है कि वह विशिष्ट रामायण जिसमें सीताजी को रावण की बेटी कहा गया है, बहुत पहले काश्मीर में लिखे गए संस्कृत रामायण का ही भाग है। रामायण से पहले यद्यपि महाभारत को भी काश्मीरी रूप दिया गया है, परन्तु यह मालूम नहीं कि यह अनुवाद किसने किया था।

8. पं० नन्दराम परमानन्द की कविता कृष्णभक्ति का बहुमूल्य गुलदस्ता और आत्मबोध की विधि की आकाश वाणी है, जिसे पढ़कर पाठक को बड़ी ठंडक और शान्ति का अनुभव होता है। परमानन्द की कविता में परमब्रह्म परमात्मा के प्रति काफी भावुकता है और इस भावुकता के मैदान में वह सूरदास और मीरा से भी आगे हैं, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। आपकी कविता में चैतन्य महाप्रभु की लग्न है और जयदेव की वाणी की मधुरता और कल्पना की उडान भी। अपने रंग में काश्मीरी भाषा का कोई दूसरा कवि परमानन्द की समता नहीं कर सकता। आपकी कविता का अंग्रेज़ी अनुवाद भी हुआ है, जो मास्टर ज़िंदा कौल ने किया था।

9. कृष्णजी राज़दान की कविता को जार्ज ग्रियर्सन ने सबसे पहले रायल एश्याटिक सोसाइटी, बंगाल, की ओर से सात भागों में "शिव प्रणय" के नाम से संस्कृत अनुवाद के साथ उनके जीवनकाल ही में प्रकाशित किया था। महात्मा राज़दान साहिब वस्तुत: शिवभक्त थे, और शेष सब देवताओं को शिवशंकर का ही स्वरूप मानते थे। जिस अच्छे तरीके से ग्रियर्सन ने राज़दान साहिब की कविता को प्रकाशित किया था, वह सलीका और तरतीब हमें और कहीं दृष्टि में नहीं आती। सच तो यह है कि राज़दान साहिब की लीलायें और भजन वह मधुवन हैं जिसकी कल्पना मात्र से ही शरीर में संगीत की लहर दौड़ जाती हैं और मन आनन्द विभोर हो उठता है। आपके भजन स्वत: ही संगीत से भरे हैं।

10. भक्तिरस की कविता में सगुणवाद का आरम्भ वासुदेवजी से होता है। मास्टर ज़िन्दा कौल तक पहुंचते पहुंचते सगुणवाद फिर से निर्गुणवाद में बदल जाता है। मास्टरजी की कविता वस्तुत: लल द्यद की कविता

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

का ही पुनर-जन्म है। इसमें वह गरिमा नहीं जो लल द्यद के वाख्यों में है। अपितु भावना और अनुभव का गहरा संगम मास्टरजी की कविता का हिस्सा अवश्य है। भक्तिरस और आत्मज्ञान को कविता के सांचे में ढालने वाले और भी बहुत से लोग हैं, जिनमें विष्ण राज़दान, भास्कर, नीलकंठ, प्रेमी, साकी इत्यादि कवि शामिल हैं। परन्तु यह लोग वही कुछ गाते हैं, जो कुछ इनसे पहले कहा गया है।

11. ईश्वर भक्ति की यह परम्परा काश्मीरी पंडितों तक ही सीमित नहीं रही है। शाह ग़फूर, रहीम साहिब, शम्मस् फकीर, सम्मद मीर, अहमद बटवारी और अहद ज़रगर आदि की शास्त्रों की कवितायें जिनमें हिन्दू धर्म और देवमाला से सम्बन्धी बातों का वर्णन हैं, सुनने और पढ़ने योग्य है। निर्गुणवाद के यह कवि और साधक यद्यपि अपनी निष्ठा और ज़ात के कारण मुसलमान थे, परन्तु काश्मीर की मिली जुली संस्कृति को आगे बढ़ाने में काश्मीर के यह सोफ़ी कवि अपनी मिसाल आप हैं। आत्मज्ञान और आध्यात्मिकता के मैदान में हर एक साधक चाहे वह किसी भी धर्म से सम्बन्ध रखता हो, अन्त में एक हो जाते हैं और एक ही भाषा बोलते हैं। सोफियों का 'वहदत-उल-वजूद' वस्तुत: अद्वैयतवाद का ही रूप है।

12. भजनों का यह संग्रह हमने समय की सूक्ष्मता को दृष्टि में रखकर ही पेश किया है। इसकी तैयारी वास्तव में गुरूदेव स्वामी मस्तरामजी महाराज की इच्छा और प्रेरणा का परिणाम है। उनकी आज्ञा पर ही इस कार्य को हाथ में लिया गया और उन्हीं की कृपा और अनुग्रह मात्रा से यह संग्रह जनता के सामने हम पेश कर हैं। इस समय काश्मीरी पंडितों का समाज बिखरा पड़ा है और अनन्त मुसीबतों से दोचार है, जिसका हर एक को अनुभव है। हमारे सब सहारे टूट चुके हैं और केवल भगवान का ही सहारा रह गया है। हमारी प्रार्थना है कि यह संग्रह हम सबकी आत्मा की प्यास बुझाने का साधन बने और मुसीबतें झेलने की मानसिक और आध्यात्मिक बल भी प्रदान करे।

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!! ॐ

जम्मू मई-1991ई०

—मोती लाल 'साकी'

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri



श्री गणेश अस्तुती

1 ओंकार् रू'प छुक सर्व आधिकारो,
मूलाधार ध्यान् धा'रयो
सेधि दाता छुक विघ्न हर्तारी,
महा गणपथ ध्यान धा'रयो।

2 सा'रिनी ब्रोंठ छय गो'ड् अनवारो
जप् यगण्य सह्यकार'यो,
विकट् रूप छुक वीद ओंकारो मूलाधार०

3 ना'लि छय लाल् माल् नागेन्द्रहारो
बल दात् गणिशबल प्रार'यो,
रूद्रय गणन् हंदि सरदारो ,,

4 आदि शक्ति ह्'न्दे आधिकारो
एक् दन्त् वीद व्यसतार'यो,
शिवजी सुन्दि टाठि विघ्न निवारो ,,

5 परम शक्ति हन्दे सेवाकारो
यच्छा पोत्र व्यवहारा'यो,
बाल् चुन्द्र क्षूभ कासवनि शूभिदारो ,,

6 सर्व शक्ति माननि आगण्याकारो
प्रकरम् यमि संसार'यो
तीर्थ् तीर्थ् ब्रोंह च्'य पत् कुमारो ,,

7 ही लम्बोदरय सर्व उपकारो
मो'कलाव यमि संसा'रयो,
लम्बोदुरय करिथ आहारो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

8 यन्दराज़ुस यलि खो'त अहंकारो
ज़ोरन ति गोस लूर' पा'र'यो
मोकलोवथन छुक वख्शनहारो मूलाधार०

9 वेष्णनु को'रनय नु नमस्कारो
सो'दरस को'रथस वथ़ुवा'रयो
गज़ु मो'ख भविनय जय जयकारो ,,

10 वेष्ण भगवानस बूज़िथ ज़ारु पारो
कृष्ण पिंगलु अदु अवय आर'यो
वक्र तो'ण्ड बल छुय महा विचारो ,,

11 वस्त्र ना'लि छिय रंगु गुलनारो
च़ो'तुर बो'ज़ वडि सरकार'यो
चात्रि दरबारय लवु दरबारो ,,

12 मन्त्रनायकु ब्रह्म अवतारो
पूज़हथ गणपथयार'यो
सर्व स्यधु दिनकुय छुय इशारो ,,

13 वल्लभा सू'त्य छय सो स्वरूपदारो
अथनु क्यथु चो़र हथियार'यो
भूतन तु राक्षसन करान संहारो ,,

14 अविद्या सा'न्यु दन्तु सू'त्य मारो
मख सू'त्य पाफ गाल वार'यो
पदमु स्मर'नि सू'त्य क्रूध दो'ख हारो ,,

15 सिंह_यूग आसनु ज़ोरावारो
धूम्रवरणु संसार सा'रुयो
यमि भवसरु दितु "कृष्णस" तारो ,,

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गुरुस्तुति

1 अज्ञान घटे सिर्यं प्रकाश छुक आसवोनुय
ज़ान प्रकाश छुक आसवोनुय
ॐ श्री सत्गुरु क्षणु क्षणु छुम आसरु चोनुय

2 च़य छुक ब्रह्मा च़य हा विश्णु-महीश्वरै
च़य विश्वमय छुक अज़र अमर अक्षर थरै
बरु त्रन गुणन पादि प्रणाम भविनय म्योनुय ...ॐ श्री सत्गुरु०

3 चान्यन पादन ह्न्दि गरदे हुन्दय अंजनु
युस लागि नेत्रन देव द्रष्टि तमिसु छि वननु
यथ न कांह् वुछान तथ सदा च़य छुख वुछवोनुय ,,

4 दया सागरु करु म्य दया दीनस क्षीनस
सि'द्धी दित्तम मदुमोचन म्य बुद्धिहीनस
बु अदु कस वनु आ'रुत्य नाद छुक बोज़वोनुय ,,

5 शरण ब आसय च़्य्य प्योसय परण पादन
वरुम म्य दाससु थावतम कन आ'रत्यन नादन
तरनु भवसरु च्योन प्रभाव इमव ज़ोनुय ,,

6 छुक सिद्ध योगी बु छुस रोगी दिम म्य दवा
औषध चान्यन पादन हंज़ गरद छु ना
उत्तम चूरण सर्व रोगन छु कासवोनुय ,,

7 घटे गाशर चान्यि दयायि म्य रूग हटे
मटे छुसय तार भवसर अके वो'टे
लटे अके मो'ख म्य हावतम प्रज़लवोनुय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

8 सन्ताप अग्न पापु सू'त्यन गोमुत प्रबल
शेरस प्यठ थाव कर कमल पनन्य शीतल
संताप चल्यमु पाप गल्युम नों'व तय प्रोनुय ,,

9 सेतारु मनुक तारु चा'रिथ सदा दिवान
हृदु यथ ना कुने बो'द्ध म्या'त्र सो'य स्तुता ग्यवान
वृच् म्या'त्रि नचान कनव बोज़तम लोलु वनुवोनुय ,,

10 करतम सु दया वरतम तल च़रनार बिंदन
छुक बोध द्रष्टि चय दिवान अन्धन तु मन्दन
अन्दान छुय न्याय चाञि दयायि कर पाय म्योनुय ,,

11 चितामनि सो'न च़ बनावान छुक त्रामस
फोतसु मो'खतय पोखतु बनावान छुक खामस
चय घटि हुन्द लाल स्वामी नन्द लाल छुय नाव चोनुय ,,

12 यी वु नु ओसुस ती ओसुस ज़ानान वु पान
दयायि चान्ये यी वु छुस ती म्य ज़ोनुम ट'कान
रोवमुत लोवुम पजि़ लवित नजि़ रावरोनुय ,,

13 इमनु इमनु गव ज़ि यि मन चयय सू'त्य लयस
दयस सू'त्यन गयि ज़_ मीलिथ वा'ति पयस
भयस ज़य गोम दो'न म्य रूदुम कूनुय भासवोनुय ,,

14 भवसर तरनुक "नीलकन्ठस"* बनितन उपाय
स्वामी नन्दलाल तय स्वामी लालजी रूजि़तनु सहाय
छी तंग आ'मति अनज़ल ह्यथ छिय मंगवो'नुय ,,

——

*स्व० श्री नीलकन्ठ जी की भेंट अपने गुरु स्व० योगराज स्वामी नन्दलालजी (टिक्कर और हुशरू निवासी) के पाद्य कमलों में।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लल् द्यद्

काश्मीरी साहित्य के इतिहास में ल्ल द्यद् जैसा कोई कवि या कवयित्री नज़र नहीं आती। ल्ल द्यद् एक युंग पुरुष थी, जिसका वह आद्य भी थी और अन्त भी। उसकी कविता आत्मबोध और ज्ञान का वह गहरा सागर है जिसमें अनन्य नदियों और धाराओं का पानी मिलकर एक हो गया है।

2. वेदान्त और शैवदर्शन को जनसाधारण की बोलचाल काश्मीरी में ढालने का जो महान कार्य लल् द्यद् ने अपने आत्मबल और योग्यता से सम्पन्न किया, उसने आपके 'वाख्यों' को उपनिषदों के 'स्तोत्रों' की सी महानता प्रदान की है।

3. लल् द्यद् का असली नाम पद्मावती बताया जाता है। शायद यह नाम सुसराल वालों ने दिया था। अनुमान है, कि 'ललिता' उसके मायके का नाम रहा होगा, जिसकी काश्मीरी सूरत 'लल' है। आपका जन्म सिंहपुर (श्रीनगर के समीप एक गांव) में हुआ था और आप पाम्पुर (प्राचीन पद्मानपुर) में बियाही गई थी। लोककथन के अनुसार आपका देहान्त विजबिहाड़ा (प्राचीन विजेश्वर) में १३७७ ई० के बाद अथवा इसके आसपास हुआ होगा।

4. श्री सहजानन्द (नुन्द ऋषि) के 'ऋषिनामा' पुस्तक में अन्तिम बार आपका वर्णन नुन्दऋषि के जन्म से जुड़ा हुआ दिखता है। ऐसा लगता है कि आपका जन्म १३००—१३२० ई० के बीच के दौर में किसी समय हुआ होगा। कुछ महानुभाव आपका जन्म सन १३३५ ई० बता देते हैं, जो ठीक नहीं लगता, क्योंकि इकतालीस-बयालीस साल की आयु की कोई भी महिला द्यद् का नाम प्राप्त नहीं कर लेती, यह तो निश्चित है।

5. माता ललेश्वरी (लल् द्यद्) के बारे में बहुत सी ऐसी बातें

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

और धारणाएँ हैं, जिनका वास्तविकता के साथ कोई संबन्ध नहीं। वह सारी बातें काल्पनिक लगती हैं।

6. लल् द्यद् न सिर्फ एक महान कवयित्री या दार्शनिक थी, अथवा वह एक योगिनी और उच्च कोटि की साधक भी थी। वह योग अभ्यास की पराकाष्ठा को पहुंची थी, जिसको स्वामी योगानन्द जी महाराज ने 'Supreme mistress of Yoga' का नाम देकर मान्यता प्रदान की है। वैसे काश्मीर के ही नुन्द ऋषि ने

"तस पदुमानपोरचि लले
यमि ग'लि अमृत पिवो
तमि शिव वुछ थलि थले,
त्युथ म्य वर दितो दिवो"

कहकर ललेश्वरी की महानता' को पहले ही पहचाना था।

—o—

हचिवि हा'रंजि पेच्यि कान गोम्
अबक छान प्योम यथ राज़दाने
मण्ज़बाग बाज़रस कुल्फ़ रोस वान गोम्
तिर्थ रोस पान गोम कुस मालि ज़ाने।

———

आमि पनु सो'दरस नावि छस लमान
कति बोज़ि दय म्योन म्यति दियु तार
आम्यनु टाक्यनु पोञ ज़न शमान
ज़ुव छुम ब्रमान घर गछ़हा।

———

अ'सी आ'सि तय अ'सी आसव
अ'सी दोर क'र पतु वथु
शिवस सो'रि नु ज़्योन तु मरुन
र वस सो'रि नु अतय गथ।

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गुरुन वो'ननम् कुनुइ वच़ुन
नेबर् दो'पनम अन्दर अच़ुन
सुइ ललि म्य गव वाख त् वच़ुन
तवय हे'तुम़ नंगय नच़ुन।

ओमुइ अकुय अछुर पो'रुम
सुय हा मालि रो'छुम वो'न्दस मण्ज़
सुय हा मालि कनि प्यठ गो'रुम त् चो'रुम
आ'स'स सास त् सपन्यस सो'न।

अकुय ओंमकार युस नाभि दरे
कुम्बुय ब्रह्मांडस सुम गरे
अख सुय मंत्र युस च़्य'तस करे
तस सास मंत्र क्या ज़न करे।

मल वो'न्दि गोलुम
जिग़र मोरुम
अद् लल नाव द्राम
यलि दलि त्र्'वमस़ तती

यव ते'र चलि तिम अम्बर ह्यता
छोद यव ग'लि तिम आहार - अन
चिता सुपरि विचारस पे'ता
चे़ता देहस वान क्या वन।

न कुनि छो'ड़ुम् न कुन्य छोंड़ुम्
किय्सर वन् वोलुम गोत शाल
यी पर्स परनुम ति पानस पोलुम
अद् गोम मोलूम ज़ि ज़ीनिम हाल।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वेंनु वेंनु सूंत्यु कुन नो वातक
न व्यनु गछक अहंकारौ
सोंमुइ वेंतु मालि सोंमुय आसखु
समि व्यनु मुचरन वुरन्येनु ता'रि।

——

अन्दरी आयस चन्दरी गारान
गारान आयस ह्यिन ह्वी
चय्यु ए नाराण चय्य ए नाराण
चय्य ए नाराण इम कम वीह।

——

शय वन चयतनिथ शशिकल वुजुम
प्रकथु हुंजुम पवन सूंत्यु
लोलकि नारु वालिज वुजम
शंकर लोंभुम तमी सूंत्य ।

——

वु क्या कर इमन पांचन दहन तु काहनु
इम यथ ल्यजि वोंखशुन करित गये
सा'री समहन अकिस रज़ि लमहन
अदु क्याज़ि रावि हे काहन गाव ।

——

गो'रस प्रिछ़याम सास्य लटे
यस नु कें ह् वनान तस क्या नाव
प्रिछ़ान प्रिछ़ान थचिस तु लूसुस
कें हनस निशे क्याह ताम द्राव ।

——

नावद वो'रस अटि् गंड़ ड्योल गोम
देह काड़ ह्वो'ल गोम हेकु कह्यो
गुरुसुन्द वनुन रावन त्योलु प्योम
पह'लि रोस ख्योल गोम हेकु कह्यो ।

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अछ़्यन आए तय गछ़ुन गछ़्ये
पकुन गछ़्ये द्यन क्यो रात
योरय आय तूरि गछ़ुन गछ़े
कें्ह नतु कें्ह नतु कें्ह नतु क्यात ।

———

लल बु चा़यस सो'मनु बागु ब'रस
वुछुम शिवस शक्ति मीलिथ तु क्यात
लय करमसु वा'च़स अमृतु सरस
ज़िन्दय मुरस तु म्य करि क्यात ।

———

योसय शिला छय पीटस तु पटस
सोय शिला छय वो'तमो दीश
सोय शिला छय फिरव'निस ग्रटस
शिव छुय कष्टो तु चे़न वोपदीश ।

———

ल'ज़ कासी शीत निवारी
त्रन जल़ क'रि आहार
इ कुमि वोपदीश को'रुय वटा
अच़्य्तन वटुस सोच़यतन कठ द्युन आहार ।

———

हा चित़्ता कुव छुय लो'गमुत परमसु
कुव गोइ अपज़िस पज़युक ब्रोंत
दिश वो'ज़ वश को'रनख पर धर्मस
इन गछ़'नु ज़्यन मरनस क्रोंत ।

———

तल छुय ज़्युस तय प्यठ छुक नच़ान
वन्तु मालि वो'न्दु कवु पच़ चा़न छुय
सोरुय सोंबरिथ यती छुय मो'चा़न
वनतु मालि अन्न कवु रोचा़न छुय ।

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लतन हुन्द माज़ लारयोम वतन
अकी ह्यावनम अ'किची वथ्
इम इम बोज़न तिम् कोन् मतुन
लुलि वूज़ शत्तान कुनी कथ ।

शिवा केशवा — ज़नवा
कमलज़ नाथ नाम दारन यव्
म्य अबल्य का'सत्युन भव रोज़
सुवा सुवा सुवा सुवा ।

वाख मानस कोल अकोल ना अते
छोपि मो'धुर ना अति प्रवीश
रोज़ान शिव शक्ति ना अते
मो'ते कें्ह - तु सुइ वोपदीश ।

कुस पुश तय कुस पुशा'नी
कम कौसम ला'गिज़्यस पुज़्ये
कमि रसु गो'ड़ दिज़्यस ज़लचे दाने
कवु मन्थर शंकर स्व-आत्म वुज़े ।

मन पुश तै यछ़ पुशा'नी
भावुकि कौसम ला'गिज़्य्स पुज़े
शशि रसह् गो'ड़ दिज़्यस ज़लचे दाने
छोपि मन्तरु शंकर स्व-आत्म वुज़ !

आ'सि पोंदि ज़ोसे जामे
नित्ये स्नान करि तीर्थंन
वह्'रि-वरियस नोनुइ आसे
निशे छुय तु परज़्नावतन ।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गुरु शब्दस युस यछ़ पछ़ भरे
ग्यान् वगि रटि च़यत तो'रगस
यन्द्रे शो'मरिथ आनन्द करे
अद् कुस मरे त् मारन कस ।

— —

अभ्यासी सु-विकासी लय वो'थो
गगनस सगन म्यूल समि च़ूटा
शुनि गो'ल तय अनामये मोतो
योह्य वोपदीश छुय बटा ।

———

मिथ्या कपठ असथ त्रोवुम
मनस को'रुम सुय वोपदीश
ज़_नस अन्दर केवलज़ोनुम
अन्नुस ख्यनुस कुस छुम द्वेश ।

कामस सूत्यी प्रय नो भु'रम
क्रूधस दिय्तुम पवनुन फेश
लूभस मोहस च़रण च़टिम
त्रिश्ना च़जिम् गयस तोश

ल्यकु थोक् शेरि हे'च़म
निन्दा सांपनम पथ ब्रोंठ ताम
म्यति चे'हन कल नो छे'निम
अद् यलि सांपनिस तु वे'पेम क्याह ।

——

यथ सरस सिरि फो'ल ना व्यच़
त'थि सरु सक'लि पोत्र चन
मृग श्रगाल गं'डि ज़'लि हस्ती
ज़ंयनु ना ज़यन तो'तु'ई पे'न

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लल बो' द्रायस कपसि पोश् सच़्_य
का'डि तु दूञ कों'रनम् यच़ई लथ्
ता'इयि यलि खाजनमु ज़ाविज तहॅन्छ्य्य
वोवरिवान् गयम अलहांज़् इ लथ्
धो'वि यलि दिच़्नम साबन तु स'च़्इ
ज़ल म्य डींशिथ गयम सथ
स'च़्यि यलि फ़िरनम हज़ि हज़ि का' च़्इ
अदु ललि प्रावुम परमई गथु ।

———

परुन सुलभ पालुन दुर्लभ
सहज़् गारन सिक्ष्म तु क्रूठ
अभ्यासु कि गनिरय शास्त्र मो'ठुम
च़ैतन आनन्द निश्चय गोम

———

पुरान् पुरान् ज़्यव ताल फो'जिम
च़्य्य युग्ये क्रय तजिम नु ज़ान्ह
सुमरन फिरान न्यी'ठ तु ओंगुज गजिम
मनुच द्वई मालि च़्जिम् नु ज़ान्ह

———

लल बो द्रायस लो लरे
छांडान लूसम दुय्नु क्यो रात
वुछुम पंड़ित पननि घरे
सुय म्य रो'टमस निछ्तुर तु साथ ।

———

गगन च्यय् बुतल च़्यय्
च़्यय् द्यन पवन तु राथ
अर्घ च़ंदुन पोश पोञ च़्यय्
सोरुय च़्यय् तु लागी क्यातु ।

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

त्रेंशि वो'छि मो क्रेशिनावुन
यात्रि छ़ेई ताव्य संधारुन दीह
फठ चोन धारुन तु प्रारुन
कर उपकारन सो'इ छय क्रय

——

यमे लूभ मनमथ मद् च़ूर मारन्
वति ना'श मा'रिथ लोगुन दास
तिमयु सहज़ ईश्वर गारन
तिमयु सोरुय व्यदनु सास

——

शुन्युक मा'दान कोडुमु पानस
म्य ललि रूज़म नु बो'ध तय होश
भेदी सपनिस पानय पानस
अदु कमि हिलि फो'लि ललि मम्पोश।

——

छ़ांडान लूस'स पानय पानस
छे'पिथ ग्यानस वोतुम नु कों'छ़
लय कर'मस वा'च़स स्थानस
भ'रि भ'रि बानु तु चवान नु कोंछ़।

——

म'करिस मलज़न च़'लुम मनस
अदु म्य लो'बुम ज़'नस ज़ान
सु यलि ड्यूठुम निशि पानस
सोरय सुय तय बो' नु कूंछ़

——

ग्यानु'क्य अम्बर पा'रिथ तने
इमु पद ललि व'न्य तिम हृदि आं'ख
कार'णि प्रणवकि लय कर लले
च़यथ जीवि तु का'सन मरनन्य शेंख।

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

त्र्‌ न्यंग सरा सरी सरस
अकि न्यंगि सरस अरशस जाय
हरु मो'ख कौंसरु अख सुम सरस
सत्य न्यंगि सरस शिन्याह् कार

——

रुतु तु क्रुतुई सोरुय प॒ज्यम्‌
कनन न बोज़ुन अ'छन नु भाव
ओरुक दपुन यलि वोन्दु वुज॒यम
रत्नदीप प्रज़ल्यम वज॒नि वाव ।

——

कुश पोश तेल दीप ज़ल ना ग'छ॒
सदु भावु गो'रु कथ युस मनि हे'ये
शम्भोहस सो'रि नतु पनुनि यछ॒
सुय यी दपि ज़ि सहज़ा करे

——

शिवु शिवु करान हमसु गथ सो'रिथ
रूज़िथ व्यवहा'री द्यनु क्या राथ
लागि रो'स्त मन युस उदय करिथ
तस न्यथ प्रसन्न सुरु गो'रु नाथ

——

तन्त्र गलि तय मन्त्र मो'च॒
मन्त्र गो'ल तय मोते च॒यथ
च॒यथ गो'ल तय केंह् ना कुने
शिन्यस शिन्या मीलिथ गव

——

चिदा नंदस ग्यानु प्रकाशस
यिमव च॒यून तिम ज़ीवतय मुक्त
विशे'मिस संसारनिस पाशस
अबोध गंडाह् शेत्य शेत्य दित्य ।

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सहज़ानन्द (नुन्द्य ऋषि)

सहज़ानन्द का जन्म नाम "नन्द" था, यह बात आपने स्वयं ही बताई है। आत्म ज्ञान पाने के उपरान्त आप बहुत से नामों से प्रसिद्ध हो गये। चूंकि आपके पास सब धर्मों और सम्प्रदायों के पुरुष अध्यात्मिक ज्ञान प्रप्ति के लिए जाते थे, आप शेख-उल-आलम, शेख नूरद्दीन नूरानी, अलमदार-इ-काश्मीर, सरखेल-इ-ऋषियां नाम उपाधियों आदि से भी जाने जाते हैं।

2. सहज़ानन्द का जन्म 1377 ई० में खी जोगीपोरा में हुआ था, और आपने 65 वर्ष की आयु में रोपुवन के स्थान पर 1442 ई० में प्राण त्याग दिये। आपके शव को चा़र-रइ-शरीफ में दफन किया गया, जहां पर आज एक खानकाह है। आपके जिनाज़े में उस समय के वादशाह बडशाह ने भी शिरकत की। इतिहासकार ज़ोनराज ने आपको "यवनों के सब से बड़े गुरु" का नाम दे दिया है।

3. आपने काश्मीर में एक नये मत की आधार शिला डाली, जो ऋषिमत में नाम से मशहूर है। यह मत सम्पूर्णता एक वैष्णवी मत है। अहिंसा, शाकाहारीपन और दूसरों को दुख न देने का ऋषिमत में बार बार आगृह किया गया है।

4. सहज़ानन्द के पूर्वज वास्तव में किश्तवाड़ के राजपूत थे और आपके खानदान का सिलसिला उज्जैन के राजाओं से मिलता है।

5. आपके "शृ ुक्य" श्लोक (काश्मीरी काव्य) आत्मज्ञान और अध्यात्मिकता के रस भरे मधुर प्याले हैं। काश्मीरी मुसलमान आपके शृ ुक्यों को काश्मीरी कुरान का दर्जा देते हैं। काश्मीरी का पहला भजन भी सहज़ानन्द का लिखा हुआ है। आपके

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

"शृ्क्य" ऋषिमत का दर्शन बयान करते हैं।

6. घाटी में आपके नाम पर कई दरगाहें और खानकाहें मौजूद हैं, जिनमें कायमूह, चिम्यर, होंच़्यपोर, द्रयगाम और रोपव्रन काफी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। परन्तु चा़र-रइ-शरीफ, जहां आपका शव दफन किया गया है, हर रोज़ काफी यात्री जाते हैं और वहां हरदम मेला सा लगा रहता है। आपकी दरगाह पर हर धर्म और सम्प्रदाय के लोग बिना किसी फर्क के मिनतें मांगते हैं और चढ़ावा चढ़ाते हैं।

—o—

द्यु्तुथ नरस गोर त़ तुलिरिस माछी
द्यु्तुथ हलम ह'लिस रोंठनस दछ
भ'गि पा'री चाव्य को'दरा'च़य
द्यु्तुथ रूसिस को'स्तू'रि रछ

——

आर'वलन नाग'रादाह रोवुख
साधा रोवुख च़ूरन मंज़
मूढ़ घरन गो'रु पंडिथा रोवुख
राज़ु होन्ज़ रोवुख कावन मंज़

——

चा़लुन छुय वुज़ुमलु त़ त्रटय
चा़लुन छुय मन्दनियन घट्कार
चा़लुन पर्वतस करनि अटग्य
चा़लुन छुय मन्ज़ अथस ह्योन नार
चा़लुन छुय पान कुड़ुन ग्रटय
चा़लुन छुय ख्यो'न वेह तु गार

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

युस ओस यति तु सूय छुय तते
सुय छुय प्रथ शाइ_ रटिथ मकान
सुय छुय प्याद् तु सुय छुय रथे
सुय छुय सोरुय गुपिथ पान

———

मुह भयि सुत शरदार त्रोवुम
सा'रि वुम'रि छाव'म अक्य कान्थ
स'हजह जलु त्यलि शरीर नोवुम
बिहिथ सा'र को'रुम ईकान्थ

———

यमि ह्योतु तिहन्दि बरतलु ज़ागुन
तस पुनुनी शरवथु पानु चावे
छिस पा'थर भ्योन भ्योन अकुई छु मागुन
सु यस टोठि तु सुय अदु प्रावे

———

च़्य दीव'ह_ धरथस तु गुरथस पज़ख
च़्य दीव'ह_ क्रंज़न हन्दुय छाफ
च़्य दीव'ह_ ठयौंवह_ रोस्तुई वुज़ख
कुस छुय पो'ण्य तु कुस छुय पाफ

———

सु म्य निशे बु तस निशे
म्य तस निशे क़रार आव
नाहकय छोंडुम म्य पर दिशे
पनने दिशे म्य यार आव

———

स'रानाह क'रिज़े युथ नु कूँछ़ डेंशी
ध्यानाह करिज़े गुपिथ पान
क्रिया करिज़् युथ नु ज़ांह मशी
मशी तु नशी पनुनुय पान

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अन्दुरुह् क्रूध त्रावख नुतह्_
न्यबरुह् क्रूल कन्दे
अन्तु मल कासख नुतह्_
छो'न्यी वो'थु बेठ कन्दे

शिव छुय ज़ा'व्युल ज़ाल वा'ह्रिथ
ती छुय मुरुन तीरथ कथ
ज़िन्दु नय मुरख अदु कव ज़ि मुरिथ
पानु मन्ज़ह् पान कड विचा'रिथ कथ

शिव शिव करान शिव मो बोज़े
ग्यव कन्दि करख मननि वुज़े
ग्यव द्यू दीह्स दीह् दो'र रोज़े
दिख नय दीह्स व्यइस दिज़िहे

ज़ुवो च़ बोज़तो कनुवान
यिह्वो म'रनिन्य खबर शिनवान छी
का'लि हंडिस ज़न निनय पुजिवान
यि घासह् का'न्यु दुनियह्चि भ्रमवान छी

तोशान तोशान वो'दुर भरुम
ज़ाज़'रि रक्षसस वोलुस पान
ज़ाज़ुर बुरगस बुरगस फो'रुम
करिम गोनाह् तु मोरुम पान

यारै आसि तु सर तस दीज़ो
यार छुय विज़ विज़ो प्रभात
भुत'लिस च़'मिज़ि तु अदु कति इज़ो
वक्त_ रक्षस करिज़ क्यात

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मरग छुय सू'ह तु को'तू च़लिज़ो
ख्यलि मंज़ कडी चा'रिथ कठ
मुरगच शरवथ त्रना' रोस्त न बलिज़
सुलि क्यथ नु गया'स मं'रिथ कथ

———

काव क्याह शा'हस शिकार हावे
मययस क्याह करि धूप अगरै इये
धूप क्याह च़न्दरस प्रकाश हावे
वो'पज़स शिव क्याह ब'ड गथ दिये

———

तगिये बो'छिस भूज़न दीज़
ननिस ग्रशिज़िनु क्या छै ज़ात
सवाब सासह गनु प्रा'विज़
ति वाय नो'न्द करि रावि नु ज़ात

———

आस ति स्योदुय गछ़ तु स्योदुय
स्यदिस हो'ल म्य करिम क्यातु
बु तस गयास तति व्यो'दुय
वुदिस तु विदुस करिम क्यातु

———

सोंदरि काय दिवन चाव गोम
यावुन याम गोम पोशन मो'तू
सन्गरुक शीन तु वोलरुक वाव गोम
मुहिथ ठग गोम अक हो'तू
वुलिग भुत्तस क'नु तु तोह गोम
गरीबस दोह गोम वरियस योतू

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आराधना

तस पदुमान पोरचि लले[1]
तमि गले अमृत पिवो
तमि शिव वुछ थलि थले
त्युथ म्य वर दितो दिवो

लुक भवनचि कजे[2]
आ'क्कजे कुरन सिवो
सू'त्य जानावारन चजे
त्युथ म्य वर दितो दिवो

डंडक वन'कि जनका ऋषि[3]
कुछ फलु कुरे'न सिवो
पोख्तु भ'क्ति ओस मोक्त सुय
त्युथ म्य वर दितो दिवो

ऋ'षि वन'कि मीरान ऋषि[4]
चन्द्रह सासस अन्नजल चवो
अदु द्व'य रोस्त आकाश ग'वुय
त्युथ म्य वर दितो दिवो

रमस पतु पो'हलू[5]
तम्यु दमस वखनु किवो
सुय हरुमो'ख वुडिथ चो'लू
त्युथ म्य वर दितो दिवो

टूठुक इशु ब'र गोसा'त्रिस[6]
तमि जाने करिथ सिवो
टूठुक रखजालस पुइवा'न्यस[7]
त्युथ म्य वर दितो दिवो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

टूठुक स्यधवा'ञस वोपबो'धस[9] कन्दि गाटजु को'बुरु रुज़े[8]
तमि वोदयस ओहर किवो तम्य बटन वुगुरु निवो
टूठुक स्यधु श्री कण्ठस[10] स्यधुस तस लूरिथ विज़े प्रज़े
त्युथ म्य वर दितो दिवो त्युथ म्य वर दितो दिवो

विज़ि करे कर'मनि संज़ो
च्चवु संज़ै गछिह्यम सिवो
व'न्य विनथ "नुन्दय" संज़ी
त्युथ म्य वर दितो दिवो

---

1. ललेश्वरी माता—लल द्यद
2. लूकु भवंन (अनन्त नाग) में कुछ गूंगी लडकियां रहती थीं, जो लोगों की सेवा करने के अतिरिक्त प्रति दिन पक्षियों को दाना - पानी डालती थीं। एक दिन उनके भी पर निकल आए और वह आकाश में उड गईं।
3. ज़नका ऋषि हंदुवारा (काश्मीर) के निकट डंडक वन में रहता था, और जंगली झाड़ियों के फल खा कर निर्वाह करता था।
4. एक प्राचीन ऋषि का नाम, जो सिर्फ पानी पीकर निर्वाह करता था।
5. एक चरवाहा, जो हरमुख की पहाड़ी के दामन में गायें और भेड़-बकरियां चराता था। एक दिन उसको भी भगवान शिव के दर्शन हुए।
6. ईशेश्वरी (इशुबुर), (निशात के निकट) में रहने वाले एक प्राचीन ध्यानी-योगी की ओर इशारा है।
7. रक्षज़ाल पशमीना का कारोबार करने वाले एक दुकानदार का नाम था, जिसने संसार को त्यागकर आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया था।
8. यह कुवजा (रामायण वाली) की ओर इशारा है।
9 सिद्धवानी को शंकराचार्य की पहाड़ी के दामन में भगवान शिव के दर्शन हुए थे।
10. सिद्ध श्रीकंठ योगीराज थे और श्रीनगर के निकट ही रहते थे। सम्भव है, कि यही सिद्ध श्रीकंठ माता ललेश्वरी का गरु रहा हो।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अल्लखेश्वरी रूपभवानी

माता अल्लखेश्वरी का जन्म शायद 1621 ई० में हुआ था। वह माता शारिका का रूप थी। रूप भवानी का जन्म दर खानदान में हुआ था। दर ख़ानदान के पूर्वज जद्दमीरू पंडित जहांगीर बादशाह के साथ वापिस काश्मीर आये थे। ज़माने की गर्दिश और समय के फ़ेर बदल ने काश्मीरी पंडितों को बिखर कर रख दिया है, रूप भवानी के खानदान की कहानी उसी दुखद् गाथा का एक हिस्सा है। आपका देहान्त 1721 ई० में हुआ था।

2. रूप द्यद का विवाह सपरू घराने में हुआ था। जहां लल द्यद की भांति ही आपको भी काफी दुख और यातनाऐं दी गईं।

3. रूप द्यद की कृतियों को भी वाख्य कहते हैं और शक्ल सूरत में तो यह वाख्य लल द्यद के वाख्यों से मिलते जुलते हैं, परन्तु यह बात सिद्ध है कि इन वाख्यों को जन साधारण में वह मान्यता प्राप्त नहीं हुई है जो लल द्यद के वाख्यों को हासिल है। लल द्यद और रूपद्यद के वाख्यों में सिर्फ लाइनों का फर्क है। रूपद्यद के कुछ वाख्य चार लाइनों से अधिक भी हैं।

4. रूपद्यद के ज़माने तक फार्सी ने काश्मीर में अपने पांव जमाये थे इसलिए उनके वाख्यों पर फार्सी भाषा का काफी अस्सर है। ऐसा प्रतीत होता है, कि संस्कृत भाषा के अतिरिक्त अल्लखेश्वरी फार्सी से भी काफी परिचित थी। आपने लार गांव और सत् पोखुन में भी योग साधना की थी। सफाकदल के अतिरिक्त आपकी एक यादगार वास्कुरा गांव में भी है। वर्ष में आपके नाम पर दो यज्ञ साहिब सप्तमी के अवसर पर किये जाते हैं, एक पित्र पक्ष में और दूसरा कृष्ण पक्ष माघ मास में। भक्तजन नकदी रुपये और क़न्द मिश्टान का चढ़ावा चढ़ाते हैं।

—०—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ड्वान पानॖ तॖ ज़्यवान पानॖ
रिवानॖ पानॖ तॖ दिवान टखॖ
नाना प्रका'रि गिंदान पानॖ
रिंदानॖ पानॖ तॖ ह्यवान पत्थ

——

द्राव वुफ़े वात्र रूपी गुर
गुरु ईश्वर आव अविनाशे
पान मशे तॖ ध्याना तोशे
स्वमन परमानन्द वातुं तथॖ राशे

——

क्रिया तॖ कारण युस पानॖ ज़ाने
मनय माने ह्यन तय रात
स्वरूप ध्याना युस परज़नावे
माने मनय तॖ नन्यस ज़ात

——

ह्नि ह्नि पाताल गगन गुमय
म'रिथ तॖ मूरिथ पांछं
तत्व चीतन मेलिहा शुनयी गले
शुनयी छय अकइ सथ

——

द्रायस तॖ न्येरवुनॖ आवह्यम ज़ंगे
च़यय नॖ तॖ करुणा मंगे कुस
रंगा रंगी गुल फोलह्यम अंगे
म्य नॖ तॖ ब्ययॖ च़यथ च़यंगे कसॖ

——

कोह योद दज़न देह हेयि भारे
बो'धि हियॖ ह्योन अच्'स ग्र'ख
क्रोह त्रावे वुदियस स्वभावय
शेह्ले च़ंदन द्रारय क्राये

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पदवी विना मा त्राव पाद
वादा पूरख अदु छुय वास
व्रकुन नाबद ग्रकुन खासुय
परमु पद परमानन्द हा'सिल छुय

समन्दर प्यालु तु मो'धुर वासुन
अवय क्या सन मंगु वु तय
गणन रूपु तु शिन्या आसुन
आसुन तु भासुन सुय छु तय

यवै ग्यान ब'रचर करे
तवै गन्यान आवरे पान
यवै प्यार भस्मय करे
तवै लय सु मारे स्मरे पान

गा'रिथ स्मरिथे शून्या खा'डुम
पारुदु मारूम तवयु-सू'त्यी
पंच अग्ना लाल चड़ोवुमु
ग्वाश प्रज़ा'लुम तवय-सू'त्यी

युसुय सहाय सुय पानु आसान
अथवासा शिव-ता' शून्यु कसु
युस व्यह_ गाले त्यह_ न्यवारे
सुह_ शरीर थावे पानस व्रोंह

युस मनि हियें ध्यान-तु पानस तोले
कुंह नु गेलि तु कां'सि न गेले
ज़ागि हरसु तु लाग्यस वेले
पानय पानस सू'त्य मेले

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अपने घर आया आप साइँ
जो कुछ मैं था सो अब नाहीं
यह बोध आया गुरु की वडाई
जिन गुरु ने दिया सत का तत्व बताइँ

——

बाग चा'यिस भागे आयस
परमा-सरस नारस तु नरस
शरणे आयस लल्लीश्वरस
श्री सतु गुरूस माधवा शिवस

——

बानु फुटरि तु पानय थुरे
कुसु मरि ता' कस लगि द्वख
पानय नहावे पानय पूरे
कुसू सोरि तु कस यियि टख

——

गोम औवतार सुह महादीव
सुह वा सुह वा सुययु छुस
पूरा तोलें रामा बोलें
ब्रह्म स्वामी मन्दोरि छुस

——

भाव भ्यो'न भ्यो'न तु नाव छुस क्रेठान
ऐठन अंगनु अकुयु पय
लयु पवनस म्यवु छुय बानस
मानुन पानस निशि छुय दय

——

दीह अन्तर सुपप्त सो'वुम
जा'गा'वुमु तुरीया आये
अनाहतु आनन्द खिला'वुम
मिला'वुम अनामय च्यये

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सहज़ तु आनन्द रह् हा दा'रिथ
पानय पान् संधारिथ् क्यथ
कृपायि च्याने गछ़हा त'रिथ
ईश्वर स्वरूप पानय स्वरिथ तु क्यथ

——

पुरुषो न पुरुषात् विमर्शो न मर्शात
वर्ना-तीजो शान्त अन्तर आकाशम्
सूक्ष्मो न विस्तार न परं व्यापारम्
न अन्तदारम् परं ब्रह्म सोहम

——

पादू न वीजम् न चतर्भुजाकारम्
न त्रिज़ग चराचर अनन्तरूपम्
न सहस्रनामम् निराधारम
शुद्ध स्वरूपम् परं ब्रह्म सोहम

"साक़ी"

ओम छु सथ संग् साम वीद
परम् आनन्द छुस नवीद
ब्रह्म् ज्ञानुक नाग् राद
द्रढ तु कल भक्ति अबीद

——

ज़ा'त्र आगुर छु पान् गाशी गाश
ठों'र छु नज़रन तु नत् च़यथ आकाश
कल गनेयस अख स'पुन ग्रंज़ रों'स
सुय छुय वस सुय छुय म्यात्रि ज़न्मुक राश

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अ'रिणि्माल

अ'रिणि्माल काश्मीरी भाषाकी सुरीली और रसीली कवयित्री है। आपकी रचनाओं का कोई भी संग्रह आज तक प्रकाशित नहीं हुआ है। आपकी कविताऐं एकत्रित भी नहीं हो सकी हैं, और बिखरी पड़ी हैं। हमने पहली बार उनकी रचनाओं को एकत्रित करने का प्रयास किया है।

2. अ'रिणिमाल की रचनाओं में विरह की आग और वियोग का कड़ा दरद छलकता है। जिसको सुनकर या पढ़कर मनुष्य अपने अन्दर दरद की कसक बुरी तरह अनुभव करता है और अनायास ही आंखों से आंसु उमड पड़ते हैं। हमारा मत है, कि यदि अ'रिणिमाल ने दरद और विरह के गीत गाने के बदले ईश्वर भक्ति अपनाई होती, वह काश्मीरी भाषा की मीरा बाई होती। अ'रिणिमाल के "लोल" (प्रेम) के गीतों का काश्मीरी में कोई जोड़ नहीं।

3. आपका जन्म पलहालन (बारामुला ज़िला) में हुआ था और शादी रैनावारी के काचरू घराने में हुई थी। अ'रिणिमाल का पति भवानीदास काचरू फार्सी का कवि था और "नेको" की उपाधि से कविता करता था। भवानीदास ने शादी के बाद अ'रिणिमाल से मुँह मोड़ लिया था और त्याग दिया था। वह मुसलमान हाकिमों के दरबार की नाचने गाने वाली स्त्रियों की बुरी संगत में पड़ गया था।

4. आपने जीवन का बहुत बड़ा भाग मायके में ही गुज़ारा। जहां उसकी कृतियां बिरह की जलन से तपकर और चर्खे की गूँ गूँ से मिश्रित होकर फुव्वारे की भांति मुँह से फूट पड़ीं।

5. कथन है, कि भवानीदास मुस्लिम सुबेदारों के बर्ताव से निराश होकर जब अ'रिणिमाल से मिलने और क्षमा याचना के

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लिये पलहालन पहुंचा, तो उस समय इस कवयित्री की अर्थी उठाई जा रही थी।

6. अनुमान है कि यह महान कवयित्री 1800 ई० के आस-पास स्वर्गवास हो गई।

—o—

अद् कर इयम् ताय
भरसय मलरिव मलरिव
च्युय ना सन् मस
चावि ना सन् मस

———

कमि सो'न्य हावनस तन
का'लि हा'य विहनम
प्यठ संगरन्
हलि छुस खंजर तय
तीर हा'य लोयनम
भरसय मलरिव मलरिव
च्यय् ना सन् मस
चावि ना सन् मस

———

मद् हो'त यार गोम म्य नश'राविथ
तीय कस निश् ह्यक भा'विथ वो'
रुम् रुम् लतय कव छुम मारा'नी
करि ना सोन पाय आयस वो'
नेह घटि गोमय से'न्धि वाव् त्रा'विथ
तीय कस निशि ह्यक् भा'विथ वो'

———

घरि बाल द्रायस सामान् प्रा'विथ
काम'नि प्रारान लूसुम दोह
पामन ला'जनस गोम तम्वला'विथ
तीय कस निशि ह्यक् भा'विथ वो'

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

क्या वनुयो मति क्या वनुयो
यी गोम पानस तु तीय वनुयो
लान्युन न्याय छुम तु ती वनुयो क्या वनुयो०

बागस म्या'ञ्सि बादमु फुलुयाह
आदनु रा'वस तु तीय वनुयो क्या०

बागस म्या'ञिस चे़रु फुलुयाह
वेरि चाणि फ़ोजमो तु तीय वनुयो क्या०

बागस म्या'ञिस गिलासु फुलुयाह
दिलासु दितिथमु तु तीन वनुयो क्या०

बागस म्या'ञिस टंगु फुलुयाह
लंग लंगु फो'जा तु तीय वनुयो क्या०

बागस म्या'ञिस आ'लचि फुलुयाह
लोलच करिथम तु तीय वनुयो क्या०

हचे़' लोमुनमु न्यनदरे हचे़'
मचे़' मछुछ़ वंद सुनिथ गोम
सो'न न्यूनम मूहिथ रचि़ रचे़'
वन्यूव करिथ गोम
वनतु व्य'सि वो'न्य कुस कस पचि़
मचे़' मछ़ुछ़ बंद सनिथ गोम

दामानु बोडुम अशे म'ति
काम'नि प्रारान दोह गोम
सामानु गंडिथ आयस
यूत क्या लो'गुय नशु मति
पामन ला'जथस क्या करु
काम'नि प्रारान दोह गोम

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

म्यानि मदुनो ह्यो ह्यो
छम चा'न्य लादन, हा इयो इयो

दर्शन दियो दियो
छम चा'न्य लादन

आदन च़यय सु'त्य क'रियोम वादय
वादु कौ डो'लह्म, पियो पियो
छम चा'न्य लादन

——

म्य करि तस किच़ पोशन मालतु
छावि ना ह्रीय, छसय म्यान्य द्रिय

ह्रावस भरिमस मदु की प्यालतु
इयि ना लोलि मंज़ करसय जाय

दर्शन तह्न्दि बालु सम्भालतु
छावि ना ह्रीय, छसय म्यान्य द्रिय

——

छम लादन लटि अकि इयिना
ह्रटि कुइ वंदसय रथ

रावि आदन पादन प्यमुसय
लति कव को'रनम लथ

वनु कस व्यसि सो'नु छम गेलान
यनु या'रि त्रावनम कथ

शायि यार आ'स्यतन पूशतन परज़न
तोति छम वों'न्दुसय सथ

——

गूण गूण मोकर हा इन्दरो
क'नरित्र फो'लिलै_ मला'यो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रबि तल का'र तुल सुम्बलो
यम्बरज़ल प्याल ह्यथ प्रारान छस

ही थ'र छस दुबारह फो'लयो
क'नरित्र फो'लिलै_ मला'यो

———

वुछत व्यसि कह'न्दि घरि बों' ज़ायस
भाग'णि आयस कहन्दे ताम

दोह_ अकि मा'लि मा'ज्य नगरु ह्वरशायस
शाहरच आ'सस वा'चस गाम

सति दोह फीरिथ माल्युन आयस
भाग'णि आयस कहन्दे ताम

दोह अकि स्रेह सान माल्युन गयायस
डयकु बजु काकत्रि दिचनम पाम

डयकु .रोस ज़यवनुय कोनु मो'यायस
भाग'णि आयस कहन्दे ताम

———

हनु हनु छम लोलु चात्रि भरिथ
ज़ो'लु छमनो सो'न्दरे सो'न्दरे

तीरि मिजगान दितिथम दा'रिथ
गा'म जिगरस पंजरे पंजरे
दा'दिलद छस को'त ह्यकु ला'रिथ
ज़ो'लु छमनो सो'न्दरे सो'न्दरे

व'छ़ वा'लिंज हावै मुच़रा'विथ
क'छ़ पन ज़न हरयो हरयो
मछ़ि मछ़_बन्द ज़ान गच्छै़ ला'रिथ
ज़ो'लु छमनो सो'न्दरे सो'न्दरे

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गछ़् कुठिनय थावै वथ़्राविथ
लछ नाव्यो मन्दोरे सानि बेह़्
अछि दा'र ज़न रोज़य पा'राविथ
ज़ोल् छमनो सो'न्दरे सो'न्दरे

——

अ'रिणि रंग गोम श्रावण ह्यिये
कर इये दर्शुंद दिये

श्याम् सो'न्दर पामन लजिस
आम् तावय कोताह् ग'जिस
नाम् पैगाम् तस कुस नियेे कर०

कंद नावद आरूद मो'तुय
फंद क'रित चो़'लुम को'तुय
खंद् कर्यनम लूकन थियेे कर०

सुलि वोथवो संगर मालन
लाल् छ़ारोन कोहन त् बालन
प्रारान छस व़ तहंज़ि ज़ियेे कर०

——

म्य शोक् यार सन्दि भरिमस प्यालत्
आलौ दियतोसे
तरवञि मरगत् वसवञि वालत्,
आ'ही नीतोसे
क्याह् कर् नियनम ह्रणणि छ़ालत्
आलौ दियतोसे
कुन्द तै नावद भा'रिमस थाल् त्
रंग् रंग् नीतोसे
जोद गव आशिकन दोद क्यथ् चालत्
आलौ दियतोसे

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पामन व़् ला'जिनस सो'न्दर मालत्
म्योनुय वनितोसे
हावस् करिमस पोशन मालत्
आलौ दियतोसे

——

ह्रा वलो मु'न्य ह्रो वन्द्‌यो पादन
आदन वाजि म्यात्रि यारो वे

आदन अ।'सस रेंज़ालो नादन
यावनस क़दर नो ज़ानी म्य
दितमो दर्शुन छम चा'णि लादन
आदन बाजि म्याणि यारो वे

कुकिल पै'र कव त्राविथ कोल् रादुन्
दुकले वोन्द्‌य म्योनय गव
म्य कले चाने व्रां'न्ति गय नादन
आदन बाजि म्याणि यारो वे

आया है सो जायेगा, राजा रंक फकीर
कोई सिंहासन चढि चले, कोई बांधि ज़ंजीर ॥

दो बातों को भूल मत, जो चाहत कल्याण
नारायण एक मौत को, दूजे श्री भगवान ॥

नारायण दो बात को, दीजे सदा बिसार
करी बुराई और ने आप कियो उपकार ॥

श्वास - श्वास में नाम भज, वृथा श्वास न खोय
ना जाने इस श्वास का, आवन होय न होय ॥

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बो'न काक, टिक् काक और लछ् काक

काश्मीरी भाषा में जिन लोगों ने वाख्य की परम्परा को नया जीवन प्रधान किया है, उन में पूजनीय लछु काक जी का योगदान बड़ा ही मूल्यवान है। लछु काक बहुत बड़े साधक थे। और शैवी परम्परा को आपने आगे बढ़ाया। आपकी गुरु-शिष्य परम्परा मे'ज़ं काक जी से मिलती है।

2. स्वामी लछु काक जी के वाख्य यद्यपि गिनती में कम हैं, परन्तु इन वाख्यों में जो गहराई और अनुभव की छाप दृष्टि में आती है, वह सराहनीय है और बहुत ही कम लोगों का हिस्सा है। आपके प्राय: सब वाख्य अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाये हैं, क्योंकि आपके वाख्यों की कल तक सिर्फ दो ही पांडुलिपियां उपलब्ध थी, और उन में से भी वडवन वाली पाँडुलिपि हमारी नज़र नहीं आई हैं।

3. लछु काक सथू वरवरशाह के रहने वाले थे। और 1871 ई० की शिवरात्री के दिन स्वर्ग सिधारे। आपके शिष्य श्री रामानन्द जी ने काफी अच्छे भजन कहे हैं, परन्तु हमारे हाथ नहीं लगे।

4. यह बात ध्यान देने योग्य है, कि वाख्य की परम्परा को शैवी भक्त कवियों ने ही जीवित रखा है। मे'ज़ुं काक, टिकु काक, बोनु काक और लुछ काक जी इस सिलसिले के उधारण हैं। इन लोगों ने वाख्य की बनावट और शक्ल - सूरत में कुछ परिवर्तन अवश्य किये हैं, जिसको भुलाया नही जा सकता।

—o—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

स्व0 श्री बोन् काक

निरला वास॒ दय वरतन त्रिकाल
कर्ता भर्ता बाल ब्रह्मचारो
भक्ति भाव॒ कौसम पोशन करे माल॒
बाल॒ गोपाल॒ नन्द लालो हो

विश्वेश्वर विश्व॒ आत्मन॒ भगवान॒
विश्वरूप॒ किञ छुक उलसानो
विश्व आत्मानुभव दित॒ दीन॒ दयाल बाल०

द्वाद॒शान्त॒ वास॒ वासी चेतन भान॒
स्व सुखस्थान॒ सुख भोगा'नी
स्व परमानन्द॒ आनन्दय सर्वकाल॒ बाल०

सुज्ञान॒ सर्वदा सर्वतो भास्तम
क्षण॒ क्षण॒ भासतम साक्षात्कार॒
कृपा करतं भगवान॒ कृपाल॒ बाल०

पादार्बिद अमृत तृप्तावतम॒
प्राव॒नावतम परम॒ आनन्द थान॒
पाद कमलन वंदै नेत्रन हृन्दि लाल॒ बाल०

दासन क्युत ह्यो'त छुक बडि स्वभाव॒
शुभ दर्शन॒ वर दिवानो
विदुरस हाक म्य प्यठ आमुत साल॒ बाल०

श्रीधर॒ सुर॒-गुरु बाल॒ दामोदार॒
श्री कृष्ण॒ वास॒देव॒ श्री रामो
सो'ख मो'ख सन्मो'ख आस्त॒ अन्त॒काल॒ बाल०

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

स्व० श्री टिक् काक

वनुखय केंह वन छो'पि हन्दि मो'खय
बोज़'खय केंह पो'ज़ त्रोपुरिथ कन
इच्छ'खय केंह पूर्ण हृदय सो'खय
कर्म कर केंह वनिथ निश्चल मन

केंच़व वो'नुय वुछन केंछ़ाह
वुछवुन्य'व केंच़व केंछाह नु
साक्षी चैतन परमार्थ बोधस
कारण कुनि केंह रेंछाह नु

प'ज़िस प्यठ य'छ़ प'छ़ आसिय
पज़ि पुछि़ रावुरि न्यन्दुर तु नेह
पो'ज़ बोज़ुन रसु मस च्ययि खासि
पज़ि विना भास्य नु तस कुनि केंह

भोगु बो'छरुनु छलु छांगरि को'रनख
लांग'र्यं लोगुत आ'सित राज़य
प्रकाशुमान पान पानु निशु खो'टरोवुत
पान फाटनोवुत रतु तु माज़य

देह छुय आयुकिस आ'मिस पन्नस
अलोंद करान छुक शुर्य भाषे
यि कुरुम तु यि कर म'रिके म्यान्यरु
कवु लो'गुक वासनायि वाल वाशे

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

स्व० श्री लछ् काक

हाशन ज़ीवो देह दोह छुय नशन,
अमर पान कव़् मशन् छुय

——

ईश्वर् अंश अग्न त्यंब'र अज्ञान् काठस् संद'यंजे
काठस ह्यथ सो'य अग्न त्यंब'र ईश्वर अंश सांपुनिज़ो
यि दय् धन् तस गुरु कृपा भ्रम यि संसार गंज़'यंज़ो

——

गो'ड् छुक विषय भोगन भ्रमन पतव विफल नेरन दुख
काल'त्रि सिंधे तिमय तरन सिद्ध यस गुरुजन परम सुख
महा च़ंच़ल मन लय करन सो'रन सुदीव अन्तरमुख

——

कालत्रि चंजे गछ़ान खंजे सो'न्दर त् गंदर गछ़ान दो
अन्न पान च़े'य क्यथ् रोच़ान छियो च़्य क्यथ् मन अद पच़ान दो
कालस हारि भयस तारि च़् कोन् दयस सो'रान दो

——

इमन् भाग्य उदय करान स्वामी सो'रान वों'दे मंज़
आकाश पाताल तरिथ गछ़ान क्रीडा करान कंदे मंज़
संगरमालन शीन् यथ ज़ाल द्राव ज़ालय बिंदु स्यंघे मंज़

——

नाथो ब् नो रानम मंगै म्य रावणुन राज्य करे क्याह
यि कोंह देहस प्रारब्ध आसे तथ मंज़ हरे त् हुरे क्याह
ओसुम दुर्लभ बन्योम् सुलभ स्वराज्य लो'बुम वों'दे मंज़
हशान०

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शब्द् ब्रह्मस गछ़त् लये
सो'य प्य कासि मनि खयें
खय त्रावित मन चित्त गव
च़ेनतन प्रथ शायी दये
दय टोठ्योम ऋषि पुत्रो
तस तु म्य द्र'यि रूज़ानयें आगरो०

——

वेद शास्त्र प'र्यं प'र्य छिय
प'र्यंमृति ज़र्य गछ़ान
अपुरिस निश् नेरान छिय
च़ोर वेद ब्ययि पुराण
आज़ानतो शब्द् ब्रह्मय
परम् पद दयि वथ मान ,,

——०——

सु मा ड्यूंठवन नाव गोत्र वर्ण् रुस्तुय
युस दज़ि नता'य हो'खि नतां'य छ़यनन् रुस्तुय
सु शांत प्रकाश सिर्यि ज़न द्राव लोसन् रुस्तुय

——

सुज़न आसान मस च्यवान छु स्वतन्त्र'य
सु बोध मये बोज़वुनुय छु स्व मन्त्र'य
सु भक्ति विना भू क्रिया छुय न् सु तन्त्र'य

——

मधुर मसुय ब्रह्म योगुक च्य गलि गले
दीर्घ् रोगुय संसारुक तवय वले
न'निय सु ईश्वर निश पानस संदेह च़ले

————

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वासुदेव*

कर इयि म्य कुन गिंदुन दिमुस च़ंदुन हार
आद्य शक्तियि शिव जियस नमस्कार

ओमुय आद्य ओमुस अंदर पञ्चाकार
ओमुय ज़गत धा'रित केवल निराकार
ओमुक निर्णय कुस वनि भ्यो'न भ्यो'न छुस विस्तार
ओमुस पा'र्य ओमुस हर मुखु नमस्कार आद्य०

ओमुय छु सारु ओमु'चि स्मुरण मनुस धार
सहज़ स्वरूप आनन्द प्रावक मुक्ति द्वार
भक्ति देवु प्रमाण थावक बनि उद्धार
भक्ति सू'त्यी लय कर भक्तयो लबुख तार आद्य०

मोह_चि न्य'न्दरि अन्दर मु गछ़ गिरिफ्तार
बोधायि अन्दर न्यन'दरि गछ़तो खबरदार
स्यो'द्य वो'थ न्यन्दुरि इन्द्रिय क्रीडस खबरदार
दिल थव डंजे लंजे छुय बिहित जानावार
बोलनावुन लोलु पनुने सुय ओमकार आद्य०

आनन्दमय बनक प्यालु चावनय मालामाल
भावनयु सो'रुय स्वमनि सोऽहं साहाकार
त्रिगुणु उल्लंघित निर्गुण छु पानय निराकार
अनतन लये मनस सू'त्यन पनुन यार आद्य०

पान पनुन य'म्य को'र सही बु संसार
बही त'मिसुंज सही सा'पुत्र_ बु सरकार
'वासुदेव' मेलव देवाद्यदेवस बु विस्तार
सार सही आद्य अन्तस छुय दरकार
पादुय प्रणाम नादु बिन्दस बारंबार आद्य०

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

टोठतम विशणारपन क्रष्ण जीवय
हरे राम् नारायण् वासुदीवय
गोविन्द चरणार विंद चा'त्रि सीवय
हरे राम नारायण् वासुदीवय

शरण च्यान्यन् पंकज़ पादन्
वरान सिद्धन सन्तन् त् साधन
क्षमा क'रू सान्यन अपराधन हरे राम०

अलक्षय महिमा चोन क्याह् वनय
मन बो'द्ध वा'णी तोत् न् वात'नय
पानय ज़ानख ब् क्योहो व'नय हरे राम०

प्रबल म्यानि विज़ि को'त गोय सु बल
यमि वल् सू'त्यन खोरथन अजामल
व'ति छुसय प्रारान चात्रे बर'तल हरे राम०

भक्तयन सू'त्यन मान कुस करे
सुय करि यस चा'त्रि दया वरे
त'सि वरि युस नाम् निधान सो'रे हरे राम०

हा ज़ीव क्याज़ि छुख चिन्ता क'रान
क्षण् क्षण् आसुन नारायण सो'रान
दासन पनन्यन पानय वरान हरे राम०

क्याह् रुत ओसुम कर्मय लोनुय
तवय लोगमुत छुम नाव चोनुय
पानय करख उपाय म्योनुय हरे राम०

श्रद्धावान क्याह् आस् गूरि बाये
यिम् लूक् लज़ा त्रा'विथ द्राये
पान् भगवानस सेवायि आये सरे राम०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

टोठतम अनाथस हे भव़् दाता
च़य छुख गुरू म्योन च़य मोक्ष दाता
माता पिता बन्धो भ्राता हरे राम०

श्रीधर प्रारान छुसय चाञि वेरे
प्रवाह् चोन योर कर सना फेरे
सत़् भाव'कि पोश लागय शेरे हरे राम०

पद्म चोन फो'लनावान हृदय
चक्र कासान शत्रुन हुंद भय
शंख शब्द़् सान्पनान भक्तयन हुन्द ज़ाय हरे राम०

शंख चक्ऱ् पद्म गदाधरस
कोस्तब़् रत्न सर्वे ईश्वरस
अस्तुत करान च़राच़रस हरे राम०

मुरली वायान आनन्द रूपय
मोहान मन गूपियन कृष्ण़् रूपय
सा'री बन्येम'ति कृष्ण स्वरूपय हरे राम०

दयायि सू'त्य पालतम गोपालय
सम्भालतम जसुधा नन्द़्लालय
ना'लि छय शूभान तुलसी मालय हरे राम०

केशव माधव हृरषी कीशे
अख़् शो'भ द्रष्टा करतम ईशे
मो'कलावतम भव़् बन्धन नीशे हरे राम०

निराकारस निरन्तरस
वेषाधारस विश्वम्भरस
सर्व ईश्वरस पूज़ा करस हरे राम०

ब्रह्मा इन्द्र त्रि नेत्र धा'री
सा'री चा'ञी पूज़ाकारी
पाहे मुरारी गरुडा सवारी हरे राम०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भाग्यवान क्याह् आ'सि गोकलवासी
यिम वन्सरी चा'ञि बोज़ान आ'सी
मायायि मोह् निशि गयि उदासी हरे राम०

सुशो'भ समय क्याह् ओस त्यले
जमुनायि ब'ठि ब'ठि गोपाल यले
गोपी ह्यथ फेरान थलि थले हरे राम०

ऐसा शुभ वेला कब आवे
जब कान्हा बन्सरी बजावे
सन्मुख होके हमको सुनावे हरे राम०

बहुत गोपियां और श्याम् अकेला
खेलन से लुट लिया मन मेरा
दुनिया मेला आनन्द अकेला हरे राम०

मनि छुम मेल् हा पन्निस यारस
प्रा्रस आ'शि मुकाम

वनि म्य' दिचा़म यथ भव् सरस वन् कस वनि नो आम
क्षण् क्षण् छ़्यन् नो तसंदिस कारस
प्रा्रस०

बुलबुल मुश्ताक छुय गुल ज़ारस ज़ांह् ति नो तमन्ना द्राम
का'लि मा खज़ान् लगि अथ बहारस
प्रा्रस०

अ'न्दरी व'नि द्यू वो'न्दि मंज़ यारस् मन्दरस अंदर चा़म
सौदा भ्यो'न भ्यो'न साहूकारस
प्रा्रस०

दुःख छुम पूशुस न् ला'निनिस कारस न् त् क्याह् लेखन् आम
ती बी वन्हस प्ययि ना पायस
प्रा्रस०

युन त् गछ़ुन छुय प्रथ ज़ीव् द्वारस इन् इन् मुस हो चा़म
सर् को'रथय नो इथ संसारस
प्रा्रस०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सुय नाव सू'त्य छुम मे नावु तारसु यमि नाव सांपनुस राम
"वासुदेवु" लयि रोज़ तु'थि दीदारस प्रारस०

———

यस कुन वुछान गोम यावुन रसुय रसुय
तमी मती लोलु अमृत बो' चोवनस'य

तस पाक ज़ातम रा'त्य रातस प्रारान छसुय
तस रोस्त छमनय नेह् नेन्दुर आराम ह्यसुय
बुलबुल छु मुश्ताक़ पोशु बागन आशक छुसुय तमी०

लाशक छु पानै पा'न्य पानय आशक छुसय
गुल मेलि गुलस शाख ब'र्गस व्ययि मूलसुय "

अ'न्द्री व'न्य व'न्य वन्य' दिच़ाम म्य थानुस'य
पय ह्यथ वोतुस लय गोमुत मकानुस'य
परम प्रोवुक गयि खसिथ विमान'सय "

कें'ह् छिय वुदी ज़ान न्यन्द्रे मन्ज़ ख्वाबुस'य
केच़न वोदय्न मोह् न्यंन्द्र थावान नु ह्यस'य
कें'ह् गयि मीलिथ वा'ति अन्तस मुक्कामुस'य "

गिन्दने द्रामुत भवुसरस छु ज़ारुस'य
गिन्दान गिन्दान युथ ना डलख शुमारुस'य
स्वर थाव पानस ज़े'रि ज़ब्बर किताबुस'य "

सतु सरु तारुन सुयि गारुन प्रथ समुयस'य
वो'न आदि दीवन सत श्रवण कथ पानुस'य "

———

यस निश सु प्रकाश द्राव नो'नुय
तस जानानस ह्यू वो'नुय

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हर दम् ओमस लय च़ कर
च़्यथ नाम तों'गंस् तय च़ कर
दोर त्राव ब्रोंठ तोत छु वातुनुय तस जानानस०

ओमस तु पानस लय च़ कर
ओम पद् सू'त्य पान सर् च़ कर
ओम रोस्त कें'ह छुन् लारुनुय ,,

हर मो'ख तस गछ़ि लारोनुय
गो'रु मो'ख सुय गछ़ि दारुनुय
सार छुन् सम्सारस यिनुय ,,

मंज़ मयिखान् गछ़ि मय चो'नुय
पय ह्यथ थानम वातुनुय
जाम छिय भ्यो'न भ्यो'न तु मय कुनुय ,,

ज्ञान कर पानस छुस बो' क्याह
ओसुस क्याह तय आस'ह बु क्याह
हा ज्ञान वुशुन तय तुरुनुय ,,

ह्यकु खय ढुंगु लाय सो'दरस
दुर्दान् अथि ह्यथ बो'ठ च़ खस
युछ़ि कस लालुस लारुनुय ,,

"वासुदेवु" सा'क्षी प्राव मनस
न्यत छुसय बो' प्रारान दर्शनस
ओ'न क्याह ज्ञानि ज़ग तय प्रोनुय ,,

हा जीवु कथु प्यठ मन भ्रमु रोवुथ
च़्य कोनु ज़ोनुथ दातु छु दय

अपुज़ मोनुथ तु पो'ज़ रावु रोवुथ
पोज़ कोनु मोनुथ सहज़य क्रय
अंदु कनि रुज़िथ मन मंदु छोवुथ च़्य कोनु०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अस्थिर यि सम्सार दो_र कवो ज़ोनुथ
दो_र ओस दयि नाव मो'ठुय सो'र्_नुय
दयि सन्ज़ि पयि मन कोन्_ शमु्_रोवुथ चय कोन्_०

गोर्_ ध्यानस प्यठ अभ्यास कोन्_ थोवुथ
लबु् हख परभासु् खतुरुक पय
लिवास ममतायि हुंद कोन्_ त्रोवुथ ,,

विषय भूगन चयथ कवो लोगुथ
चयेतन्_ भावह'ख परमय शय
परम भावुक रस कोन्_ चोवुथ ,,

वैरागस प्यठ ध्यत कोन्_ थोवुथ
मनु् किस आ'ईनस च़लि ही खय
सत भावु् ईश्वर कोन्_ परज़ु् नोवुथ ,,

अगिन्यानस कोन्_ विवेक थोवुथ
न्यथ प्रावुहख सथ स्वभावय
अक्रय अकुही कोन्_ मशु्रोवुथ ,,

आनन्द बो'ज़ कोन्_ व्यस्तार प्रोवुथ
निश्चल बनुहख आनन्दु् मय
ओदय आत्मा कोन्_ प्रज़ुनोवुथ ,,

सतकुय विचार सथ कोन्_ ज़ोनुथ
गथ प्राव'हख सथ स्वभावय
सन्तोषुक फल मन कोन्_ ख्योवुथ ,,

स्वतीज़ु् अगन्यानु् काठ कोन्_ ज़ोलुथ
अखण्ड करि ही सियेँ वो'दय
अन्त: करण कोन्_ वारु् शो'ज़_रोवुथ ,,

वेचार ज़ालु् सू'त्य मन कोन्_ नोवुथ
अदु् लबहख गो'र शब्दुक पय
सथ योगस कोन्_ अभ्यास थोवुथ ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पांछ् प्राण अन्त:करण कोन्‌ रट्नोवुथ
अन्त:करण वार्‌ शोद्धहा'नय
शम्‌ दम्‌ शब्द भ्रम कोन्‌ प्रज़_नोवुथ ,,

सो'रूप आत्मुक कोन्‌ प्रज़_नोवुथ
च़लि ही यिनुक गछ़नुक भय
मोह्‌ न्यन्द्रे मन कोन्‌ वुज़्नोवुथ ,,

निष्कल शशिकल ज़ाल कोन्‌ चोवुथ
भासि ही न्‌ बो'छि त्रेशि कालुन भय
नाशुन काल्‌ अग्न कोन्‌ शम्‌रोवुथ ,,

बहु रूप माया कोन्‌ मश्‌रोवुथ
सूक्षम्‌ रूप प्राव्‌ह्‌'ख आनन्दमय
कर्ता कारणन ह्रूंद कोन्‌ ज़ोनुथ ,,

द्वाद्‌ शान्त्‌ मण्डल थान कोन्‌ प्रोवुथ
अक्ही वुछ'ह्‌'ख तीज़ोमय
सु तीज़ तीज़स कोन्‌ मिल्‌ नोवुथ ,,

"वासुदेव्‌" सु विच़ार दो'र कोन्‌ ज़ोनुथ
रोज़ि ही न्‌ संच़यथ पो'ण्य पापय
गो'र ध्यान दीवय सथ कोन्‌ ज़ोनुथ ,,

——

करसै सो'अ पोशन माल्‌
अज़ इयि लाल्‌ सोनये

मय खान्‌के हा कल वाल्‌ असि मय चव चो'न्‌ये
प्यालत्‌ प्याल्‌ माला माल्‌
अज़ ०

तसुंदुय मय त्‌ तसुंदुय प्याल तस्‌ंदे वान्‌ कननै आव
खुंवचि कुंज़्‌ तस हवाल्‌
अज़०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दूर्यर तु लो'ब कोताह् चालु मूरे नार छुम ललुवोन
शूरे पान कुहि संभालु
अज़ा०

य'मि ला'यि लोलु सो'दरस छालु तम्य खोर लालि दुरख़्शान
सुय रूद आद्य अं तु बहालु
अज़ा०

तेज़ोमय युस नूरानु विज़ि विज़ि वुज़नावान गोम
करसै शिलु दिल हवालु
अज़ा०

केंह् गय रिदु केंह् रिंदानु केंचव रिंदव ज़ोलुय पान
केंह् गय अचि़त च्यवान प्यालु
अज़ा०

दागु सुय ह्यत कुनुय गुलालु वागुचि ह्यिय सु छाव्यम ना
नावस तन ता'य रटह्न नालु
अज़ा०

केंचव को_ड मुलुक दालु केंचन निशि हावान पान
केंह् गय वरु ज़न गुलालु
अज़ा०

व'लि म्य त'मिसं_दि लोलुकि जामु अज़ इयि श्याम सों'दर सोन
सुय इयि "वासुदेवुनि" सालु
अज़ा०

**प्रभात आव पोशनूलो वन
सो'न्दर वा'णी प्रसन्न करु मन

न्यन्दर मो त्राव यथ वक्तस सत्यायुग व्यूठमुत तख़्तस
मंगुन यि छुय ति मंग वुज्रिक्यन
सो'न्दर०

त्रित्या योग द्वापरी कलि योग तुहुंद स्वामी छु सत्या योग
अमि_स निशु फल वन्यी वुज्रिक्यन
सो'न्दर०

मंग्यस युस यी दिवान तस ती अमिस सू'त्य आसवुन शिवजी
गो'ड'न्य बोज़ान तोता भक्तयन
सो'न्दर०

शौंगिथ युस रोज़ि यथ वक्तस दियस आराम ब्ययि मोह् मस
तिमन कति छुय ज़न्मन छ्यन
सो'न्दर०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

करी युस न्यन्दरि वुज़िक्यन नाश अच्छिव वुछि आत्म् सर्युंक गाश
बन्यस अद् साध् सम्बन्धन सों'न्दर०

ग्यवान कस्तूर बागन मंज़ करान लीला वनान छी संज़
दपान श्री राम रघुनन्दन सों'न्दर०

छु वुलवुल बोलिमंज़ दिथ ताल ग्यवान गोविन्द् ही गोपाल
दपान ज़ीवन छु वुज़ुनावन सों'न्दर०

समिथ लगि परुनि गोविन्द गू कुकिल लजि वननि ही शम्भू
म्य ब्रोंठ बूल पोशनूलन सों'न्दर०

पवन स्मरण फिरनि द्रामुत दोह्स ओसुस नु अथि आमुत
तवय द्राव सुलि रटन वुज़िक्यन सों'न्दर०

छि वुज़िक्यन दीव लूकन मंज़ करान पूज़ायि वनुन'य मंज़
इयी नयु प'छ़ दि कन वज़िक्यन सों'न्दर०

वज़ान सेतारु मुरली नय परान शिव शिव शम्भो जय
यि वा'णी छिय व्रनान दीवगणु सों'न्दर०

मंदछ म ईनय च़य बूज़िथ यी शरण गछ़ परमु शिवस च़यय
परन प्यस आरु ब्यन्द च़रणन सों'न्दर०

च़ आलुछ़ त्राव गछ़ होशियार वनख धर्मु'चि सभायि मो'ख्तार
करख रुत भोग स्वर्गन मंज़ सों'न्दर०

फो'लनि लजि वोज़ि संगरमालय जगत प्रज़लान छु कमि हालय
सों'न्दर मन्दर छु क्या ज़ोतन सों'न्दर०

हतो ज़ीवो इथ्रिस आनस गोमुत छुख न्यन्द्रि अगुन्यानस
यि आलुच़ छ़ुय यिमन जंदन सों'न्दर०

वुद्योगुक जामु ना'ली छ़'न सपुन चे.र फेर होशस कुन
उदय ह्योतुय करुन सिर्यन सों'न्दर०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मुच़र धर्म् लरि कर्मुक बर ज्ञान् प्रकाश गोड् सर् कर
प्रेम् सू'त्य अद् कर च़ चिन्तन
सो'न्दर०

पंच नाग् राद मंज़ कर श्नान सतचि म्यचि सू'त्य नावुन पान
वन्दुन गच्छि कल् गो'र् पादन
सो'न्दर०

नवन नदियन वुद्योगुक ज़ल तिमन आगुर छु मन् यारुबल
सु ज़ल वा'गरान तिमन नदियन
सो'न्दर०

मयुक मोफख बन्योमुत गाश च़ यथ वुज़मल सिर्यि प्रकाश
अन्दर हृदयुक मन्दर ज़ोतन
सो'न्दर०

गोड् परज़ुनाव आत्मुक दू'प स्तोगुण सू'त्य रोज़ निर्लीफ
च़ कर स्मरणायि प्यठ आसन
सो'न्दर०

छु त्रन मंज़ मस्त व्यवहारस छु बोज़ान मंज़ पतिम् प'हरस
पतिम् पह_रस स्यठाह रुत गो'ण
सो'न्दर०

छु भगवानस यि ज्यु'ठ सन्तान असुन्द सा'री छि पो'ज़ बोज़न
छु यिथ पा'ठि कृष्ण जू तु अर्ज़ंन
सो'न्दर०

यिमव अभ्यास को'र अथ प्यठ र'टोय यन्द्रे तिमव ख्यत च्यत
तिमन छुय दय वनान सतज़न
सो'न्दर०

न्यन्द'र ज़ीवस छि ब'ड समहार करान छस कारुनिश् बेकार
फरान छिस च़ूर छिस मोहन
सो'न्दर०

स्वपनस मज़ बनान न'व राह छि लक्ष्मी दायि इस्तादाह
हुशियार यलि गव बन्यो'व निर्धन
सो'न्दर०

यिथय पा'ठि समय अख स्वपनाह सु रातुक जशन अज़ बनि मा
अज़्युक मा बनि पगाह सुबहन
सो'न्दर०

छि हत् ब'दि रंग दोहस वदलान
छि अ'सि मूर्ख मा क्येह ज़ानान
अपुज़ क'रि क'रि भरान जंदन
सो'न्दर०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शोंगिथ युस रोज़ि दुप'ह्रस ताञ्य
वनान छि तस स्यठाह् कर्मवान
सु छुय चंडाल बन्य मा ब्रह्मण सो'न्दर०

यि ब्रह्मण ज़न्म सुलि सो'रिजं मरनु ब्रोंठुय जि़न्दय म'रिज़्
बनी छ़य'न अदु अपराधन सो'न्दर०

उदय को'र सियि भगवानन गछ़्क मोह् मायायि अर्पण
गंदर्भ लूकन गछ़िथ गिंदन सो'न्दर०

छु जीवस ज़न्मु मंज़ु व्यस्तार दियस अदु भवुसरस मंज़् तार
करन सेव पादुनय सन्तन सो'न्दर ०

मुर्खं युस आसि ख्ययु ज्यादुहन न्यन्द्रे मंज़् प्ययि पो'श ह्यू व ज़न
सु किथु प'ठि वोथि प्रभातु समयन सो'न्दर०

करुन अभ्यास सुलि वोथनस वेह्यसुय रीज़ि व्यवहारस
अभ्यासी बनि आनन्दु गण सो'न्दर०

छि भक्ती रात्रो दुय्नुनु म्य ग'छ़् रोज़'न्य सतुचुय स्मरण
तवुय द्यवु बनि म्य ज़्न्मन छ़्य'न सो'न्दर०

ह्तो मनु पोशनूलो वोज़् रटिथ वन हा'रि गोशस रोज़्
सदा गोविन्द गोवर्धन सो'न्दर०

---

*स्व० श्री वासुदेव जी के बारे में यह मालूम नहीं, कि उनका जन्म कब हुआ और वह कब स्वर्गवास हुए। हां; कथन है कि आप मागाम गांव (बीरवाह) के वासी थे और प्रकाशराम से पहले हो गुज़रे थे।

**यह भजन निश्चित रूप से कहा नहीं जा सकता कि वासुदेव जी का ही है।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

प्रकाश राम

प्रकाश राम कुरीगाम (अनन्तनाग) के रहने वाले थे। भक्त कवियों में आप राम भक्त हैं, और इसी भक्ति के कारण आपको काश्मीरी रामायण की रचना की प्रेरणा मिली। आप का रामायण काश्मीरी भाषा का पहला महा काव्य है। आपने "लव-कुश चरित" को इस पुस्तक में शामिल करके इसे और भी रोचक बना दिया है। प्रकाश रामायण को काश्मीरी पंडितों में काफी ख्याति प्राप्त है, इसके भजन घर घर गाये जाते थे।

2. प्रकाश राम की कविता की खास बात इसकी सरल परन्तु शुद्ध भाषा है। दूसरे कवियों की अपेक्षा आपने अपनी कविता को संस्कृत और फार्सी के बोझ तले दवाने की चेष्टा नहीं की है। आपके रामायण में सम्मिलित कुछ भजन वासुदेवजी के भी हैं।

3. प्रकाशराम ने "अकु नन्दुन" भी लिखा था, परन्तु आजकल यह कहीं भी हाथ नहीं आता। आपकी ख्याति और नाम रामायण से ही कायम हैं।

4. काश्मीरी में कुल मिलाकर पांच रामायण लिखे गये हैं, परन्तु प्रकाशराम का रामायण ही सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। दूसरे चार रामायण उपलब्द्ध नहीं। इनकी पांडु लिपियां इधर उधर घरों में मौजूद हैं। प्रकाशराम के रामायण की विशेष बात इसका मुकामी रंग है।

5. प्रकाशराम का जन्म 1819 ई० में कुरीगाम में हुआ था, और वहीं वह 1885 ई० के आस पास परमात्मा को प्यारे हो गये।

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आव बहार बोल वुलबुलो
सोन वलो भर्‌यो शा'दी

द्राव कठ को'श ग्र_ज़ु पान छलो
ज़र' क्यथो व़ुंद़ु की दा'दी
वुज़ ु न्यन्दरे वुनि छय सुलो   सोन वलो०

काव कुम्यु'र बियि पोश नूलो
आव नालन ज़न' फर्या'दी
भाव दरदुक ग़म़ु गोस़ु गलो   ,,

नाव ही तन नेर सो'म्बुलो
ज़'रि ज़बान खत आज़ादी
प्याल ह्यथ छय यम्बर्‌ज़लो   ,,

हाव दर्शुन असि ने'मंलो
म्य छि गा'म'ति लोलन ला'दी
शीशह करान छुय कलकलो   ,,

सोन्त आवतय नभ गव खु'लो
वुत'रा'च़ प्यठ चोल फसादी
टेक' बटनि त वीरि क्यम फो'लो   ,,

नाव तन मन त्राव ज़लंजलो
द्राव सुहुल पान कमि नाग़ु रा'दी
खसु पर्वत वसू तुलमुलो   ,,

छाव अछ़्' पोश लछ नावि गुलो
कऱु खबर त़ु वुछ म्यत्रि दा'दी
हाव "प्रकाश" गाश हो फो'लो   ,,

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वन्दयो मो'ञ ब' पादन
छारथो राम् रादन

विचार ना'गि वति लारय
नुनर'कि तार् प्रारय
ब्रह्मसर किञ दिमै कन छारथो०

अछिन हुन्द् गाश म्योनुय
खो'श इवुन नुंद्बोनय
का'लि राव्यम् हिये तन ,,

कश् तीर लोयथ म्य
लशि छम नार'ञं रेह
अशि फ्यर्यंन ह्'रिम तन ,,

महालिश किञ इमा'यो
हर्मो'ख वञि दिमा'यो
हंसद्वार गछ़ित रटय वन ,,

च़_ रूदहम कथ शाये
क्रेंक् नदी वो'ठ बु लाये
गंग्बल् युन छु लादन ,,

गोस् नो केंह् म्य चोनुय
दयन् यलि बान् ज़ोनुय
चार नो ला'नि वादन ,,

च़ ज़ि गोख म्य निशि दूर
इज़ि त्यलि यलि गछ़्यम् सूर
वुज़ि पोत्र नाग् रादन ,,

नाव तन त्राव कीन्ह
भाव सीर दो'द म्य सीनय
हाव मो'ख थाव लादन ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बरज़िबल् युथ न् राव'य
राम् राम् क्रख व् त्राव'य
आलव दिज़्यम् नादन छ़ारथो०

नेत्रन् मंज़ रटै पाद
बुथि शेरि किञ दिमय नाद
मरयो वो'त्र छु आदन ,,

नाराणनाग् प्रार'य
वांगत् जाय छ़ार'य
प्रारै सू'त्य साधन ,,

सिर्यस् छु गाश चोनुय
तस छु "प्रकाश" चोनुय
सोय छै योग साधन् ,,

———

वारंग् बेरंग् छु पानय
इम् रंग हा व् नो जानय

"जीम" कजि ज़ुल्फे ग्राये
तशदीद था'वनम छ़ाये
हृजि स'तरह लेखन आये इम रंग०

यख शीन गो'ल ताप् रंगय्
आव तति द्राव रंग् रंगै
कें्ह मूद्य कें्ह रूद्य संगय ,,

मज़हव त् मिल्लतै मुकाम
दीन तय दुनिया बदनाम
तमि तोर सुई छु वेनाम ,,

वुछुम आईनस कुनुई
इ कुञ्य'र गव कोर कुनुई
ई छ़ायि ती छ़ुव नो'नुइ ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

"प्रकाशि" वो'ल जामै वज़ूद
वजूद अन्दरै छु मौजूद
मौजूद अज़ राहि नाबूद
इम् रंग हा ब् नो ज़ानय

को'सल्लियाइ हन्दि् गो'बरो
करयो गूर्‌ह गूर्‌ह
परयो राम् राम्, करयो गूर्‌ह गूर्‌ह

को'तू गोहम् च़् त्रा'विथ
क'सू ह्यक् हाल भा'विथ
अनी कुस मन्ह् ना'विथ करयो०

लगयो पो'त छा़यि
ही क'रथस बो हायि
नारस वो'ठ बो् लायि ,,

कनन छय कन् वाजे
श्री कृष्ण् महाराजे्
ज़गतुक छुक च़् राजे ,,

फेर'है अन्दि अन्दी
लागै पोश् गो'न्दी
साम चा'ञ सो'न् सन्दी ,,

लोल चोनुइ वो'न्य म्य आमो
छा़रथो शहर् गामो
बे'यि गो'छ़हम च़् रामो ,,

नेरहा' वाज़ा'री
हेडनम लूक सा'री
पादन लगय ब् पा'री ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

नेरयो द्वारि पती
लागयो कारिपती
तारि दिल गोम यती करयो०

म्य दुप्योम रामु राजे
खों'श ओय नु वोरु माजे
आदनकि सीरु बाजे ,,

म्य कुमू शाफ आ'सी
तिम तिनु कांसि क्रा'सी
च़ गोहम वनवासी ,,

च़य पा'रिथम बुज़ह जामु
बु छ़ारथ गामु गामु
परयो रामु रामु ,,

लो'लि मंज़ ललनावथ
जिगरस मंज़ बु सावथ
वोन्न ति नो कांसि हावथ ,,

नेरयो शामु लटे
बार म्या'न्न छ़िय च़य मटे
गाशरु लाल न्नटे ,,

दूरिरु नो बु च़ालु
कुसु क'रथस हवालु
ला'जिथस मायायि ज़ालु ,,

अछ़न हुन्द गाश को'त गोम
सिर्य "प्रकाश" को'त गोम
कें्हति छ़म नु आश को'त गोम ,,

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मशरित् मोल मा'ज नशरित च़य सा'री
राम् जुव् लगय पा'र पा'रिये

मुछ़् रूप् यलि आख क्रम् अवता'री
अमृत ज़ल् सपन्य् जा'रिये
वुत् रात खा'रथन वराह् अवता'री राम् जुव्०

ह्रणाकश्यप क्या ओस बड् अहंका'री
प्रह्लाद करनि लो'ग ज़ारिये
नर् सिंह दा'रिथ च़य निराका'री ,,

बलि् दानवस आख वाम'न् अवता'री
बुत् रा'च़् तल गव सु ख्वा'रिये
वोत पथ चा'त्री च़ोवापा'री ,,

भार गव राम यलि आंख अवता'री
खा'ली सपुन्य तीर् ना'रिये
त'म्य तीरह् सू'त्य क'त्य क्षतरी मा'री ,,

च़य छुक च़् तरवोज़ चंराच़'री
च़य छुक आसवुन सा'रिये
च़य आख काम्दीव राम् अवता'री ,,

कृष्ण रूप् यलि आख परउपका'री
गोकुल्कि मो'क्त गय सा'रिये
कंसासुर सेपुन समहा'री ,,

नेन्दर ला'जिथ बुद्ध अवतारी
कलि युग'कि गुछ़न गिरफ्तारिये
दर्शन करञि इन देवता सा'री ,,

गार्घीर धा'रिथ च़राच़'री
सा'री सपन्य समहा'रिये
मोकलावुह्क तिम नर्कनि ना'री ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दिमुह्'य लालु फल ख्यत्रि चा'रि चारी
गंडुह्'य जामु ज़रकारिये
वन्दुह्'य ज़ुव कास्तम लाचा'री ,,

मनि गाल राक्षस तु चलि दे'वह्_ ख्वारी
सीनह् ज़ोल त'म्य लोलु ना'रिये
"प्रकाशह्" गाश अन चो'वापा'री ,,

——

सद्‌ोपदेश

कबीरा कलयुग कठिन है, साधु न माने कोय
कामी क्रोधी मसखरा, तिनका आदर होय

रात गंवाई सोय कर, दिवस गंवायो खाय
हीरा जन्म अमोल था, कौडी बदले जाय

बहता पानी निर्मला, पडा गन्दला होय
साधु रमता भला, दाग न लागे कोय

भजन करन को आलसी, भोजन को होशियार
तुलसी ऐसे पतित को, बार बार धिक्कार

तुलसी मन तो एक है, चाहे जहां लगाय
चाहे हरि की भक्ति कर, चाहे विषय कमाय

दुख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय
जो सूख में सुमिरन करे, तो दु:ख काहे को होय

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

परमानन्द

नन्दुराम परमानान्द का जन्म 1794 ई० को सीर कानिलगोंड नामी गांव में हुआ था। आपने प्रारम्भ की शिक्षा अपने पिता पं० कृष्ण पंडित से प्राप्त की। बाद में आपने उर्दू, फार्सी और संस्कृत का भी पठन-पाठन किया। अपने पिता के प्राणान्त के उपरान्त आपने उन्हीं का पेशा पटवारी का काम ज़िम्मे लिया। परन्तु कुछ समय गुज़रने के बाद आपने पटवारी का काम त्याग दिया और साधना और भक्ति मार्ग की ओर बढ चले। पहले पहले आपने फ़ार्सी में कविता कहनी शरू की, और "ग़रीब" की उपाधि रखी। उनकी फार्सी कविताऐं उपलब्द्ध नहीं हैं।

2. परमानन्द की कविताऐं आत्मज्ञान का बहुत बड़ा स्रोत हैं, और वैखरी का सागर। आपकी कविताओं का एक एक शब्द मानी का द्योतक है। एक कवि की हसियत में उनका स्तर बहुत ऊंचा है। उनके भजनों में देवमाला और योग अभ्यास की भाषा उनके गहरे पठन - पाठन और अनुभव का भास देते हैं। काश्मीरी भाषा के भक्त कवियों ने उनसे बहुत बड़ा असर गृहण किया है और उनके मार्गदर्शन पर ही चल पड़े हैं। वस्तुतः परमानन्द कृष्ण भक्त हैं, परन्तु वह भगवान के हर स्वरूप और हर रंग के गुण गाते हैं। काश्मीरी में परमान्द नज़म के बानी-कारों में से हैं। "राधा स्वयंवर" और "सुदाम् चरित्र" उनकी कृष्ण भक्ति के सुन्दर नमूने हैं। यह बात याद रखने योग्य है कि "राधा स्वयंबर" का कुछ भाग उनके चाहिते शिष्य पं० लक्षमण राज़दान का लिखा हुआ है। परमानन्द मधुर भाव के कवि हैं। "अ[illegible]रनाथ यात्रा", "कर्म भूमिका" "कल तु छाये" आपकी प्रख्यात नज़में हैं। उनकी कृतियां योग अभ्यास के अनुभव का महकता चमन हैं। उसकी रचनाओं में देहाती भाषा का

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बोल बाला है।

3. परमानन्द की कविताओं का अंग्रेज़ी अनुवाद मास्टर ज़िन्द कौल ने बहुत पहले अपनी व्याख्या के साथ तीन भागों में प्रकाशित किया है। "ज्ञान प्रकाश" नामी पुस्तक में शामिल भजन अधिकतर परमानन्दजी ही के हैं। उनकी सारी कृतियां दो भागों में फार्सी लिपि में जम्मू काश्मीर कलचरल अकादमी ने छापी भी हैं।
4. परमानन्द के शिष्यों में मटन (अनन्तनाग) के सालेह् गनाई नामक पुरुष का नाम भुलाया नहीं जा सकता। पटवारी का पेशा त्यागने के पश्चात जब परमानन्दजी मटन के बासी बने तो सालेह् गनाई ने उनको 17 कनाल की भूमि दान में दे दी, जो आज भी उनके वारिसों के पास है। सालेह् गनाई परमानन्द जी के गृहस्थ का भार भी संभाले हुए थे। और उनके स्वर्गवास होने के बाद गनाई साहब, परमानन्दजी के शृाद्ध बड़ी श्रधा और शान के साथ किया करते थे।

5. परमानन्द का देहान्त 1879 ई० में हुआ। आपके नाम पर मटन में एक इनस्टिचूट की स्थापना की गई है।

श्री गणेश अस्तुती

नायक़ु शिव राज़त्रि दायको, विनायको जय जय जय

आस्तोत चा'त्रि मा वनिथ ह्यको, कथनुय म्यान्यन च़् कन दार
ओ'श म्योन मो'ख़्तु च़य पादन छको
विनायको०

पाफ म्या'त्रि तुलन नु सास़ हायको,
सोरन नु कल्पन ति ब'डि अंबार
वाठ क्या छु घाठ कति वा'तिथ ह्यको
विनायको०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गरि गरि ज़न्मुक गोम अरच़को,
क्या करु मरनस ति छुम नो वार
अर्ज़ंन्गु कुन्द गोम फलु कमि मको विनायको।

नित्य नियमु आ'सिय युथ चोन दको
युथ नावि दियि हमुस'य हां'ज़ तार
नतु गछि़ मुर्खस बेह्यन दुको विनायको।

असुवनि मो'ख खसु'वनि अ'रुको
विज़ि वु सात विज़ि गछ़ु वेदार
पम्पोश लागय पूज़ि चम्पको विनायको।

माजि हंदि टाठि राज़य ज़नको
गणेश नावस च़ेय आधिकार
म्य निश चु़ति सार सनकादिको विनायको।

जटि यस गंगा हटि वासको
मटि प्यठ भ्रशबस तु भस्म आकार
तस छुख टोठ च़य त्रिय बासको बिनायको।

सम्सारु यच़ छुम ख्योमुत दको
बुजरस कांह छुमनु मुहिमुक यार
सूरम म्य आय चा़र मन्टुयव तु त्रको विनायको।

ओसुम म्य पापन को'रमुत ठको
शापन नखु वा'जिम नु अख हार
पापव सु'त्यन गोम दु टको विनायको।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वासनायि तीरन ह्न्दि ब् पाह्को
हल बोज़नय गोम फलहार
मन् मा कांसि ति वुनि छुम शको विनायको।

'परमानन्द' छुस ब चोन याच्को
सो वोन्द् करवुन नमस्कार
मानस् वाचक व्ययि कायको विनायको।

गुरुस्तुति

शों'भ मो'ख हाव म्यति अमृत चावतम
सत्गो'र् हावतं घटि मंज़ गाश

गो'ड् सत्गो'र् सु'द ध्यान सो'र् नावतम
दम् दम् वद् च्यय कुन नमह्_।
रात द्यन अख क्षण छ्यन् मत् थावतम

जन्मस इथ कर्म् खुरि सम्भालतम
मत् दिशिरावतम साधन मंज़
मन चे कलि इन्द्रिय च्ूर पावतम

दह शोमर'विथ मद् हो'स्त पावतं
काह्न हावतं कुज्रिय वथ
सोऽहं शब्द निशि भ्यो'न मत् थावतं

शिशरम नाग् सर् तन नावनावतं
मत् वुछत म्य'त्रिस कुकर्मस कुन
मोहत्र सिधि म्यति अपोर तारतं

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

क्षण् क्षण् पननुय ध्यान धारनावतं
सोरनावतं ती यी पज़िहे
कामदेव् श्याम सुन्दर् लट् मत् दावतं

विश्वंभर् पन्नुय शुभ मो'ख हावतम
रोज़तं तु भावहाय पननुय हाल
मशरोवमुत नाव च़यतुस पावतं

वनमाल धा'रिथ दर्शुन हावतं
हावतं पन्नुय प्रकाश रूप
दोह गोम लूसिथ मत् प्रारनावतं

अमर पानो भ्रम संसार छुय
आदि दीव बन्नुक च़य आधिकार छुय
हारव रोस्तुय भव सर् तार छुय
सत व्यच़ार सत व्यच़ार

आदि अन्त शब्दन मंज़ ओमकार छुय
ज़प् न'य मंज़ अज़पा ज़प सार छुय
ध्यान् मंज़् आत्मुक ध्यान शूभिदार छुय
धारणायि दार धारणायि दार

ब्रोंठ पथ प्रारब्धुक व्यवहार छुय
पथ ब्रोंठ नेरनस फेरनस न् वार छुय
भा'य बन्ध बब मा'जि कुस च़य दरकार छुय
च़यथ कर यार च़यथ कर यार
कर च़् हृतकार कर च़् हृतकार

पराधीन मुर्ख बोज़ हुंद लो'कचार छुय
यावनस मंज़ कामुक अन्धकार छुय
बुजिरस न ह्यकनुक संकल्प् भार छुय
कर च़् पुरुष्कार कर च़् पुरुष्कार

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गोड् श्रवनी बोज़'नि दरकार छुय
तव् पत् अद् मन्नुक आधिकार छुय
निद्ध्यासन कर तोर् तैय्यार छुय
साक्षातकार साक्षातकार

मोह स्यंधि सुमि कनि इन्द्रेयद्वार छुय
यिम पार ग'यि तिम दिश् अवतार छिय
द'ह शमराव द'ह खदमत्गार छिय
कर दश्हार कर दश्हार

अथि आमुत भक्ति हुंद मुख्तहार छुय
पानस ना'लि छ'न्नुक इख्तियार छुय
कुस मना करान छुय कसुन्द आंकार छुय
छुख च़ मो'ख्तार छुख च़ मो'ख्तार

हार व'र लारी न सू'त्य योद खार छय
आ'स वहारा'विथ नफसि अमार छुय
प्रारब्ध फल सूरिथ पत् लार छय
ग्रट् अनवार ग्रट् अनवार

क'मिस कारबार छुय कुस बेकार छुय
नाहक देह द्रष्टी हुंद अन्धकार छुय
मन ज़ोन वेदचि ज़्यवि इकरार छुय
साहिबकार साहिबकार

तीव्र वैरागुक खास् सव्ज़ार छुय
शेव शेव बोलान पान् आवशार छुय
वेहखै लागि रोस्त वुछनस वार छुय
शांत शाल्मार शांत शाल्मार

शक्ति पातुक शहरुक सुबदार छुय
धर्म अर्थ काम मूक्ष द्युन इख्तियार छुय
योहय सरकार छुय योहय सरकार छुय
कर च़ दरबार कर च़ दरबार

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

"परमानन्द" नाव प्योमुत दुनियादार छुय
लूकन हुंद ह्यूव च़्यति व्यवहार छुय
दिव़ वुन सु पानय त्रिभवन सार छुय
सर्वं आधिकार   सर्वं आधिकार

— —

गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्यं वाऩ
च़्यथ विमर्श_ दीप्तिमाऩ भगवानो

वृच़् म्यानि गूपीय च़्य्य पत़ लारान
बन्सरी नाद़ वाद़ मतानो
न'शरिथ ह्यस त़ होश म'शरित पर त़ पान   च़्यथ०

अथ़ वास च़्य्य सू'त्य रास आस़ खेलाऩ
व्यास नारुद ति तति आसानो
दास़ भाव़ राधा कृष्ण़ कृष्ण़ ज़पान

देवी त़ दीवता सेव च़्यय कराऩ
भव़सऱ तव तार लभानो
ग्यवान रिवान ज़्यव छखऩ लोसान   ,,

अस़व़नि कोसम मोख़ चानि फो'लान
कोस्तौब नज़ि आसि शेहलानो
कोस्तोब त्रटि त़ माल़ आस़होय प'रान   ,,

माययि सू'त्यन च़् शायि शायि आसान
कायायि मंज़ भ्यो'न'ऩ रोज़ानो
सिर्यिकि आसऩ छाया छय भासान   ,,

आकाश़ मो'ख छुख आकाश भासाऩ
तत सत प्रकाश आसानो
देवन हंदि देव प्रा'णियन हंदि प्राण़   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

युस युथ सो'री तस त्युथ छुक हावान्
मो'ख हाव म्यति श्री नाराणो
प्रारनुचि फुरसत छमन् रूज़मच् दान्	च़यथ०

युस यी यछ़ितय ती छुय प्रावन्
कर्म फल् दात् च़य वखनानो
ह्योन ह्योन पन्नुय लूक लूकन बहान्	„

क्षमा मूर्खस गा'टलि छि करान
गाट् छुखन् तव् सू'त्य प्यवानो
पाठ पूज़ायि कनि मूर्खस यी ज़ान	„

तगिहेम त् ज़गि मंज़ आसहा थ्यकान्
वन् कस कां'सि छुमन् व्यपानो
कुन्नरूच कथ छय सन्नरस श्रपान	„

सिर्यि चंन्द्रम रोस्त जग छा प्रज़लान
भगवान् रोस्त प्राण अप्रमाणो
लागहस नित्य नियम रोज़िहम सन्निधान्	„

दास छिय अ'सि न्नो'न्न कोन् छुख मानान
ल'गिज़िन् पनन्यन बेगानो
शरम छय ना छिय शरण ईवान्	„

वनुन'चि जाय छमन् वनुन कव ज़ान
सनुनचि कथ छा व्याख आसानो
वनि यस यि पानस सु व'निथ न् ज़ानान	„

वाकि वाकि वदनस ति वाख छिमन् फोरान्
साक्ष छुन् अन् ह्य'ोत आसानो
चाक गा'म जिगरस त् आख छिमन् वलान्	„

छुसनु डेंशान वो देश् देश् छ़ारान
प्रारान छुसस छुमन् ईवानो
प'दि लूसिम'ति व'दि व'दि च़'ड्डि भरान्	„

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अंतु छुनु भगवत मायायि आसानु
आयायि तति कू'त्य छारानो
छा'रिथ तु गा'रिथ लविथ तु रावानु चयथ०

गिंदनस रंगु रंगु तंग छिनु ईवान
मंगुह'य बों'ति श्री नाराणो
हंगु तय मंगु रोज़तम संतोष्टानु ,,

हे कृष्णु पाप साञ्जि च.य छ़ख डंशान
शाप कास असि अ'सिछि नादानो
क्षमा कर यवु पायस छि प्यवान ,,

भगवत मायायि कांह छुनु ज़ानान
तस त्युथ छु युस युथ छु मानानो
मानु अवमानु रोस्त च.'ति मान वुति मानु ,,

युस न ज़ाव कां'सि तय कांह छुसनु ज.यवान
ज़ीव आनु आनु यस छि ज़पानो
ज़ानि सु सोरयु तु ज़ानि तस कांछा न ,,

बह्मा ति छुनु चो़र वीद ह्यत पोशान
तोतनस यूत तस पज़ानो
शेष नाग सासि ज़्यवि सू'त्य को'ल गछ़ानु ,,

युस ज़ि यूत मंगि तस सुय त्यूत प्रावानु
दय नज़ि मनि कुनि आसानो
वों'च.यय अर्पण तु चय म्योन आसानु ,,

धनु ध्यार पतव त्रा'विथ छि गछ़ानु
भाग्यवान तिम यिमन न आसानो
सन्तोष वृत दिम छिम तिम नव निधान ,,

सन्तोष वृत दिम छिम तिम नव निधान
तृप्त कर म्य सत स्वरुप ज्ञानो हो
यथावत युथ बों' आस'हथ वुछानु ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दयायि सू'त्यु ओस भगवान वनानु
आ'तिस बो'डिस तार तारानो
करुणा करनावि अपोर तारानु च़यथ०

युस कुंह न तस रुस्त ज़ागि मंज़ आसानु
पानु वननस त पानु बोज़ानो
सोरुय छु करुवुन पानय आसानु ,,

अमृत-मय वाणियि सू'त्य वनानु
वनि यिनके मो'खु चे'वानो
अ'स्यु अ'स्यु अ'स्यु ति सुय सुय अ'स्यु ति आसानु ,,

"परमानन्द" परमु आनन्द छु प्रावान
सूरमुत हनि हनि अरमानो
राधा माता तु बब कृष्णु भगवानु ,,

आरस मंज़ अच'वा'य विगिन्ये ज़ान नच़ा'वा'य

लागोस पोश पूज़े कृष्णु ज्यो'व न्यन्द्रे वुज़े
वो'परस कस पच़ा'वा'य
विगिन्ये ज़ानु०

ला'जिह'स तन तने शेहल्यायि हनि हने
कमव प्रेमव हच़ा'वा'य
विगिन्ये ज़ानु०

अशि कनि मो'ख्तु हारन छि लादय्न मो'ख्तु हारन
तूलि तूलि ज़ान रच़ा'वा'य
विगिन्ये ज़ानु०

ह्यतिहस पाद शेरे कृष्णस स्नेह ज़ि फेरे
खबर क्याह छम कच़ा'वा'य
विगिन्ये ज़ानु०

पोंपुर यथ शमुहस पथ नच़न क्याह छुय करान गथ
मनिस पथ कर मच़ा'वा'य
विगिन्ये ज़ानु०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वनुस मंज़ ननु वारे   सो'रन तिम कृष्णु प्यारे
क'न्यव तापव तचा'वा'य   विगिन्ये ज़नु॰
यि पद क्याह् छुय वनुन क्रूठ
सु "परमानन्द" कमी ड्यूंठ
वुछिथ वो'नमुत यचां'वा'य   विगिन्ये ज़नु॰

केशव छति क्रीशु मतु द'शिरावतम
हावतम पननी ईश्वर गथ

आय आम सोरान तु पायस पावतम
बलु रो'स्ति काये नतु पलुज़्यम कथ
बुजरिस डल मा तु अथु रटुनावतम   हावतम॰

अदंकनि लोबुम नतु मतु मन्दछावतम
अंधकारु रोस्त क्या पलज़ुम ज़्यथ
ज़न्मकि घटु कारु वो'ठ मतु द्यावतम   "

यावुन सोरय्म फिरुन मतु थावतम
ज़्यनु सो'रनु क्याह् म्य अरज़ुम ज़्यथ
यवु लुख असनम न तवु मो'कलावतम   "

छुम खसुन कोह् मतु दोह लोसुनावतम,
खसु कोर वसु कोर ब्रोंह तय पथ
रसुह रसुह पन'ने व'ति पकुनावतम   "

प्रात: कालुस मंज़ मतु सावतमु
मतु रावुरावतम मंदन्य'न वथ
शामु लटि कामु दीवु घटु गाशुरावतम   "

रामु नामु लंकायि डास करनावतम
रावण्य पा'वनम न्यन्द्रे च़यथ
कोम्भ करनसु ज़ुन न्यन्द्रे वुज़ुनावतम   "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सर् करनु्कि सर् तन मन नावतम,
अर् सर् कास्तम तु छम चा'ञि सथ
मर् मर् च्लि ह्यम तु घरि मतु रावतम हावतम०

मोह मायायि हुंद मस मतु चावतम,
सूहम शब्दस़ रछतम च़यथ
कथ बूजि़थ पतु ब्रोंठ वुछनावतम "

"परमानन्द" वार् वा'र फोलनावतम
वार् बोलनावतम सहज़चि कथ
छुख पा'नि पानु लुकु मोख मतु छावतम "

पा'ञ्छ त्रिय भागलिस क़रारदादस
वादस ज़्यादु नजि़ कम
फ़िकिरि ह्न्दि टोंगु मनकिस नागुरादस
ज़िकरि नेरि आबि ज़म ज़म
शीरीन पत गो'ल पान फरहादस,
वादुस ज़्यादु नजि़ कम

करखय गोंगुल नव आवादस
प्रानि़ हांचि़ तुलनय न नम
खो'द आवाद कर मो प्रार क़ादस वादस०

कर्मवित करिजि़ होश दिशि फसादस
ऋषि अमि र'शि निशि च्म
क'मलियो कमवित व्रातख स्वादस "

च्ख त्रा'विथ च् त्राव कमादस
नयि मंज़ लवख ज़ीरो बम
तुल क़दम सो'म पख वातख मुरादस ॥ "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गा'लिथ गरिजि़ फ़ाल किबरि फौलादस
सव़्र् हालि ज़ोर् ज़ोर् दम
मोखार शाह वात ख़ार् औस्तादस — वादुस०

म्य दुप्याव वहाब वात्यम दादस
करिहेम छोकन मरहम
यस दिन तस यिन तोरय नादस — ,,

दिमु क्याह जवाब क'रि म'तिस वादस
लोसुन दोह ह्योतनम
गच्छि़ मय बख़्शिथ वछम नु अपराधस — ,,

दिल साफी छय मरदि आज़ादस
"नन्दस" छि बन्दगी कम
फ़रियादरस वात फरियादस — ,,

——

प्रेमु पोश लाग शेरि त'सुंजे
वेरि कर्वा'य रोवये

होश बुलबुल प्राणु पोशनूल
ध्यानुकुल च़ाव फो'लनुस
प्रारवुन रोज़ खबरि तसंजे — वेरि

भाव बोंबुर द्राव गोशस
पोशु बागस चा़व मंज़
करनि गूं गूं तसंजि़ वेरे — ,,

समिवी सखियव अस्तु अस्तय
तमिस लागव भावु पोश
यस नन्दलाल नाव प्यवय — ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शशिकल प्रावक अद् चाव
जा़व अमृत द्राव नो'न
श्याम् सों'दरुन दाम् च्यवा'य वेरि

आव सोंत त'य छाव अछिपोश
चा़व बुलबुल बागनय
त्राव मोह जंद् वंद् कुनुये ,,

नो'न सु वुछत् जानावारय
मोक्त् हारय आव ह्यथ
ज़ीव डाल् दित द्राव व'रिये ,,

ह्यछत् करत् चार् पननुय
ध्यान धारनायि दार ध्यान
ज़ान प्राण मा छु मुर्खं प्रवये ,,

---

*श्री अमर नाथ जी यात्रा लीला

मन्त्र पर शीवय शम्भू मंन स्थिंर कर पूजुन प्रभू

दीहि गुफि सत च़यत आनन्द लिंग
मन पीटस प्यठ व्यूठ निसंग
लुख दपितनस कैलास् शृ्ंग मन स्थिर०

कन थाव सरुस्वती छय वनुन
व'नि व'नि पानु छुय ना सनुन
नाम् रूपु वो'न श्यो'न श्योन ननुन

त्राहि माम पर यात्रा च़ कर
हरमुख पनुनुय पान च़ वर
गो'फ पनुनी गो'फ छय बराबर

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लीला छ्य अमरनाथ ची
दीह् दार् सान एकांत ची
शम् दम गो'फ प्रशांतची मन स्थिर०

गोड् गणपतयारुक गणीश
दूर मा ज़ान रुज़िथ छु नीश
मूलाधारुक महीश ,,

ब्रह्मा सु युस सृष्टि करतार
स्वादिषठान् शुराह् यार
शट् डल् शश मो'ख ज़न कुमार ,,

शिव पोरि फेरि कुंडलिने
फेरवुन प्राण तति ज़ल् कने
सथ समन्दर स'नि वोग्ने ,,

अष्ट डल द्राव पम्पोश् डल
तोर फेर योकुन मो च् डल
वेचार् वुछत् समसार् डल ,,

ह्योर ह्योर पख न्यूर न्यूर च्. वात
दूर प्योमुत छुख कव् वुशात
गथ प्रावनचि वोज़ा कथ त् बात ,,

तीर्थ् रोस्त मा कुनि कांह् पो'दा
वीदन ति ओमकार वो'न पदा
ज़ीवन मुक्त सु परमात्मा ,,

नाभि वीश् दशि डल संगमस
च़ाव यम लूक् सत्संगमस
कृष्ण थावर ज़ागंमस ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अ'दि अ'दि फेर चकु दुरसय
प्रदिक्षण कर च़ मन्दुरसय
दीव पूज़ श्याम सो'न्दुरसय मन स्थिर०

मन्दर मुछ़तु वुछतु चन्दर यार
सांपनी तति हरि चन्दुरु यार
विजेश्वरी ज़न्म ज़न्म पार ,,

कजि त्रा'विथ वात थुजि वोर
लजि तति शेवु जटा चोपोर
अनाहितु मंडलस थाव च़ खोर ,,

छ्यफ छो'न्द ह्यथ वात चो'न्दुबल
विशोध चक्रचि ईव थल
दीवु पूजि ज़ीवय पाद छ़ल ,,

मन्ज़ वात खिलु नस तु खेलनस
पानय पानस मेलु नस
तील जन तेलस तेलनस ,,

वातुखय च़ वति वति वीरसुरन
तति छिनु वातान वीर सिरन
वज़ु वाव सू'त्य वलु वीर इरुन ,,

मनु निशि दूर कर भयु विक्षीफ
ना'विथ गणेशस सोर लीफ
च़ल नतु यी गोय रत्न दीफ ,,

पुशुराव पान परमीश्वरस
प्रदिक्षण कर तथ़ मन्दिरस
वा'तिथ रोज़ मामलीश्वरस ।। ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भरगु तीर्थं प्यठ छुय स्वर्गय द्वार
दिरगु निशु मुचु रिथ मो चु प्रार
भावु अर्घ पुशपु पूज़ा छय सार मन स्थिर०

रेन्ज़लु त्रा'विथ रेन्ज़ु पल
वा'तिथ निशानस मो च़ डल
कर्मस तु धर्मस सूर फल "

कन्ठ दीश युस छु चोदाह भवन
नीलु गंगि प्यठ बोज़ वावुजन
तति तोर पवनय योत दवन "

मंजिल छि मन्ज़ु मन्ज़ु वारुयाह
छो'ट वनुन छु मो'ट बोजु वारयाह
अक्रिया द्वारय छय क्रिया "

ला'ज़िम छु यी यी ती वनव
ननु वा'रि वातव कोर वनव
थ्यकि युस तु दुपि पगाह वनव "

ईशु ईशु उत्तम शीशु नाग
ह्यकु खय च़ तति ध्यन तु रात ज़ाग
राग त्राव प्राव महावैराग "

त्याग पां'चि करिथ पां'च्य तरंग
सत समन्दुरुकी च़यथ तरंग
पदमु नाभस छिम यिम ति रंग "

खस्तु अस्तु-२ पंचाल सुय
सूहमु भैरव बालु स'य
टो'ख युथ न लगि यथ लालु सय "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रिन्द् रोज़ बोज़ ज़िन्द'य मरुन
गर्भ यात्रायि अपोर त'रुन
सू'त्य छु तति शीवय वरुन मन स्थिर०

शो'ज़रिथ संकल्प् निश् मन
ऋषि रागि रोस्त काल् वेष् मन
शीहॅलिथ अमीशि् अनीशि् मन ,,

छय परा पशन्ती तथ पशन
मद्‌मा तु वैखरी छिस पशन
यिछ़ अवस्था ब्रह्मय ऋषिन् ,,

भाव् अमरावती छय नाव
मल भवूत छल गृहस्त भाव
शीव पादन पान पुशराव ।। ,,

युस छु परमात्म व'टख नाथ
यस छी भैरव वितालु साथ
यम् करख सोयम दर वेशाथ ,,

रुदमुत गोफि युस शो'द्ध बो'द्ध
नव निदाधीन तस अष्ट् स्यद्ध
आकाशि वो'थ केन्ह नु गो'त नु व्यद ,,

नंग् मो'त हंग् तय मंग् रोज़
ईश्वर दर्शन् शब्द बोज़
यी गछ़ि ध्यान दयि घर् सोज़ ,,

गोफि मंज़ गोफि त्रात पनुने
त्राव दीवी तु दीवतान'य
छो'नि छिन् यिम भवूत कुने ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

क'नि मन्ज़ लाल सुय मनि मंज़
छो'अरुक छो'नि छो'नि रो'नि मंज़
तफ करिज़ि दीह् आ'रवनि मंज़ मन स्थिर०

सो शव्द् प्रेमय प्रणुव'य
अगन्यान्ह्_ शिखरस त्राव रवुय
तालव कवूतर आलुवय ,,

सहसर् डलय गथ च़ प्राव
व्रह्म रन्ध्रस निषकल स्वभाव
मनुचे दमाले कर च़ त्राव़ ,,

पकुवनि छि दारस मुति मतान
थान गव ज़ि यति बिहान वो'थान
समाधि मंज़ बुत ह्यूव मोचा़न ,,

पनुनुय छु पान पानस च़'मुन
यी च़मुन ती स'मुन ती श'मुन
अ'त्यु वुहान लोलु नारु अ'त्यु हुमुन ,,

युथ थान छुनुय प्राव यिमन
तिमुव'य ज़ोन ब्रोंठ आव यिमन
परमात्मा प्रज़ुनिथ यिमन ,,

तति फेरवुन अनाहितु नाद
स्वपनु अनतु सुषमनायि आद
तुर्यायि तुरया तीथ समाध ,,

जिस में जोगी आ पडा
जागृत स्वपनी पिंगला इडा
उतरा वहां कोई न चढा ,,

भौंवरा कमल में जब उडा
अविनासी नाही सब कड़ा
और था कोई ना बड़ा ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

फीरिथ इडायि कित्र संगुमस
रसु पूरण मयु च़्यथ च़्_ वस
न्यथ करान श्राध छी यस वु तस मन स्थिर०

गोफ च़ल च़ त्रा'व्थि तस शिवस
तसु रों'स्त रोज़ी नु केंह् च़्यतस
पान पुशुरावुन छुय च़्य तस "

शिवु शिवु ध्यानस मो च़ डल
च़्म छय प्रकरथ पुरुषस मु वल
कों'र यि चि़त्रकार मायायि छ़ल "

यव कित्र शिव ज़ानख च़ों'पा'रि
रोज़नय नु केन्ह्_ पापुनि च़्य भा'रि
भवसरु सा'री शिव शिव ता'रि "

युन गछु़न छय ज़ान यात्रा
गण्यानस छि वुछिनि यात्रा
प्रनुनी छय वु'त्रि वु'त्रि वारता "

त्रोप नवद्वार वात नव दल
वा'तिथ च़ली ज़न्मचि वुदल
दीह् यात्रा गयी सुफल "

दीह् छुय वों'नमुत दिवुदार
समसार ज़गथ दीवु द्वार
ध्यान कर ध्यान ज़ान दीह् उधार "

फेरवुन छु य्रलि त्रिभवनुसय
वा'तिथ तथ विष्णु भवनुसय
यमलिस कमलिस भव वालसुय "

वुज़नस छु ज़ल निर्मल व्रजल
नित्यु नियमु वस भ'वानि वल
वुदि मनि वात भवानि वल "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भर्ग् पाद बोज़ सुम स्वर्ग हेर
चमकी तीज़ कासी अत्र्र
च़लनय ज़न्म् ज़न्मकि बुखेर ,,

भर्ग् रूप् नव दुर्गा च़ मान
स्वर्ग लूककि छी तथ नमान
इष्ट् दीवी छु पननुय प्रमाण ,,

शिव शक्ति अकि नाम् रूप वन
पानय बोज़ क्याह् नो'न वनुन
परमानन्द पानस बनुन ,,

दीवी सो पार्वती सती
मा'ज़ि यस वो'नुख मीनावती
शिव तस वरनि आव तती ,,

ही दीवी म्य दया करुम
हर् हर् हर् शाफ पाफ हरुम
कर्म् फल वुछनय वो'त्र वरुम
मन स्थिर कर पूज़ुन प्रभू ,,

---

*काश्मीरी भाषा के काव्य साहित्य में "अमरनाथ यात्रा" एक अद्वतीय काव्य है। यदि यह "नज़म" किसी और भाषा में लिखी गई होती, तो इसकी गणना विश्व के महान साहित्य के साथ की जाती। परन्तु दुर्भाग्य से परमानन्द काश्मीरी भाषा के कवि थे और काश्मीरी भाषा-भाषी सारे संसार में पर्याप्त नहीं हैं, और इस भाषा को कोई महानता भी प्राप्त नहीं है। दूसरी बात यह है, कि परमानन्द को पूछने वाला कोई व्यक्ति आज तक पैदा नहीं हुआ।

2. यह "नज़म" योग अभ्यास के शारीरिक परिवर्तनों और अध्यात्मिक अनुभव का विस्तार से वर्णन करती है। परमानन्दजी

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ने योग अभ्यास की सारी क्रियाओं को श्री अमरनाथ जी की यात्रा के भिन्न भिन्न पडावों के साथ जोड़ कर पेश किया है। भाषा और इलामतों का प्रयोग इस काव्य में इस सूक्षमता और चाबुकदस्ती से किया गया है, कि इस काव्य का भीतरी संगीत कानों में गूंज उठता है जिसको पढ़ने वाला अनुभव तो करता है, पर बयान नहीं कर सकता। योग अभ्यास के सातों चक्रों मूलाधार से ब्रह्मरन्ध्र तक का वर्णन इस काव्य में कलात्मक ढ़ंग से किया गया है जो पढ़ने मात्र से ही किसी भी अनुभवी साधक को स्पष्ट हो जाता है।

3. पिछले दौर में अमर नाथ जी यात्रा एक महा धार्मिक पर्व माना जाता था, और यात्रियों के लिये शुराह यार, शिवपुर, सिद्ध यारह बल (पाम्पुर), विजेश्वरी, हरिचन्द्र घाट, थजवोर, भगु तीर्थ, मामलेश्वर, नवदल, ईश व'र इत्यादि अस्थापनों के दर्शन और पूजापाठ अनिवार्य होते थे। वास्तव में सारी यात्रा इन धर्मस्थानों से गुजर कर ही जाती थी और इन स्थानों पर रात दो रात के लिए डेरे और पडाव भी डाले जाते थे। पर अब यह यात्रा एक रीती मात्र ही रह गई है। हमारी नई पीढ़ी के लोग अब इन धर्म अस्थापनों से अपरिचित हो गये हैं।

4. अमरनाथ यात्रा की प्रत्येक पंक्ति "कवि परमानन्द" और "साधक परमानन्द" के मिलाप की द्योतक है। यह रचना आत्म बोध और इतिहास का सुरीला सरगम है, जहां पर आत्मा और परमात्मा की बीच की दीवार ढह जाती है और सारे परदे हट जाते हैं, और जहां पर साधक और अभ्यासी ज्ञान और ध्यान धारणा के सागर में डूब जाता है। ज्ञान और धारणा की यह क्रिया जब तेज़ हो जाती है, तो साधक वाणी-शब्द की भूमिका से ऊपर उठकर अशब्द और पूर्ण मूकता की अवस्था को प्राप्त करता है, और अन्तर्मुख होकर अपने आप में ही विलीन हो जाता है और खो जाता है। परमानन्द जी ने इस अवस्था को "तमि तोर पवनय योत दवन" कहा है।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

राधायि राधिकायि श्री कृष्ण दा'री
पादन लगोय पा'रि पा'रिये

कृष्णु जु महाराज़ गरुडासवारी
तोतु ज़न सबज़ा का'रिये
अड़ कजि कथु चाञि बोज़ि वनु हा'री पादन०

मुरली शब्दु ज़िन्दु गच्छह्'व सा'री
वाग्यि ही कृष्णु मुरारिये
लो'तु ह्'न भुतु रा'च़ पापन भा'री ,,

दीवी तु दीवता समिथ सा'री
नमिथ छि वनान ज़ा'रिये
सन्तुष्ट रोज़ा असि क्षमाका'री ,,

सालस आमुति छि राज़ु चोपा'री
गुरि ह्सिथय रथु सवा'रिये
व्यवमान पा'रुनि च़्य राज़ु को'मारी ,,

कथन चान्यन कन धा'रि धारी
अथन छु मां'ज़ि रंग ला'रिये
रत्न च़्य सो'दरय मंज़ा कुमि खा'री ,,

"परमानन्द" छो'त यच़ प्रा'रि प्रारी
करतन परम पा'रिये
राधा कृष्णय बोज़ि प्रथ दा'री ,,

कर्म भूमिकायि दिजि धर्मुक बल
सन्तोषि ब्यालि बवि आनन्द फल

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दुयि प्राणु दय्यन तु रात दांदु जूरि वाय
कुम्बके कुरु ज़ोरु तिमनुय लाय
हलु कर युथनु रोज़ि बीठ कांह रे'ल सन्तोषि॰

लोलुकि आलु फालु तुलुना'विथ
धैर्य यटु फिरि दतु फुटुरा'विथ
वैरुक स्नेह युथनु रोज़्यस तल ,,

वेचार ब'ठि तु वेरु लदिथ क्यथ
शरोचि यन च्चव शोज़ुराविथ वथ
समद्रष्टु पातजन अदु फेरि ज़ाल ,,

सोन्त छुय दोह तारु मो'त यावुन
नज़ि पज़ि साथा रावुरावुन
वव व्योल मो प्रार करु मन्गल ,,

त्रोपरिथ फो'रनायि नामि वुधर
सो'हके रवि चखि सू'त्यन भर
यन्द्रे गगरन करू वठल ,,

भक्ति हन्ज़ि न्यन्दि फेरि साधना खेत
ह्यलि नेरि तपुके पपि सगु सू'त्य
समभावनायि फो'लि पम्पोश डल ,,

विषय पो'श वारु रछनावुख
तिमुन'य अथि युथ नु खेत स्यावख
भावुचि राव'चि नेर निष्कल ,,

ह्यलि यलि नेरि त्यलि सान्पनस क्राव
वैरागु द्राति सू'त्य लून्यु लून्यु त्राव
सम्बन्धु रोस्त माव लाव्यन वल ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मटि खसुनुचि रजि़ म'ठि म'ठि सार
सादुनि अनतु भा'य बन्ध तु यार
नित्यु नियमु सोम्बरिथ अदु समि खल संतोषि०

त्रिगो'ण त्यागु नम अख गो'त्रि लद
नमनि प्रावख निर्वाणु पद
समि त्युथ तमु दिथ कर कोशल ,,

ध्यानु धारनायि वानु मों'ड व्यस्तार
ज्ञान दानु दानु खास घासु मंज़ चार
मनुके अथु सू'त्य वारु दिथ छल ,,

त्यागुके अथु सूत्य वारु छों'म्बनाव
प्रोनु तु ज़ग फुटज्यन भ्यो'न भ्यो'न थाव
ज़ागि रोज़ लाग'नय त्राविथ ज़ो'ल ,,

तूलिथ थाव अदु अम्बरन माल
सूह्म हायकु सू'त्य नख वाल
लोति भारि वातु ना'विथ खन्नुवल ,,

शमु दमु यमु नियमु घाट वातुनाव
शांत श्रद्धायि ज़लु पकुनाव नाव
पानस शीहलिथ मानस बल ,,

लागनु वालि माल आगस तार
खा'लि युथ न रोज़ी हा'लि जा'गीदार
फा'ज़िल तु बाकी रोज़ि कस तल ,,

सन्च्य्थ ब्योल ब्ययि चारिथ थाव
सोन्त यलि इयि त्यलि फ'लि फ'लि वव
ओपनय उपकारु नो'व फल ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

योगु मायायि हुंद भूगी आस
यी छय द्दुयी ती पानस कास
साधु नाव प्यव अदु स्वादु मो डल संतोषि०

कर्मफल सोरनय गुरु शब्दय
सन्चय्थ क्रयमान तु प्रालब्द्धय
कर्म कांड ज्ञानु नेरि नारु बुज़मुल ,,

स्वयं प्रकाशके विज्ञन्यानै
त्रा'विथ मान व्ययि अभिमानै
प्रा'विथ रोजा द्वादु शांतु मण्डल ,,

"परमानन्द" ओस ज़मीनदार
हूरिथ धनु, द्यार सूरिथ लार
वांगचि वा'रचि चज़ी गांगल ,,

घटि सज़ गाश आव चात्रे ज़यनय
जय जय जय दीवकी नदंनय

अस वनि सन्तानु वसुदेवुनुय
तस ति क्या डींश डींश रोजिहे वो'नुय
ज़ाख नन्द गोरिनि अकु नन्दुनय जय०

जमनायि तमन्ना पाद प्रणा'मय
निस्प्रह वालु गोपालु निपकामय
तव ज़ल ह्योर ह्योर ओस खसुनय ,,

दोधु हां'छ ला'जि योशोधायि माजे
ज्ञानन न आमुत ज़गि हुंद राजे
शो'भ मो'ख होवथस अदु त्रिभुवनय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बोध ब्रोर दोधु च़ूर द्राव खोखुजे
गूरि बायि चोपा'रि लार'नि लजे
म'ति म'ति म'ति क्या छु बान् फुटुरनय जय०

च़रित च़'रि चा'ञ कुस सनु वने
सनिथ च़य छुख ह्ने ह्ने
वनिथ ज़ोन अ'कि शुकदीवुनय ,,

वीदव वखुनुवुय वेदान्तय
दया सागरु न्यथ शांतय
सथ चंयथ आनन्दु अमृत गणुय ,,

नारुद ज़गि हुंद सतगो'रु तु स्वामी
तस ति क्याह् भगवान अन्तर्यामी
असन तु प्रसन्न य'च़ च़रच़_नय ,,

नानाकारय नानाद्वारय
नाना मो'ख नाना व्यसतारय
नारुद ति डींश डींश ओस अर्च़नुय ,,

सर्व आश्रये सर्वामये
अद्वोये अच़'ये - रूप अभ'ये
अचोत अमृत अलक्षुणय ,,

सूय छुय ज़गि हुंद ओश आसुनय
सूय छुय बागन पोश आ-सुनय
ज़न युस पोशनूल ज़न बोलुनय ,,

पूशि यस नु यूगी ध्यान सो'रनसतय
ज्ञान छुनु पलज़ान ज़ान करनुसतय
छा सामूथ वुछुनुक न्यत्रुनय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गोपियन हृन्दे गूपीनाथो
वरतल प्रारान छुस बो अनाथो
माधव यादवनि हृन्दि आदुनय जय०

ज़ानय नु मन्त्र तन्त्र तु पाठय
भव सागर क'ति सूम तय शाठय
तार दिम नाव छय्म नामु स्मरणय ,,

ज़ानय न पूज़ ह्यथ सहसुर्नामय
को'म मो'ठ ह्यथ बो आमुत सोदामय
मंदछन छिम यच़ गुमु यिवुनय ,,

पापव यापुस शापुनि अन्धे
ज़न्मुक न्याय च़य रोस्त कर अन्दे
"परमानन्दु" आसय शरुणय ,,

यियि कति भक्तिस मनि मंज भाव
दियि नय दातु यस मन्गने द्राव

अनुग्रह पनुनुय अनुभवु रू'प
अनिस अत्रि घटि क्या करि धूप
वुछि सुय यस दपि अ'छि वुसराव दियि नय०

सोरुगस छि वुसरिथ दारि तु वर
अच्छ़ रच्छ़ नच़ वु'नि तथ अन्दर
हरि यस थरि गुल सु क्यथ करि क्राव ,,

दीवु लोन ज़ोन क'मि प्रज़ना'विथ
ह्यकि म'ति छि क'मि कस सीर भा'विथ
सो'दरय मंज़ वाव तारय्स नु नाव ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

चन्द्र कुय रावि तस यस नु दी दय
द्रालिदस सन्चि़थ पोशस नु वय
रोनमुत वय ह्यथु हृय्यि तस छाव दियि नय०

कर्वुन ह्र्जुव पा'नि पानय
पज़्या समयस युथ सामानय
कर्म खुर यस इयी तस क्याह् ग्राव ,,

"परमानन्द" वनतु सोदामुन
दो'दुरिथ कुलिस'य इया बामुन
हरद्_चि ज़रदी यि पोश फो'लनाव ,,

——

श्री श्यामु सो'न्दर मुरली मनोहर
अज़र अमुर मुरारी
ज्ञानी नु ब्रह्मा विष्णु महीश्वर
अज़र अमुर मुरारी

कीशव केशव करुहोंय चामुर
चय शिव ग्रेशोथ चोपा'री
ऋषिव ड्यूंठुक नु ही विश्वम्भुर अज़र०

स'तुन सो'दरन हन्दे आगुर
यिम तारु त'रि तिम क्यूं ता'री
चोदाह रत्न तु चय द्राख श्रीधुर ,,

शूराह ज़ा'निथ शुरय्न अंदुरु
गिन्दान चय सू'त्य आ'सि सा'री
शुराह सिंगार पा'रिथ रथेन्दुर ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

देव कन्यायन मंज़ सत शंकर
शक्कर वुठ अ'सि वुसा'री
गन्दरभ ग्यवान च़्य कृष्ण गो'न्दर अज़र०

पूरबु पश्चिमु दक्षिणु उत्तरु
वुछान वुनेम'ति टा'री
बोछे ह'त्यन सिर्यं_ लो'ग लगनि दरु ,,

वदान अशिस क'रिमुति अम्बुर
च़ छुखनु बोज़ान यिम ज़ा'री
मुन्यन गाश सूर घनुन छु अस्सर ,,

प'थर प्यय अ'सि च़्य वो'न्द गोय पत्थर
वतन न्यथर वो'थारी
दर्शन दितु वोन्य असि रछतु सत्तर ,,

व'छि़ तु गा'व रूज़िथ चात्रे फ्रेचुर
प'छि़ ज़न रूज़िथ अनु हा'री
गछ़_ अ'सि तिम ह्यथ अ'सि गछ़_हा'व घुर ,,

वो'मा छि असि केंह क्षमा सागुर
च़्य मा नफा असि ख्वारी
ईश्वर दर्शनु च़लि हे यी शरु ,,

गोकुल मंज़ यलि वा'च़्य यि खब्बरु
लो'बहख नु छा'रिथ चोपा'री
छारनि लगुने अन्दुर तु न्यबुरु ,,

वनु वनु फेरान अ'सि चा'त्रि आसुरु
पान हाव लगहोय च़्यय पा'री
जसुधानन्दुन वसुदेवु पोत्रु ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

"परमानन्द" छु वनान आश्चुर
अरमान ह्यथ गा'मति सा'री
परमानु पनुनीय करि कोंछा सरु अज़र०

रस पूर्ण_ परम सदा शिवुह
सत चित आनन्द विज्ञान रवुह

दीन चा'त्रि नव निध अष्ट सिद्ध_ह
ज़ीवन हंदि करुणा निधाह_
गुलि गुलि अमृत इमव च्यवुह सत०

कुंभज भजना चा'त्र करह
गागुरि मज़ इतम सागुरह
ज्यव दिम तिछ युथ चा'त्रि गीत ग्यवुह "

छ्यत्रगच सो आशव पाशव सान
आशो मटि छुय पान दपान
हे शिव ! थवमय म्य आशुवुह "

पानस पानै छु मेलनुय
गिंदुना छा गिंदुन तु गेलनुय
सो'न नेरि नारु मंज़ु गलि ज़ुवुह "

देह द्रष्टु गलि च्लि अभिमान
अदु बनि सतु स्वरूप ज्ञान
कृष्णस युथ ज़ि मेलि उद्धव_ह "

यस इछि सुय सुय तस इछे,
गछि यस सुय सुय तस गछे.
इछि पछि तमिसय प्रारवुह "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लोलुय छु ओर योर मो'लवुनुय
लोलुय छु ओर योर ललवुनुय
लोलु सू'त्य सुय लोल ललुवहु सत०

केंहु छुनु लोलु रोस्त आसुवुन
लोलुय छु सार व्याध कासुवुन
लोलुके गाशु घटु कासवुहु ,,

लोल बोज़ बोल व'नि भो'वनय
लोलुय छु चोदाहु भवनय
शोलवुन सु लोलुय ललुवुहु ,,

लोलु सू'त्य वोलसुन आयि ज़ाग
लोलु सू'त्य छम भरित पय तय रग
लोलु परमानन्द प्राववुहु ,,

"परमानन्द" बोज़ दयु गत
वोथ त्राव सा'र्य मत मो च़ म'त
कथु बोज़ नतु क्या यि क्रवु क्रवुहु ,,

——

त्राहि माम त्राहे पाहे मुरारी
कटु संकट ही मुकटु दारी ।।

इनु इनु ज़्यनु ज़्यनु य'च़ गा'मच़ घटु
घटु पच्छि कोताहु गो'ट आकार
नतु आकाश ब'ति क्याह वनु क्या खटु कटु०

हो'ल हो'ल यि पापुन बोर गो'व तु डयजि अटु
अटु भारि कठ तु काठ कहि वाति गाठ
वथुवोर यन्द्रे च़ू'र वडि सटु वटु ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दिह् पुछि कालुन त्रास छुम तु य'च् नटु
नतु विज़ प्रा'विथ विहित स्वांग
पटु कोड म्य कालुन तु वोन्नि शेरनस बो' पटु कटु०

तावुननि बाज़ुर मोख्तस लो'ग म्य वटु
यावुन पो'ख्तुकार सौदा खाम
यावुन याम सोरि बुजरस कति वटु ,,

म'ठि म'ठि छा'रि छा'रि खटनस बो' आस खटु
खटु छा'रि छा'रि मठु लबि जि तु क्याह्
लय मा रटु यो'द चा'ञ खोर नय रटु ,,

यी वोव म्य फुलि फुलि ती ह्यलि ह्यलि वटु
कलि कवु रोवुस गलि गुयि म्य ज़्यव
च्वचि किछ्_ पेहनय ग्रटु बीठम'ति चूटु

मंडन आर को'र म्य मूढन थाव्य म्य जटु
मुंडन गो'ल यि म्योन व्यवहारु कुल
फाल वुछि वुछि हाल फाल लो'ग म्य वु लटु ,,

शोंगमुत यि घरु बार अदु कमि फुलटु
वुछतु यो'द ज़ान्ह मा मटि मद ह्यचाम
अदु मा आसिह्यम यवु खोतु वु लटु ,,

धर्_ना तु बुढ ना फुटरिम पल तु वटु
ज़ोनुम नु हो'द्_ हरि हुरव'नु आस
हफ्त जोश पानस आकाशि प्यु म्य त्रटु ,,

तार दिम यवु तवु भवु सर्_ नतु फटु
रंगु रंगु मंगनस बो' तंग आमुत
मोंगमय म्य इकु वटु च्_ ति दिम इकु वटु ,,

"परमानन्द" सो'रतु सोरनय सारि लटु
लटु पटु ह्यथ रोज़ सखरिथ क्यथ
सोरनय नु वठ व'नि सोरमुत छुय मटु ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वयकोन्ठ बन्योव बिन्दराबनुसय
कथु वनसुय रटनम जाय

तोर् आयोस मोछि ज़ वटिथुय
यति मुच़्_रिम अथु दोशवय
मो'छि मुच़्रिथ अफसूस ख्यनुसय कथु०

तोर् आयोस योरु चाञ्य वेरे
महाकाल मा कां'सि छ़ोरे
काल मा त्रावि योर कां'सि ज़'निसय ,,

पाञ्च़्न दोहन आस करनि सा'ला
यि छु दुनिया मो'त मा'ला
क्या छु ह्यो'न द्यो'न क्या छु न्युन चन्दुसय ,,

जीवन वो'न दर जिगरुअ'ये
बूज़ुम यी ढयू'ठम तीये
जान वन्दहै शो'भ दर्शनुसय ,,

लोलु च़ा'रिथ शमशान् वनुसय
वैरागु द्राति त्याग करनाव
नतु मा छुय मच़्च़्र मंज़ मनुसय ,,

प्राण म्या'त्रि न्यथ प्रात:कालस
वनतु कुस पोशि महाकालस
छा सु रोज़ान बिहित कुनि क्षणुसय ,,

"परमानन्द" वो'त्र रूठ पानस
यूरि अनतन थानस प्येठ
सूह्म शब्द छुय क्षणु क्षणुसय ,,

—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लक्ष्मणजी 'बुलबुल' नागामी

लक्ष्मण राज़दान "बुलवुल" परमानन्दजी के प्यारे प्रधान शिष्य थे। लक्ष्मणजी की हम पर बड़ी कृपा है, कि आपने अपने गुरु परमानन्द के सारे काव्य ओर रचनाऐं हम तक पहुंचाई हैं। यदि 'वुलबुल' ने परमानन्द जी की क्रतियां सुरक्षित न रखी होती, यह सारी लीलाऐं, भजन इत्यादि लुप्त हो गये होते और काश्मीरी भाषा इस मूल्यवान सरमाये से वञ्चित रह जाती।

2 लक्ष्मणजी स्वयं भी एक बहुत अच्छे कवि रहे हैं। दिलचस्प बात तो यह है कि 'राधा स्यंववर' का वह भाग जो 'मोहनी रूप' के नाम से जाना जाता है, वास्तव में बुलवुल का ही लिखा हुआ है।

3 वुलवुल ने 'साम नामा' लिखकर काश्मीरी में महाकाव्य की परम्परा को एक नया मोड़ दिया। आपकी मस्नवी 'नल दमन' काश्मीरी भाषा की एक बहुत ही सुन्दर मस्नवी है। परन्तु यह आज तक प्रकाशित नहीं हुई है। बुलबुल की कई दूसरी लीलाऐं और भजन भी अभी तक नहीं छपे हैं।

4 लक्ष्मणजी मलापोरा (बानामोहला) श्रीनगर के रहने वाले थे। परन्तु बाद में शादी और नौकरी के सिलसिले में आपने नागाम गांव में वास किया और जीवन भर वहीं पर रहे और वहीं पर प्राणत्याग भी किया। गौतम नाग (अनन्तनाग) के अतिरिक्त आपने महाराज्ञा देवी अस्थापन वादीपोरा (नागाम के निकट) में साधना की और तप-जप में लगे रहे।

5 आपका देहान्त 1905 ई० में हुआ। इस बात का आपको

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पूर्व ज्ञान था और आपने स्वयं इसका पूर्व कथन फार्सी की दो पंक्तयों में किया भी था :—

" बिया-ए-बागबान बर्गे कफन अन्दाख्त दर गुलशन
कि ज़ेरि पाये इफवे रामजी आमद शरण लक्षमण "
1962—बि०

——

श्री गणेश अस्तुती

ॐ श्री गणपत् विघ्न् राजन्द्रो
सो'न्दरो मन्द्रस वो'थरूय म्य
शशि वरण् विष्ण् रक्षपाल् चन्दरो
लाल् रत्न् माल् नाल् पा'रयो
तन् मन् लागय व्यन् पोश गो'न्द्रो सो'न्दरो०

मोक्षदाता छु.क च. मो'ख् गजन्द्रो
सो'ख् मो'ख् ह्यवतम पनुन अनुग्रह
कृष्ण् पिंगल् मलुयो कों'ग तु स्यन्ध्रो ,,

दीवकी पोत्र त्रय नित्र रत्थेन्द्रो
त्रो'लवा वल्लभा ह्यथ इत् व्येह
यन्द्राज् स्तोतनस सू'त्य ह्यथ कन्द्रो ,,

भास्कर् मो'खसुय च.यय शिखर चन्द्रो
तत सत प्राकाश आकाशे
गाश चोन ज़गतस न्यवुर तु अन्द्रो ,,

चो'त्र डलु मंडलकि राज़य इन्द्रो
एकदन्त् आदि अन्त् मद् रोस्तुय
मूलाधार् प्यठ ब्रह्मयरन्ध्रो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

विघ्न हर्तार् दिगम्बर् गन्द्रो
गिन्दहा'य आ'रच़र् च़राच़र् च़यय
गन्ध पुष्प लाग'हाय' पम्पोश् गन्द्रो सो'न्दरो०

हृदया नन्द् परमानन्द् सो'न्द्रो
राम् च़न्द्र् 'लक्षमण' आव शरणय
वुज़् नावतन मत् पावतस न्येन्द्रो „

चात्रि आसर् आस ईश्वर् कर अनाथस प्यठ दया
काम् दीव् श्री श्याम सो'न्दर स्यद्ध म्य करतम कामना
देवकी वसुदेव नन्दन कांह् म्य छुम नो च़यय सिवा
कृष्ण गो'न्दर राम् च़न्दर आ'रत्यन प्यठ कर दया

व्याप् को'त बो' शाप सूत्यन भा'रि पापन छिम मटे
वो'न म्य छुमनो ओ'न गोमुत छुस काम् क्रोधुचि अनि घटे
युन गछ़ुन तय ज़्यो'न मरुन ज़ोनुम न मा छुम प्रथ लटे चात्रि०

तप सो'रुम नो ज़ाप सो'रुम नो दफ़्तु कथ् क्युत ज़ास बो
यच़् अधर्मी छुसय कुकर्मी वनत् कथ क्युत आस बो'
आस़ आशावान बर् तल दास कव् उदास बो' „

च़य छिहम माता पिता भ्राता त् दाता बान्धवा'य
च़य छिहम ईश्वर महेश्वर च़य महीशे केश्वा'य
च़'ढि भ्रुरिम व'दि व'दि म्य अनतम ददिम'तिस मूलस थवा'य „

यथ ज़न्मस पाठ पूज़ा चा'न्य ज़ांह ज़ा'नी न् म्य
वथ म्य रा'वुम सथ असथ ज़ोनुम न कथ् मा'नी न् म्य
वो'द्ध पन'त्रि ज़ांह शो'द्ध करम नो मल् निशि फा'नी न् म्य „

यन्द्रे आल्यव ह'न्द् रोवुस अन्दर ग'जि छम न् सन्धरान
छन्दुरोवनस मोह न्यन्द्रे वुज़ुनस छुम न् मन पच़ान
ज़ांह क'रम नो प्रदिक्षण चान्यन शिवालन मन्दरन „

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

छुसय पथर प्योमुत म्य थर् छम वार् नर्क'कि नार्ची
ध्यान धारण चात्रि म्य आस'म कूंज़ स्वर्गय द्वार्ची
छम ना मो'कलन बात साथा फा'सि छम संसार्ची चात्रि०

श्री पती श्री राम "लक्षमण" निशबो'ध्यन प्यठ करु दया
छुसय दो'खव दा'दय्व बो' चो़ट्मुत सो'ख लभय ना अख दमा
छुख च़ परमानन्द् पानै सत्गुरु परमात्मा „

त्रेयलूकी हन्ज़ रक्षाका'री
जय जय जय रात्रि ब्रा'रिये

त्रिपो'री ईश्वरी निराका'री
सर्व कारण निर्विकारिये
सर्व स्द्धि मूर्ती सर्व अधिका'री जय जय०

गायत्री मो'ख छख मोक्ष अधिका'री
राधा श्री कृष्ण् धा'रिये
गो'र रूप गौरी शंकुर प्यारी „

च़ंड् मुण्ड् दैतन हन्ज़ समहा'री
दंड कमंडल् धा'रिये
रुंड माल ना'लि छय खीर् खंड् हा'री „

कारण ति करनस च़य कहा'री
लारान च़य कुन सा'रिये
पदम् आसुन व्ययि सिंहा सवा'री „

सहस्र मो'ख छख सहस्र नाम् धा'री
जामु सास अलंका'रिये
यलि युथ पज़ि त्यलि त्युथ धा'रि धा'री „

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रक्त् पीत् नील् शीत् सब्ज़ाका'री
गुल अ'नारि व्ययि ज़ं'गारिये
चो'त्र बो'ज़ त्रि नेत्र सर्पाका'री जय जय०

मुकुटस चा'न्जिस मो'ख्त् जा'लारी
सिर्यस अं'दि अं'दि ता'रिये
मथुस चं'द्रम बडि चमका'री „

समिथ ब्रह्मण आयि चोपा'री
नमिथ लगुहोय पा'रिये
पाप शाप कास असि क्षमाका'री „

दूरि प्यठ लारान आयि ननुवा'री
दर्शन् चान्जि अमा'रिये
प्रारान बर् तल् मुच़राव ता'री „

च़रितन चान्यन कन धा'रि धा'रि
मन छुख शूधनायि ला'रिये
तन ना'विथ सैर् व्यचा'री „

केन्ह भाग्यवान ह्यथ पोश् गुलज़ा'री
केन्ह कन्द् नाबद् भा'रिये
केन्चव रंग रंग मिष्ठान चा'री „

अथ् छो'न ब'ति आस ज़ारय पा'री
धन् ध्यार सा'रि असा'रिये
कथ् म्यान्नि बोज़ वो'न्य क्षमाका'रीं „

सारिनय पूज़ायि हन्ज़ तैयारी
वारि वारि पनुन्ये वा'रिये
ब'ति कर् च़रणन सर निसा'री „

व'दि व'दि वो'ज़लि पोश ज़न छिम टा'री
धारि धारि ओश मो'ख्त् हा'रिये
कथ् म्यान्नि बोज़ वो'न्य क्षमाका'री „

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आशि चात्रि ब'ति आस गाशय ब्रारी
कास्तम मोह् अंधुका'रिये
मतु मंदछावतम यमि समसा'री जय जय०

रोशु पा'ठि करतम गोशु गुज़ा'री
पम्पोश लोचन धा'रिये
तोषतम तु पोशतम पोशय वा'री ,,

चिकु चा'वि भ्रमरोवुस लोकुचा'री
मटि खतिम'ति पापनि भा'रिये
नखु लो'चरावतम सो'ख मो'खु हा'री ,,

आ'रत्यन आ'रचर मोचन हा'री
प्रथ घरु छख प्रथ दा'रिये
ध्यान धारनायि चात्रि कम कम नु ता'री ,,

परमानन्द ने नन्दु कोमा'री
'लक्षमण' छु वनान ज़ारिये
धर्मस करतन परम पा'री ,,

कस क्याह् छु ज़ेनुन यमि संसा'री
सा'री गयि हार्य हा'रिये ॥

को'त गयि बब तु मा'जि भा'य वंध तु या'री
अख अकिस तिम नु कां'सि प्रा'रिये
ता'र लजिनु तस यस यलि वा'च वा'री सा'रिय०

यमि देह् पुछि क'र म्य जान निसा'री
भा'रिन प्यठ खा'रि भा'रिये
कुत्रि विज़ि दज़ि पतु चित्लायि ना'री ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कोंच़न गुर्य ह'स्ति रथ़ सवारी
केन्ह न्यथ़ननि त़ नऩ वा'रिये
वुछि वुछि वुछि तिम काल़ शाह्मा'री सा'रिय०

नाम़ रूप़ जंगलस कर्म कुलि बा'री
विगि विगि गयि वुजा'रिये
उतपथ भ्यो'न भ्यो'न उत्पात सा'री ,,

वासनायि व्योल व्ययि ऩवि नो'व खा'री
वोवि बोवि वारंव'रिये
व'वि व'वि लोनुन हरद़ त़ हा'री ,,

जगत़ अरह्टस देह तोल़वा'री
कर्म रज़ नय चा'यें चा'रिये
छ़रि लट़ लट़ छख पोत्र सा'यें सा'री ,,

मनुष्य मोर प्रा'वित दीव हितका'री
यथ मंज़ सर्व अधिकारिये
गछ़ि न रावरुन छु दुर्लभ त़ दुश्वा'री ,,

छ़्यऩ गोमुत पान परम़ सुख दा'री
मटि ह्यथ कर्म दुख भा'रिये
मोह भ्रम़ राज़ आ'सिथ वेचा'री ,,

व्ययि क'च़ मोकलन यमि अंधकारी
सत़ सिर्यकि चमका'रिये
च़लनस न्याय बलनस बेमा'री ,,

योद कां'सि मुच़रन बरत्रन ता'री
अनुग्रह अनुभव धा'रिये
च़ारनस त़ खारनस लगि विच़ा'री ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भक्ति श्रवणन बोज़ि कन धा'र्य धा'री
प्रेम नेत्रव ओ'श हा'रि हा'रिये
साधन गुरुन लगय पादन पा'री सा'रिय०

वनुनस तत्व उपदेश उपका'री
करनस पा'रि पा'रिये
वे इख्तियार यो'द बनि बा इख्तिया'री „

"लक्षमण" परम आनन्द चो़पा'री
साक्षी छु साक्षात का'रिये
पानै पानस करि उद्धारी „

कष्टु कास्तम भगवानु हरे
सन्तुष्टु रोज़तम गरि गरे

भ्रमचे वुनिरे वुनिरोवूस
मोह_ छ़टि अग्नि घटि वति रोवूस
च़यय रोस्त कुस म्य अथुरो'ट करे सन्तुष्टु०

भवु सरु क्रमुन'य रो'टम खोर
ज़ोरावार आ'सिथ गोस कमज़ोर
छांव'रि लो'गमुत छुस बांव'रे „

वेरि वो' लागय शेरि पम्पोश
गदु गदु वा'णीयन थावतम गोश
व'दि व'दि यच़ छम म्यच़ मा हरे „

वैकोन्ठ प्यठु यितु ननुवोरुय
गरुडस खुसिथ त्रा'विथ दोरुय
मो'कलावतम संकटु चि थरे „

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

संकट् मंज़् तस प्रह्लादस
कन थोवथस आ'च्र नादस
ह्रिणा कश्यप अद् मद् उत्रे सन्तुष्ट०

हंग् आख द्रोपदी नंग् रछ्तस
नंग वुछनुक तस सामर्थ कस
रंग रंग आवरण ना'लि तस हुरे „

'लक्षणो' छारुन परमानन्द
च्राच्र युस पोशि अंद् वंद
लो लो करान न्येरि वो'न्जि लोलरे „

——

श्याम् सो'न्दर मो'रली वोलुय
खेलि बना रास् मंडोलुय

काच्_ जुन ज़ान चमकान द्राये
वाच् बंधन याद छु नाये
याच्नाये यच् भ्रिव लोलुय खेलि०

कव् लजि मच्_ छव् जंजालस
लजि् वजि मच्_ मोह्निस ज़ालस
शुरि त् बा'च् ब्यथि मा'जि तय मोलुय „

गंग् ज़ालय छलि वो तनय
कोंग मलिवी ब्ययि च्द्नय
लोल् करोस लो'लि् मंज़ोलुय „

रोशि करि वी पोशन मालय
पोशनूलस डा'लि वी नालय
पाल्वुनि अज् वाद् सोन पोलुय „

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मोर मुकट् धा'रिथ सो'न्दर
अज़ छु तोशान पोशन अंदर
वा'लि गोशन ना'लि ज़ंगोलुय खेलि०

कोंग् चदन् टयो'क तस मथय
वांसरी व्ययि पम्पोश अथय
केशवस कीश रम्बोलुय ,,

राधा अख व्ययि गूरि् कने
आरन'य मंज़ न्यथुय नने
मान आभिमान यिमव ज़ि गोलुय ,,

रास् रस च्यथ मते मुचय
क्र'शि वुने त्रेशि ह्_चय
अछ्_ रच्_न तति मंडोलुय ,,

वोक् स'नय आमाच्_ वोसे
कोई रोये कोई हंसे
वसि मंजय फो'ल अलु ब्योलुय ,,

दीव सो'न्दर् गन्धरभ् आये
दीव सा'री समिथ आए
कतिजि ज़न वेरि येरन ओलुय ,,

ज़नि पत् ज़ो'न सू'त्य सू'त्य नचन
सारिनय मंज़ कुनि छुन् व्यचन
वाजि हंदुय क्रेंख मो'लोलुय ,,

व्यास् नारुद ति अं'दि प'खि रज़िथ
सोर् डलि'मति सु सोज़ वूज़िथ
साज़् सांरग् मृदंग् डोलुय ,,

ऋषि त् मुनि वो'थि म'त्य तपव
लीन् गा'मत्य वीणायि ज़पव
मोह जंगुल यिमव ज़ि ज़ोलुय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

तारि गोमुत तारा मंडल
दीवु कनिकन आमच् छि वदल
हो'ल गंजि मच्_ करिथ गोलुय खेलि०

साध सथज़न वोम्बुर बनिथ
पोशि अम्बरन तल रुद्य सुनिथ
च्रणु कमलन हुंद छुख लोलुय ,,

त्रि कारण पोशु वर्षनस
हर्षनस तथ दर्शनुस
कृष्णु गो'णुन दिवान ज़ोलुय ,,

च्ंदरु मंडलकि लुख प्ययि पथर
शबनम आ'सिथ ज़न गयि पत्थर
कृष्णन ज़न वो'व मो'ख्तु ब्योलुय

'लक्षमणस' यी ओस मनस
गीत वनस ज़नारधनस
परमानन्दुन आवय लोलुय ,,

———

लालो लालो बालु गूपालो
करुयो च्.य कित्यु पोशन मालो

जसुधायि हन्दे जसुधा नन्दो
दीवकी हन्दे परमानन्दो
वन्दुयो दो'न पादन कपालो करुयो०

शाम लटि इखना सों'दर शामो
रगु वन्दुयो रघुनन्दन रामो
सखियन हन्दे हा रक्षपालो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वनु वनु फेरय वुज्ञि दिनि ने'रय
वुज्ञि दिथ दोरे दारे फेरय
च़्य वन च़्य भ्य'न कहियो सम्भालो करयो।

दा'सि कवु कोरथस हा उदासी
हरु भरु च़्य कित्य हरु की खा'सी
वन ब्रजवासी छुय म्योन सालो ,,

आदन बाजो कन थाव नादन
यितु दितु दर्शुन छम चा'ञ लादन
स्यधुन साधुन ह_न्दि कृपालो ,,

यन्द्रे च़ूर आम ला'गिथ सन तय
ज़ा'गिथ न्यूहम शिलुवासन तय
त्या'गिथ सो'न तय मो'ख्तय मालो ,,

ह्यसु व्यसरा'वस मायायि मसुन'य
रसुह रसुह रसु वसु विषय रसुन'य
छुम मटि खो'तमुत मोह जंझालो ,,

माया तीतो छ़ायि मतु रोज़तम
च़राच़र छुख आ'रच़र वोज़तम
कोन्छ़ा सोजतम दीनु दयालो ,,

च़्यथ आकाशस भास्कर म्य भास्तम
ज़ूनि प्रकाशुक सिर्यु ज़न आस्तम
अनि घटु कास्तम रटुथो नालो ,,

परमानन्दो नन्द आनन्दो
"लक्षमण जुव" ने श्री रामचन्दो
सीता सू'त्य ह्यथ ना'ली नालो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वथिवी सखियव सखरिवी वन
कृष्ण् दर्शुन करवी लोलो
स्वर मुरली थववी कन कृष्ण्०

शाम् नीरिथ गोम सुबह्न
दुब् वां'लिज छम फेरन
हुब्ब् वन्द्सय मो'ञ्य पादन ,,

मो'ख ढयूंठम पम्पोश ज़न
रोश न्यूनम होश बो'म्बरन
ना'लि पोशमाल् वा'लि गोशन ,,

शेरि मुकट क्या छु शूभन
घटि मंज़ा गाश ज़ान तारन
सास भासकर् तीज़ा भासन ,,

मोर् ताज दिथ राज़ कोरथ्न
बा'जि लागन त्रन भवनन
दीब भ्यो'य भ्यो'न छिस सीवन ,,

म'ति म'ति छिस पत् लारन
सतुवा'दी साध सन्त जान
प'छि़ पनने सु प्रावनावन ,,

शान् करिनय पान् पटलन
यति घटन छु मो'ल मुश्कन
अश्क् पेचा'ञी वो'लनम मन ,,

मन जोरमुत कनि मुंदरन
सतुऋषि तति रूदि गोशन
वुछत् वुज़मल् क्याह छिंद्रन ,,

पीत् आवरण वो'ल शामन
श्याम् लटि प्यव सिर्यि बालन
छायि लगुसय पो'त छायन ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

प्रभ हृदयस कोस्तव मन
नभ्कुय सिर्यि चमकन
गाश तमि कुय आकाशन कृष्ण्०

कोंगु चंन्दनु कोमल अंगन
रंगु र'विस मलु हन हन
ही बोम्बरस लागु तनि तन ,,

दोधु च्.ूरस लदु क्या सन
शो'द्ध भावनायि हंदि व्यंज़न
मदु च्.ूरस करु अर्पण ,,

भाग्य वो'ड क्या छु बिंदराबन
यन्द्र लूकस युस छु गेलन
मालु मो'त म्योन तति खेलन ,,

बुम्बु हा'रिंजि लो'दनम गण
रूमु रूमु छिम गुम वुज़न
छुम सीनु शो'भ कानु कानन ,,

पूतनायि दामु दिच़नस तन
कामु दीवस गयि शरण
सोदाम द्राव दीह् जामन ,,

नन्दुलाल वरि गोवरधन
गोकलु क्यन करि प्रसन्न
परमानन्द प्रावि "लक्ष्मण" ,,

---

*परमु धामुक म्य चावतम दामो
सत्गुरु मोक्षदायकु रामो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

त्रेताप् कामनायि आमुतावुय
व्यसरावान छुम भक्ति भावुय
फिरवान त्रिशणा शहर् गामो सतगुरु०

गा'लिथ काम क्रूध ज़ालिथ तम
सार द्राव पथ कुन कुनुय सूहम
अनुग्रह चाञि सू'त्य गाश आमो "

ज़िन्द् युस मरि तस क्याह् करि काल
रोज़्ये'स नु गरि गरि मरनचि ज़ाल
अमृत संज़ीव'नि चाव दामो "

मन तु प्राण युस करि च़य अर्पण
सुय वुछि सन्मुख नारायण
इथु पा'ठ्य लक्षमणन वुछ रामो "

तारि भवसागरस चोनुय नाव
नाव तरि त्यलि यलि गलि वर्ज़् वाव
फटि नु तु रोज़नम पतु पामो "

सूरम श्रम च़य पुशुरुम पान
निर्वाणुकुय दिम ज्ञान विज्ञान
निर्मलु निष्कलु निष्कामो "

मूह तू'रि सू'त्य छुस बर् गोमुत
संताप तापु ज़रु ज़रु प्योमुत
होल च़लि चाञि यिनु लोल आमो "

राम लक्षमण च़य वन्दुयो पान
परमानन्द आनन्द छु प्रावान
दामु चावतम योगु "बलु रामो" "

*यह भजन लक्षमण जी राज़दान "बुलबुल" नागामी के शिष्य बलराम जी का है।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कृष्ण जी राज़दान

कृष्ण राज़दान की भक्ति कविता मधुरता का एक विशाल सागर है। इस कविता में भावना की गहराई भी है और अनुभव की बिजली भी। वस्तुत: राज़दान साहिब शिव भक्त है, परन्तु जगत जननी जगत माता, श्री कृष्ण और श्रीराम से भी दूर नहीं हैं। आपकी कविका और भजनों में घुंघरू की झंकार भी है और आत्मज्ञान की बुलन्दी भी। आपने जिस विषय पर लेखनी उठाई, उसमें अपने जौहर दिखाए। लीला के मैदान में तो परमानन्द और कृष्ण राज़दान के बाद कोई भो ऐसा व्यक्ति दृष्टि में नहीं आता, जो इनकी तुलना करे या आगे बढ़े। आप के भजन भारत की भक्ति रचनाओं के श्रेष्ठतम नमूनों के साथ रखे जा सकते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए। राज़दान साहिब के सामने अन्य लीला कहने वाले भक्त कवि बस बौने दीख पड़ते है। आपकी कविता संगीतमय है।

2. राज़दान साहिब को जो भरपूर ज्ञान काश्मीरी भाषा का है, उसमें कोई भी दूसरा कवि आपका मुकाबला नहीं कर सकता। सच तो यह है, कि राज़दान साहिब न सिर्फ कविता बल्कि भाषा के भी जादूगर हैं। उनके सामने भाषा गीली मिट्टी की तरह है, जिसे वह स्वेच्छा से किसी भी सांचे में ढाल सकते हैं।

3. कवि होने के साथ साथ राज़दान साहिब महान साधक भी थे। "शिव लग्न" आपका महान काव्य है।

4. महाराजा परताप सिंहजी राज़दान साहिब के बड़े भक्त थे। दरबारमू के समय महाराजा साहिब आपके दर्शन हेतु और उनसे धर्म के मामलों में परामर्श के लिए रात भर के लिए

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वनपुह (अनन्तनाग ज़िला) गांव में पड़ाव डालते थे। लेकिन राज़दान साहिब कभी भी याचना के लिए दरबार में नहीं गये।

5. राज़दान साहिब का जन्म 1850 ई॰ में वनपुह गांव में हुआ था और वहीं पर आप 1926 ई॰ में अन्तर्ध्यान हो गये।

अज़ सा'त्र विन्ती सत्गुरु साधय,
कुनिय नादय बोज़

रातस गंज़र्यम् नभचे तारय
कृष्ण च़ंद्रम् इत् प्रारै कूत
श्याम् रूप् सुबह् फो'ल इन् डलि वादै कुनि॰

विज्ञान् रव् च़ूरिमि पद्म पादै
च़यथ बंबूर सोन व्यूर ह्यथ द्राव
गीत ग्यवि चात्रि सत्संग् संवादै "

मायातीत् अन्त् रोस्त अनादै
कुस अखा चा'त्रिस अन्तस वोत
हे अगम अपार् आदिकि आदै "

मंज़ चात्रि माया सागर उत्तपत
छिय गछान ब्रह्मांड बुदबुद वत
अवतार कारण देव अगाधै "

च़यथ अबलक् चो'ल को'त पक् प्यादै
स्यज़ि वति को'छि क्यथ रून पकनाव
छुस पथर प्योमुत करूम इस्तादै "

उन्मत भूता छुय ज़गत गोमत
तथ मंज़ प्योमुत छुस बो' अंज़ान
सु विचारस वात् चात्रि प्रसादै "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पानय सोरुय छुक उपदावान
कलु गिलनावान बुति छुस कांह
पोंत ह्यथ इतु भ्रमके अपराधै कुनि०

मेघवर्णु रछतु व्यवहारचि त्रटि मंज़
ग्रहस्थ घटि मंज़ नोंन हाव गाश
अमृत चाव प्रेमु शब्दु अह्लादै ,,

म्यान्नि भक्ति भावनायि हन्दि प्रह्लादै
सर्व आत्म भावु समदृष्ट प्राव
सुख दुख सम जान मंज़ कमु ज़्यादै

बुद्धियोग होश गछ़ि ज़ीवु भाव मशुनुय
पशुनुय अदु च़लि दों'न आलमन
इथि मशनकि नतु यादकि यादै ,,

अनुग्रह चान्नि सू'त्य भोग ब्रोंठ इयतन
'कृष्णस' प्यतन भोगन्नि तिम
एकरस ह्यस दिस तालकि स्वादै ,,

कृपा करतमु हरी हरै
वु क्या करै ज़ोर

लूसित प्योमुत छुस व्रुज'रे
खों'तमुत छुम बों'ड वोर
यथ पंच़ालस कितु पा'ठि तरै वु क्या०

आरह छु वज़ान वों'गनि दरै
वारह छु करान शोर
छ़ोपु छु करान समन्दुरै ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

व'नि व'नि यच़ गोस च'खि अंदरै
ननुन ज़ान छुस चोर
छो'पि हुंद सो'ख दिम योगीश्वरै बु क्या०

पखु छम जरिमच़ छुम ज़रु ज़ारै
बन्योमुत छुस मोर
हीन छुस खोरन हुंदि आर'च़रै ,,

सन्मुख रोज़तं श्यामु सों'दुरै
प्रभात ह्यु व चो़पोर
युथ नु पम्पोशस दोह् लगि दरै ,,

आभासु चान्नि सू'त्त गा'मति छि खरै
अन्त: करण चो़र
म्य भास प्रकाश रूप ईश्वरै ,,

त्रिगुण उल्लंघित छुख शंकरै
शक्तियि चान्नि छुस लोर
ओं'गनिस दो'गुनाव कुनी वरै ,,

चो़रोंग़ ज़न्मु मु फिरनाव घरु घरै
यि बा'जिगार छा सोर
दुवार मु डाल प्यठ खार दरै ,,

अन्दर चा़'निथ गन्यानुकि घरै
हावुम च़ूरिम पोर
तथ मंज रूज़िथ आनन्द भरै ,,

'कृष्णस' मु'च़राव भावुकि बरै
कुनी वरै तोर
युथ लरि ह्यथ च़यय बसि अमरै ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भूलु वालु बालकन सू'त्य खेलनावतम
बालक अवस्था प्रावुनावतम
ज़ान करनावतम तु पान परज़_नावतम
सो'घ्य वाञ्यिन पो'ठि ह्यावतम रू'प सो'घ्य०

कठिने भवसरु छांठ वायनावतम
मोह पोञ्य वोतुम हृटिस'य ताम
लटिसुय वृषभस थप करनावतम ,,

थज़रै प्यठु अख नज़राह त्रावतम
शेशरमु नागु म्य थावतम नेब
वनि इतु अञ्जिरकि सञ्जिरु मु रावतम ,,

ब्रह्मण जन्म दिथ मतु मन्दुछावतम
नभ प्यठु वो'न मतु दावतम दब
अमरनाथ अमर बनावतम ,,

दासन हुन्द दासा गन्ज़'रावतम
मतु मश'रावतम पननी ज़ान
यति छुख पानै तो'त वातुनावतम ,,

अज़पा ज़पु यज्ञ ज्यू'त्य प्रज़ालावतम
होदुशीशु ज़न मो'च़रावतम म्य
ही महेशु छतिकीशु मतु दशुरातम ,,

सतु चित्तानन्द अमृत चावतम
नित्य भासनावतम सोऽहमसू
ॐ शिवु शम्भो शब्द शमुरावतमु ,,

मोह मायायि सू'त्य मतु तम्बलावतम
सतची कथ पावुनावतम याद
च़यतकुय च़ेनुन न्यथ च़ेनुनावतम ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मन् नागस प्रेमपान वुज़_नावतम
सुलि वुज़_नावतम त् हावतम रूफ
मंज़ प्रभातस सातस म् सावतम सोध्य०

सत् के निर्णय पय पकुनावतम
दय् पनने नय् हावतम वथ
नाव छूम 'कृष्ण' शिव भाव बड़_रावतम ,,

शिव लीला

च़रणन् हन्दि ध्यान सो'रन् यमि भवसर् तर् बो
हे च़राच़र् गंगा धर् शिव् शंकर शम्भो

सर्वव्यापक संसार सार् धारणायि धारह् चोन ध्यान
परमआनन्द शो'भ च़रणन चान्यन वन्दुयो पान
नम् च़य कुन दम् दम् रिन्द् पा'ठय ज़िन्द् मर् बो' हे०

हे अविनाशि च़यथ प्रकाश् साञ्य शुर्य बाशि वार्ह् बोज़
गाशि र्स्त्यन अज्ञि घटि मन्ज़ सिर्य प्रकाश सुबह सोज़
परमेश्वर् कर च़_ पूरिर क्यिथ् दूरिर ज़ार् बो' ,,

वासनाये कायाये मायाये मन्ज़ बो' गो'स
देह गालवुन जानावारा काल् ज़ालस मंज़ बो' प्योस
हे दयावान् बडि भगवान् ज़गतस क्याह् कर् बो' ,,

विष्ण ब्रह्मा छुक च़ पानय छुक च़_ दयालू बो'ड दय
त्रन भवनन हन्दि सामियो सोन भविनय जय जय
वार्ह् निश्चय लब् त्यलि यलि शिव शास्त्र पर् बो' ,,

वा'णी वारह् वन्नावय च़ा'रि च़ा'रि पोश लागयो
ही त् मसवल व्यनह्_ मादल जाफ़्रि पोश छावयो
म्यानि मन मान् छुक च़ पानय चाञ्नि आसर्'तर् बो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कल छम चा'न्य वनन छुस सा'री रूग कास्तम
कलु वन्दुयो कलु मालय कलुसुय प्यठ आस्तम
वो'ठ ला'यिथ छांठ वा'इथ अकि नुतु अकि तरु बो हे०

वीरु म्याञ्यो हा समीरो वीर स्वस्थ हा वीरो
भैरवनाथो सीर बाज्यो महाराजो हा वज़ीरो
साज़ वायुयो बमु ज़ीरो सेतारह तार जरुयो ,,

चश्मह वन्दुयो भूलह बालो पादन दिमुयो मोठुय
अर्पण गछ़ भक्त च़यय कुन पादन दिथि मीठुय
क्या वनय बो' क्या करु बो' हरु हरु हरु परुयो ,,

हंसासनु गरुडासनु वृषभासनु वनु क्याह
हनि हनि मंज़ छुक पानै फेरवनि मनु वनु क्याह
यी अरमान छुम रात द्यन च़यय सू'त्यन भरु बो ,,

नरकु मन्ज़ै मो'कलावतमु गथ पनुनी हावतस
कष्टु संकटु भस्मादरह_ हरु हरु हरु वनुनावतम
हृदयस मंज़ हे कीवलु ध्यान चोनुय दरु बो ,,

श्री नारायण छुक च़ पानय सारिन'य ज़ीवन मंज़
परमात्मा शो'द्ध ने'रमलु सारिन'य दीवन मंज़
सरु को'रम जगत ईश्वर चा'न्य स्मृण फिरु बो ,,

प्रथु प्रभातनु सुलि वो'थ हा चा'न्य पूज़ा करुहा
कन दा'रिथ मन ला'गिथ चा'न्य लीला परुहा
नालि छ़'नुहैय लालु मालय व्यथि मो'ख्तुय लरु बो ,,

युथ स्वरुह्यथ युथ म्य मेल्यम मन तय प्राण च़यय सू'त्य
नतु क्या अथ भवुसरसुय आय का'त्याह गई का'त्य
मन मेलनु लय गछ़_हा नाफहमुन खरु बो' ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हे महाकालु कालुनि ज़ालु चान्ि नामु सू'त्य च़लनमु
वासनायन संकल्पन हन्दी मूलुय गलनम
ध्यान नय स्वरु का'ल्य कालुय थरि पोश ज़न हरु बो

सासु सिर्य खो'तु तीज़ा चोनुय गज़ च़म छ़य च़य ना'लि
चन्द्रमु छुय डयकि प्यठ्य किञ्ा घटु पछु निश खा'लि
लोलु चान्ये शोलु वु़न्य ज़न ज़ून लगु दरु बो

दर्शनु के शबनमु सू'त्य फो'लह हा ज़न पम्पोश
दर्शनु चान्ि अमृत के वर्शणु ययि असि बोश
फलु रो'सतिस अहंकारकिस कुलिस'य वालु अरु बो

अछ़ मों'च़रनी चोन दोह तय अछ वटनी चा'न्य राथ
आर इयनय विकासु लोलु छुक च़ भोलानाथ
साफ तन नय चा'न्य डेंशन ही ज़न गछ़ु वरु बो

परमात्मनु नीलकंटा हटि वासुक च़यय छुय
अर्पण गछ़ु च़रणन दौन सू'त्य बा'ज ह्मथ बो'य
यथ जाये पाद थावक सो'नु कनि अछ जरु बो

गछ़ि करुणायु चा़न्य सू'त्यन सारिनुय पापन नाश
धर्मचु सम्पतायु सू'त्य जोनुह शोहरत अविनाश
सन्तोषि सू'त्य क्रूध गा'लिथ मोह राज़स फरु बो

हे सदाशिवु 'कृष्णस' च़ीतनाइ किन्य भास्तम
प्राकु ज़न्म'कि खो'टि कर्मु़य कास्तम खो'श आस्तम
सम्सारा दो'ख भो'रमुत यति क्यिथ पा'ठय दरु बो

—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

स्मरणि चाञि पाप सा'री हा'री
हारै पर्वतुचि हा'रिये ।

संकट कटु छक हे मुकट धारी
तेज़ चांञ्गि प्रज़लनु आव संसार
सिंहआसन च़यय छय सवा'री हारै०

गौरी नावस लगोय पा'यं पा'री
चाव प्रेम दोध् च़डवा'रिये
ज़ाञनख अभिनवगुप्त आचा'री ,,

न'टि लछलि आकाशन ग्रटन ता'री
नो'न नीरित वो'न महिमा चोन
परम शक्त माञिनक शंकाराचारी ,,

शिव शक्ति रूप ज़ा'नित चो'पारी
गुलि गंडित नन्य वो'न्य या'री म्य कर
ह्यथ नखस नियनक मंज़ कष्टुवा'री ,,

नित्य सुमेरूस ताञ ला'यं ला'री
कति आ'स वातुनचि शक्त ओ'स सख्त
पर्वतु प्रदक्षिणु पाप निवारी ,,

शारिका नाव छुय भाव छुम चोनुय
नो'व न'वराव त्राव प्रोनुय याद
हाल भाव वाल पापन हंदि वा'री ,,

चक्रेश्वरसय छु जय जय कारय
सायं वुय र्टोट दरबारय सुय
सिद्ध पीठु प्यठ गयि सिद्ध ह्यत सा'री ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आद्य शक्त पान् छक सर्व अधिका'री
पूज़ा करुवनि सा'रिय च़यय
साध संत वैरा'गि जोगि ब्रह्मचा'री होरे॰

चान्ति सू'त्य सा'र्य देव ज़ीव व्यवहा'री
चान्ति सू'त्य उल्लसन् आव संसार
चान्ति सू'त्य सा'ञी छय दुनिया दा'री "

अष्टादश भुज़वन सू'त्य पर्वत
हितकार पुछि़ छ़क बत् वा'गरान
सर्व व्यापक छ़क सर्व उपका'री "

कर्मलेखा छक पान् परमशक्ति
कर्मन सान्यन पनञिय भक्ति लेख
क्रत् कर्य फल छक दिवव'नि सा'री "

अजपा गायत्री ज़पहोथ अन्दुरी
श्री सों'न्दरी योग् न्यन्दरे मंज़
मन् प्राण ध्यान ज्ञान् विच़ा'री "

परमातम रूप छक जागतचि साक्षी
जितेन्द्रिया इन्द्राक्षी छक
प्राण् शक्ति सू'त्य छक पान् व्यवहा'री "

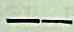
पान् छ़क योगी पानै ज्ञानी
वा'णी रूप भवानी छ़क
बो'ज़ सू'त्य ह्यस् रटनचि विस्ता'री "

च़ामर् लाग्'होय पोश च़ा'र्य च़ा'री
चण्डीं च़य छ़क चेतन स्परूप
चित शक्त छ़क च़ेनव'ञ च़ोपा'री "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मोह ज़ाल मंज़ु नेरनुक उपाया
कर राज़ु हंसुन साया त्राव
हंस नादु सू'त्य तार यमि हंसु द्वा'री हारै०

हीमाल पर्वत'ञ राज़ु कुमा'री
च़रणन लगोय पा'र्य पा'रिये
'कृष्णञ' भक्ति बोज़ कन धा'र्य धा'री ,,



छुक मो'क्षदाता पानु च़'य केवल सतुक विच़ार दिम
यी गछि़ म्य आसुन ती म्य दिम योगुक तु ज्ञानुक सार दिम

सन्मुख इतम सोरूय नितम
द्य ुतमुत यि छुई फीरित ह्,यतमु
भक्ती दितम भक्ती दितम
भक्ती हुन्दुय दरबार दिम यी०

मस्ती होशस ह्यथ मंगय
मतु नच़नावतम दिथ भंगय
भक्ति कोंगय जामय रंगय
सुय रंगनुक विस्तार दिम ,,

मोहकिस जिनिस दज़ुन स्वभाव
च़'य ज्ञान रूपी अग्न हाव
भक्ति हंज़ुय रेह प्रज़लाव
अज्ञान शोरुस नार दिम ,,

ममतायि लंका ज़ालतम
भावुक विभीषण पालतम
श्रीरामु मोह मदु गालतम
यथ भवसरस वो'न्य तार दिम ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शक्ति तु मुक्ति शूभि च़यय
मन क्याज़ि तथ प्यठ लोभि म्यय
भक्ति दितम भक्ति दितम
भक्ति म्य वारम्बार दिम

छुक भेद रोस्त शिव कृष्ण राम
आसन करिथ प्यठ परमुदाम
प्रारान छुसै च़यय निश इनुस
जल्दी म्य वोञ्न आंकार दिम

मिथ्या पदार्थ क्याह् मंगय
तिम भोग्य वोञ्न आसय तंगय
शांत गछ़ अदु सू'त्य सत संगय
ईछ़ि भख्चि़ हुन्द आचा़र दिम

वां'सा गयम मिथ्या वनन
क्रय करन रोस्त छा केंह् बनन
छुस लोभ फल पेह्नस अनन
वोञ्न ग्रट चिय अनवार दिम

करनावि तारस च़यय सो'रित
तारूम म्य तारस थप कारिथ
पारस बनावुम शस्त्रुस
नारस करिथ गुलज़ार दिम

छुय क्याह् म्य चा़रुन छो'त क्रुहुन
छुम अर'सरव रो'स्तुय बिहुन
शो'मरिथ म्य इन्द्रय द्वार दिम

काया छि म्याञ्नी द्वारिका
च़य छुक 'कृष्ण' परमात्मा
मंगन सुदामा छुय भिक्षा
सर्व ऐश्वरी यकबार दिम

—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ब्यल तय मादल ब्यनु गुलाब पम्पोशु दस्त'य
पूज़ायि लागस परमु शिवस शिवुनाथस्ता'य

जटा मुकटा प्यठ गंगा वसान छस ता'य
देवी तु देवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस्त बस्ता'य
भक्ति भावुक जय जय कार आ'सिन तसता'य पूज़ायि०

दया सागरु लोलु विज़ियायि कोरनसु मस्ता'य
हा पोशुमते होश डलिमति थव ध्यान ह्यस ता'य
असार संसार छ़लुरावान सु रोज़ि कसता'य ,,

पंपोश पादव सू'त्य इतम अस्ता'य अस्ता'य
च़रणन वु वन्दै ज़ुव जान ह्यथ वां'लिज वस्ता'य
रागु चानि सू'त्यन पोत्र वुज़्यम नागुरादस तय ,,

पा'यें पा'यें लगोय ना शिव शंकर शिवु नावसता'य
दर्शन चान्युक छुम यच़ लोक ब्ययि हावस ता'य
टोठतम सदाशिव ज़गतईश्वर छुस बेकसता'य ,,

अमरनाथस नीलुकंठस कलु वदंस ता'य
विच़ार सू'त्यन 'कृष्णस' प्यठ आर यी नसता'य
यछ़ि पछ़ि सू'त्यन गछ़ि अर्पण शिव भावस ता'य ,,

वन्द को'रनस वु बाशे ज़गत'च्चि वालु वाशे
मो'कुलय चात्रि आशे शिव नाथु अविनाशे

भावु सू'त्यन इमयो
हरमुखु व'नि दिमुयो
मोह घटि हंदि गाशे शिवु०

कैलास कोह छ़ारत
धारणायि ध्यान धारत
सदु चित्त आकाशे ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

जपु शबनमु धारे
पपि ब्योल तपु वारे
कांह फो'ल गछ़ि न हाशे शिव०

शंभु नाथु साधय
आवाहनु नादै
सान्नि बोज़ शुर्य भाषे ,,

तार दिमु मोह वावस
मायायि द'रियावस
कडु दुख नावि पाशे ,,

संसारके सरय बो
हरु नाव सू'त्थ तरै बो
कास संकट विनाशे ,,

"कृष्णस" आंप चा'न्नी
बख्शुस पाप प्रानी
शापन कर च़_ नाशे ,,

———

मोख्तु कनि तारख छिस तापदानस
छम ईशानस पोशि पूज़ा ।

आकाशि पोशु वर्षुण हनि हनि छुस
रथवातु कनि छुस सिर्यि देवता छम०
सायबानु वन्योमुत छुस आसमानस

ड्यकस प्यठ चंद्रमु प्रज़लान लाल छुस
वावु लोकपाल छुस करान गजिगाह
ब्रह्मा विष्ण छिस हे'थ ज़ांपानस ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

चि़तर गुप्त ताह् छुस करान सामानस
यन्द्राज़ मोरुछल बरदार छुस
धर्मराज़ थोवमुत प्यठ धर्मदानस छम॰

सतु ऋषि सथ ज़ल ह_यथ मंज बानस
अतुर तु काफूर छकान छिस
सतवय गृह्'दि सू'ति छिस ह_यथ विमानस ,,

गंगा सागर ह_यथ छस गंगा
वुदु ज़ालान छस दूपु माला
लक्षमी मीठुय छस दिवान दामानस ,,

नावद आपरान महा विद्या छस
करान जमना छस वाव'जि वाव
दोधु मा'जि सरस्वती सू'ति छस पानस

ज़ंगि थाल अनुनस पानु छस स्यधा
व्यूग लेखान छस कर्म_ लेखा
आत्मुरूप वसुवुन मनुकिस थानस ,,

वासुक तु शीशुनाग छीरु बरदार छिस
रतन्न हुंद मोख्तुहार छुस ना'लि
घटु चज़ि तु गाश आव सा'रिसय जहांनस ,,

कुवेरजी त वरुण छिस खर्चबरदारयु
सोरइ स्वर्गद्वारुय सू'ति सू'ति ह्यथ
रथ छिख गंडिम'ति मंज़ मा'दानस ,,

डुयकस प्यठ चंदन टयो'क छुस तेज़ुवानस
वुथिस प्यठ छुस करोर सियु'क तीज़
छस दया गुलि गंडिथ तस दयावानस ,,

अर्घ कर मनस तु पोश कर प्राणस
"कृष्णु" पूज़ायि लाग सन्निधानस
ज़ाली पाफ गाली अगन्यानस ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ब्रोंठ प्योम तुलमुल मंज़ु मंज़ गोम
कन्न'य जय मुकन्द् जय मुकन्द् गोम

न्यथ सतु संगु सू'त्य मन म्योन न्यूथ
कतकु पोशु रंग सोस्त मन म्योन न्यूथ
कोमल अंग सोस्त छुख ग्यशोम कन्न'य०

ग'जि म्य दुर्गंत च़'जि म्य ह्रान
तव प्यठ द्रास बो बो'ड भाग्यवान
राज़ ह्यसु सायि चोन यनु प्यठ प्योम ,,

चाञि पूरणायि सू'त्य छो'च़ुय म्य चो'ल
तृप्ति मीलिथ भोग लूभ मोह् गो'ल
निष्कामु कामदीनु दामु दोध म्य चोम ,,

मथुरायि मंज कथ वसुनुय छुम
लूकु हन्ज़ि ज़्यवि प्यठ खसनुय छुम
व्रज गामस मंज़ बसुन'य प्योम ,,

सू'त्य सूत्य गूरि बालकन नेरना
कामदीनु व'छ़ि रछनी फेरना
वुल्टु शहरस मंज़ छम को'सु का'म ,,

भक्ति भावनायि हन्ज़ थ'नि ख्यमना
भावु थ'नि तलु कुय दो'ध चमना
शहरु मंज़ प्रेमु दो'ध चोम ओम ज़ोम ,,

म्याञि श्रधायि को'वज़ायि ह्राव मुख
राज़स प्रा'रि प्रा'रि लोगमुत छु दोख
कामु क्रोध कमसु रूप मन करतु मोम ,,

त्रन क्रीरि गृहदय्न ल'जिमच़ छि ठो'ल
प'ञ्चीमिस नविमिस करतु निर्मल
"कृष्णस" बोज़ प्यठ थो'द तुलतु बोम ,,

—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भयु रोस थव तम ज़यि सानो
दयि रो'टमय चोन दामानो

तापु मन्ज़ि को'त गछ़ अनज़ानै
ब्रोंठु छुम ज़्यूठ स्यकि मा'दानुय
न्यथ ननि' संदे सायबानो दयि०

मंज़ कण्डिनयु प्योस कम्ज़ोरुय
पतु कनि ह्यम छुस ननु वोरुय
अर्ज़न दीवने रथुबानो ,,

साध सन्त गयि पथ कुन म्य त्रा'विथ
ह्यसु पखव'य पान वुफु ना'विथ
ओ'न तु रो'न छुसु करान मानु मानो ,,

नाशि र'स्ति छम चा'न्य आशा
अ'निसुय अनि घटि मंज़ गाशा
अ'निसुय क्युत लदतु व्यमानो ,,

मतु वुछतु म्या'न्निस कर्मस कुन
धर्मस ब्रह्मणस छुय ह्यु्न पुण
मो'कला'विथ निन चु भगवानो ,,

धर्मु दानु रोस्त छुस कर्म ह्यु्नुय
ब्रह्म ज्ञा'नी रोस्त छुस दूशुलद ख्यूनुय
यिथु गो'ण छुस चु़य वर मंगानो ,,

सम्सारस मंज़ छुस बु लाचार
ब्रोंठ छिम वा'ति म'ति कम कम कार
वारु थावतम अमि यमि सानो ,,

आ'दीनन अवतार धा'रिथ
तारि गा'मत्यन भवु सरु ता'रिथ
"कृष्णस" ति तारि हा दयावानो ,,

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वो'थू न्यन्द्रे वालु गूपालो
शामु लालो गाश हो आव

अ'सि हुशियार रूदि रा'ती रातस
शाम प्यठु प्रभातस ताञ
हे मूक्षदाता प्रभातु कालो शामु०

लोलु चाञ्नो सा'नि अशुची धारा
वा'च़ तारा मंडलस तान्यु
ह्यथ छु च़न्द्रम अमृतु प्यालो ,,

सुलि वो'थ्य पोश च़टि पोशु थरिनुय
घरु वातु नाविु छ़रिन'य क्यथ
कुरि च़य किच़_ पोशन मालो ,,

गूपीयी द्रायि जमनायि श्रानुस
वो'जि मच़_ कृष्णु ध्यानसु मंज़
योर द्रायि ओरु आयि कमि हालो ,,

लूक वुज़ना'वि सिर्यंनु सा'री
आव रथु सवा'री ह_यथ
सा'रस नेर त्रिज़गत पालो ,,

क्याह् करव अ'सि न्यचिव कोरि वा'लि
ब'डि नावदार खा'ली दस्त
च्यन छि गुज़रान कमि कशालो ,,

क्याह् करव अ'सि छि कर्महीन सा'री
यच्छ़ि दुनियादा'री मंज़ ,,
अढु खर्चं तु बो'ड अयालो

क्याह् करव अ'सि छि चा'रो फियेरी
क्याह् पकान नादा'री मंज़ ,,
छ़रि अथु हो'छि कथु मूर्खं चालो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ह्यन च़लि हे असि मान बडिहे
कर्म धर्म दान शूभि हे
लद तु अन्नु धनु दीनु दयालो शामु०

यिनु मंदछनु यीइ प्रोन नावय
दा'दि लदुनय वावय कास
करतु अनुग्रह करतु कृपालो ”

क्याह् करव अ'सि वन्धन तु वायन
मन्दछन छि ह्यमसायन मंज़
सा'न्य मुोख थावतक सो'ख ह्यलो ”

हे मोक्षदातु प्रभातु कालो
मोह् न्यन्द्रे मंज़ वुज़ुनाव
"कृष्णस" मंज़ च़यत शिवालो ”

आवय नन्दलाल बिन्दराबन
सू'त्य गूपियन गिन्दु ने

टा'ठ राधा छस क्रेशन
तस छु आमुत वुछने
मथुरायि त्रा'विथ र'रूमण सू'त्य०

सञ्जारा छु वृदावन
कामदीनु लजि खसुने
पतु पतु छुख मनमोहन ”

शामु रूपु छस ज़ोतन तन
कामदीन आव रछ्ने
व्रजगामु द्राव कामदीव ज़ान ”

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

किसि प्यठ छुस गोवर्धन
यन्द्राजु आव शरणय
अदु खो'श गोस मधुसूधन सू'त्य०

पूतानायि दो'प दो'ध बु चावन
ज़हर बबु लजि भरने
अकि दामु गयि अथु हावन ”

का'लि नाग ओस ज़हर हारुन
तस ति त्यठ लो'ग नच़ने
बालु कृष्णा छ़ालु मारन ”

गूरि' वायि द्रायि पू'रि त्रावन
जमुनायि तन नावने
जाम निथ छुख पामु थावन ”

राधकायि हुंद आव ब्रह्मण
मुख्त मालु मो'ल करुने
मुख्तु कुलि वुछि वुछि छु मन्दुछन ”

कै'लास आव शंकरशन
रासु मण्डुल वुछिने
कृष्ण ढयूंठुन तु गव हर्षगण ”

निर्गुण सुन्द वुछ सतोगुण
जगतस आव रछने ”
सत्यु देवु सतु नारायण

परमात्मा छु परिपूर्ण
कृष्ण तस लो'ग वनुनें ”
विगत्रानु वानु योगी जन

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

क्रुष्णु नावस छि का'त्याह् गो'ण
जीव भाव लो'ग ह्‌रने
पा'नि पानस प्रज़ुनावन सू'त्य०

डा'लि म'ति असि व्यवहारन
असि लो'ग ह्_यसु फिरने
आवदारन सुय छु तारन „

शोभ कार क'रि शूभिदारन
भक्ति भाव लो'ग घनुने
वेष्णु रूपु क्रुष्णु अवतारन „

क्रुष्णु क्रुष्णय को'र 'क्रुष्णन'
क्रुष्णु नाव लो'ग सो'रने
क्रुष्ण टोठ्योस "क्रुष्ण" अर्पण „

———

मुरली शब्दा असि गव कनन
वननु छि राधा क्रुष्ण आव

जसुधा छु नन्दु गूरिस वननु
जगत यस ज़ाव सुय असि ज़ाव
आ'स मुच़रोवमस तु आश्चर्य छु ननन वनुन०

यिम गो'ण खटिम'ति अ'सि निर्गुणन
तिम ह्यथ अन्दर न्यबर द्राव
प्रकट क'रि श्री क्रुष्णुन ज़्यनन „

उदव जियस छि गूपी वननु
च़ हो'ख गण्यान वनुन त्राव
भक्ती सू'त्य छय मुख्ती बऩन „

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

छुकय च़_ आत्मा ईकय वनन
सुय गोख च़_ अख युक्ती ह्राव
नतु छुख अशख्त ज़ीवा ननुन वनुन०

गोवर्धन तुल निरंज़ुनन
प्यठ किसि यथु पनु बर्गस वाव
युथुय नाव अ'सि छिय मनु वाजि खनुन ,,

भक्ती अमि सं_ज़ा क'र अर्ज़ुनन
सुभद्राह् निथ ति बो'ज़वान द्राव
युस सू वरि तस पापन पुण्य बनन ,,

द्रोपदी क्या को'र दर्योधुनन
च़्यतस यान्ि प्योस अख कृष्णु नाव
अम्बर अम्बर गयस वरदुनन ,,

दोयुम कांह् छुनु तस ह_यूव ननुन
कस आसि त'मि सुन्द ह_यूव स्वभाव
वैकुण्ठ गथ प्रा'व बिन्द्राबनन ,,

न्यथ न'नि अ'सि द्रायि मन्ज़ा आंगनन
मुरली शब्दु याम कनन चा़व
न्यन्द्रे हच़्न वो'ठ क'ड मनुन ,,

यि असि बन्योव ति कस छु बनुन
सुय ज़ानि यस युथ बनिथ आव
न्यथु नुनि नेरव तु फेरव वनुन ,,

गूरि भाव प्रावु ना'वि आनन्द गणन
व्यध गयि स्यध असि दोध याम जाव ,,
सोरुय ह_यछना'वि तमि संदि चनुन

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

बोज़ुन श्रवण तु करुन मनन
निध्यासन छु अख भक्ति भाव
साक्षातकार वुछतु योगी छि च़ेनन वनुन०

यछ़'न रा'च़न तु यिथयन द्यनुन
रास आसु खेलान ती याद पाव
ती याद प्यथ अ'सिछि हृनि हृनि छो'नन „

प्रेम त'मि सुन्द गणन गणन
असि सुय छु वनुन च़_ मो नशराव
वनुन दुर्लभ छु युथ सत ज़ानुन „

यि को'रि असि अक्रोरनी निनुन
गच्छ श्री कृष्णस युत वातु नाव
नतु यिख हृ_यनु सानन्यन ऋणन „

यि बूज़िथ उदव छु कृष्णस वनुन
इछ़ गोपिया अ'ख म्यति वनु नाव
भक्ती यिहुंज़ छम जिगरस सननु „

गन्यान दोध वेद कामुदीनु थनुन
हृ_येथ च़य ज़ोनुथ म्य दामा चाव
बो'द्ध म्य'नी ज़ान छय तनन तु गणन „

बोम्ब्रस कुन यी छि गूपी वनन
तथ प्यव बोम्बूर गीता नाव
बूज़िथ तु भक्तियन मुक्ती छय वनन „

यम्बरज़लन छु अम्बर छोनन
मो रोश बोम्ब्रो अम्बर छाव
अछिन कुन वुछ तु तनि लाग तनन „

"कृष्णन" अथु अ'सि छि च़यय कुन अनन
अथनु सू'त्यन अथु मिलुनाव
यिथि रासु अथ वास ज़ांह छुनु छ्यनुन „

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

श्री राज़ु राज़ेश्वरी आम'ति शरण छि़य
पूज़ायि लागोय पम्पोश गुलाब मादु़ल तु ह़ीय
गौ'रीमु अम्बामाबुराक्षीम अहं ईडे

जगतमाता च़्य्य छक मंज़ वदनस असु़नाव
निब्बौद्ध शुर्यन दयायि हुन्द दामान प्यठ त्राव
कल्यानु सोस्त थाव सू'त्य अ'शि फ्येरिन भरन छिय
पूजायि०

वाहन सिर्यन ज़च़न चान्यनु हुन्द प्रकाश
च़रणु चा'ञी करान संकट घटे छि नाश
तिहन्ज़े गरदे सू'त्य देव मुकट जरनु छिय ,,

लोका लोकन ह्'न्दि सतु़ज़न कारण देवगण
सिहासनस चा'ञिस दिवान छिय प्रदु़क्षण
परम दाम'कि पुरुष प्यवान परनु छिय ,,

षटु़चक्ररूपी चक्र नागस छि न'नि नेरन
तेज़चि रेखायि चो़पा'र्यं त्रिकोणस फेरान
योगी ज्ञानी प्राणी सुय ध्यान धरनु छिय ,,

वौद्ध छनु वातनु कम रंग चान्यन रंगन छिय
कामेश्वरी च़्यय मन कामनायन मंगन छिय
यछि़ चाञि श्रद्धायि सोस्ति आय स्तुतायि परन छिय ,,

पनन्यनु भ'क्तियनु दासन हुन्दुय व्ययु़नय पास
तिहन्दे पासै कुकर्मन हन्ज़ घटु़य म्य कास ,,
ज्योति स्वरूप हाव छय च़यय भूतेश्वर'ञ द्रय

भगवत मायायि हन्दि रंग चा़न्य छि रंगारंग
चाञे सू'त्य छुय योग छुय भोग छुय ब्ययि सत्संग ,,
तप ज़प समाध क्रिया कर्म करान छिय

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

महामाया च़्य्य छख च़ट असि माया ज़ाल
असि वोलमुत छुय गृहस्थकि कालसर्पन नाल
ल्'गम्'ति सा'रिय पनन्यन-२ परन् छिय पूज़ायि॰

कम भक्तियि किञ भक्तावारन खरन छिय
कथ कामि लगव क्याह् तगि ज़िन्दै मरन छिय
च़्यय टोठ सच् चञि सू'त्य अ'सि द्रा_न-२ भरन छिय ,,

प्रसाद कर गाल ज़न्मा ज़न्मन हन्दि अपराध
सब्ज़ रंगय ज़लय मंज़ हाव पम्पोश् पाद
इम तिम स्वरण यथ भवसरस् तरन छिय ,,

चाञे सू'त्य सृष्टि गइ नञी जय भविनय
मंज़ा शून्य उत्पत स्थित सांपनी जय भविनय
कलर युगच महाराज़रानी शरण छिय ,,

कुनुय यलि ओस वुछन वोला तस कुस ओस
जगत यस ज़ाव मा'जा मोला तस कुस ओस
चि़थ शक्ति चाञे एक अनेक स्वरण छिय ,,

च़्य अजप्पा गायत्री पांछ़ कारण ग्यवन छि गीत
निस्त्रिगुण छख गुणन चान्यन सू'त्य परतीत
चाञे सू'त्य कार अन्तःकरण करन छिय ,,

अनेक नागन प्यठ चोन निर्वासन आसन
प्यठ शेश् नागस विष्णु रूपय छख भासन
सा'रिय गुण चा'ञि महापुरुषन वरन छिय ,,

च़्यय किति नाना रंगै भोजन रन्न छिय
च़्यय निशि सुवर्ण बानन् ल'दिथ अनन छिय
नाना रंगव मिठायव थाल भरन छिय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

चाञ्ने दयायि सू'त्य कडि बड्यव बडि बडि नाव
निष्बोध "कृष्णस" निश वाणी हुन्द अमृत द्राव
परनु वाल्यन ज़ान्मन हुन्दि दो'ख हरण छिय पूज़ायि०

——

विनथ बोज़ुम च़ राधा कृष्ण
लायय लोलु नादा बो'
भरय लोला परय लीला
करय हो हो करय हो हो

च़ छुक योगुक तु ज्ञानुक गुल
बु छसना भावकुय बुलबुल
च़य लो'ब रोज़ुन ज़रय मा बो' करय०

च़य छय पम्पोशि पादुच द्र'य
वरुम छस भक्ति भावच हिय
च़ नय डेंशथ हरय मा बो' ,,

च़ छुखना प्राण बो छस ना तन
सथा चा'ञी छी दो'न मिलुवन
च़ नय आसख मरय मा बो'

ज़लस मंज़ गाड ज़ान छस ब'य
बु छस च़य्य सू'त्य ज़ाल छुक च़यय
च़य रो'स्तुई वो'न्न द'रय मा बो' ,,

बु छस च़य्य मेघवर्णस मोर
रटिथ छस खोर रासस मंज़ ,,
नच़य लूकन खरुय मा बो'

च़य सर्वस छस बु कुमरी ज़ान
करन छस बूलि मशिथ हनु हनु ,,
छनुय त्रा'विथ घरुय मा बो'

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च़ छुक चन्द्रम़ ह्यु॒व ज़ोतन
ककुव ज़ान छ़ुस च़य कुन बोलन
वुछत नय अछिव ज़्रय मा ब़ो'   करय०

च़य "श्री कृष्णस" ब़ छुस प्रारान
दितम दर्श॒न इतम लारान
च़य रो'स्तुय वोन्य व'रय मा ब़ो'   ,,

हे' दयावाऩ म्य ह्यु॒व चो'र च़यु़ कोताह् प्रारे
असवनि मो'ख वसुवुन ओ'श छुम म्य धारे धारे

फ़ाक़ दिय दिय गयि वां'सा यति क्याह् हा'सिल आव
चारिऱस म्या'निस वोन्य टोठ मनस इयि आराम
च़यथ शान्ति व्रत धारे नित्त दुर्गत हारे   असवनि०

छिनु़ ठीकान प'कि प'कि कुनि अनेकन भवनन
चंचल वयंम'ति अ'सि कु़'त्य यम्य आवागमनन
कर्मफल सू'त्य ह॒यथ भारे यथ ग्रट़ अनु़वारे   ,,

रंगु़ रंगु़ डलनुक सामान समय ह॒यथ इथ प्यव
च़य्य शरण आयि पनु़नि करतूतुक तसु़ल्ला गव
हे दयावाऩ दया चा'न्नी म्य केंछा़ह् यारे   ,,

कु़'त्य बदकार दुराचा़र परम्पार क'रिथ
कु़'त्य बदबक्त़ गो'नाह्गार बु़ यकबाऱ व'रिथ
कम गछ़यी क्याह् च़य म्यते चा'न्य दया बो'ठ खारे   ,,

मंदछा छयना को'र म्य वां'सि चान्ये चान्ये
ज़्यवि किन्य को'र वनु़ना नतु़ महिमा कुस ज़ाने
सुय वनु़नुय भवसर तारि अदु़ कस कर तारे   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

काल दिच़_ डालु फिरव मालु करव रुति रुति कार
सुवह् यलि फो'ल तु पगाह् आलस्यकुय रो'ट दरबार
गयि वां'सा गन्ज़ुरान द्य_न असि वारे वारे   असवनि०

चाञ्नि रायि को'र म्य यि केंछाह् ती थव मंज़ूरय
नतु कुस ज़ानि करञ्न भक्ति क्रया गछि़ पूरय
काम क्रोधस लोभ मोहस मदुसय कुसु मारे   ,,

मृतविजि़ ध्यान थवक प्राण सु म्य संधारे
वारु "कृष्णस" ने'रमल करि भव सागुरस तारे
पद्म पत्र_क्य पा'ठि सरु मंज़ु ज़ल तस क'ति लारे   ,,

——

मो'कलाव मंज़ का'दखानै
हा दयावानै वलो
हा दयावानु भगवानै हा दयावानै वलो

वूनमुत म्य छुम ज़ाला
मो'कलावि चोन अनुग्रह
छुम ज़ालुयं सुन्दु ह्य_व निशानै   हा०

न्यथु न'ञ्नि सन्दि सायिबानै
छस ब तापु तचि़ वुड'र मंज़
त्राव रूदाह आस्मानै   ,,

मंगवुन छुस छुम नु बानै
वडि दयि करतमु दया   ,,
बानु लदतम मानु सान'यु

प्रथ सौदा छु वानु वानै
गछि़ आसुन चोन अनुग्रह   ,,
अदु मेलि पूरु परमानै

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

छुम स्यठाह बो'ड कारखानै
अन्दु वाति चान्ति प्रयुम सू'त्य
सत्यदेवु सत्य नाराणै हा०

ही बु लागै दानु दानै
द्रय च़य छ्य राधाई ह्'न्ज़
यी मंगय ती दिम च़ पानै ,,

सो'म्वरिथ छुम सामानै
वति लागुन च़यय तुगी
अदु प्रावु आश्चर्य थानै ,,

छुक कुनुय रूप भगवानै
द्वयतै छुम म्य भासान
त्रिभुवन सू'त्य अज्ञानै ,,

द्वारिका ज़न प्रथ मकानै
वुछ वनोवुथ "कृष्ण" च़यय
यि छु चोन सोन छुय वहानै ,,

होश दिम लगयो पम्पोश पादन
हा साधन हन्दि साधो हो

योगियन हन्दि योग प्रा'णियण हन्दि प्राणु
ज्ञानियन हन्दि ज्ञानो हो
चान्ति प्रसाद सू'त्य सिद्ध छि तप साधन हा०

अच्युत चान्ति सू'त्य चित्तकुय च़ेनुन
न'तु गछ़ि मेनुन क्रंजल्यनु पो'न्ति
प्रेम ज़ल छुय वुज़ान भावु नागुरादन ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ब्रह्मण ज़न्मस इथ छम् न् ब्रह्म स्मृत
वुछ म् म्याञ्नि राक्षस प्रकृच् कुन
चा'न्य स'च् भक्ति क'र प्रह्_लादन   हा०

पूरण पुरुष छम चा'ञ्नी लादन
प्रणव पान वंदह्येय पादन दो'न
नाद् बिंद् कन थाव सान्यन नादन   ,,

विचार नेत्रन ज़ा'न्य गाश अन छि अ'न्य
हर् हर्मो'ख च़यय दिमुह्येय व'न्य
निष्कल मन निष्काम राम् रादन   ,,

अनुग्रह चोन गछ़ि आसुन साधन
क्याह छु पापन कमन ज़्यादन प्यठ
दय छुक क्षय कर सान्यन अपराधन   ,,

छ़ो'पि मंजै तस छ़ो'च़रा नेरिहे
अद् कति वनिहे जेछ़र यूत
याद है प्ययिहेस वुञ्नि छस लादन   ,,

"कृष्णय" चाञ्नि कपटञ्नि तल नेरिहे
अद् कति पा'रिहे जाम् न्वि न्वि
पुश् कति प्ययिहेस हो'ज़न त् रादन   ,,

इत् दित् दर्शुन भस्माधारै
प्रारै कोताह काल
हे शम्भो ! रक्षपाल स्वामी
हे शम्भो रक्षपाल

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हर् दित् दर्शुन मर् मर् कास्तम
आस्तम ना'ली नाल
लोलचि बबरे तर छुम द्रामुत
गोमुत छुम यच् काल
दयायि ज़ल् अथ् बबरे सग दिथ
पनुनुय अथ् च्यय डाल   हे शम्भो०

मोह सिध्य उदरस मंज़् छुस ईरै
यति छुम सुम नतुह तार
तल् छुम ज़लकुय नीजर हावान
प्यठ कनि छुम घटकार
न'रि छिम हुजि तय ज़ंग् छम बेसो'र
किथ् पा'ठ्य मारै छाल   "

फुचि मो'चि खो'परे मंज़् छुस प्योमुत
प्यठ् छुम कर्मुक नार
अन्दरी अन्दरी ग्रक छम चामुच्
वत् लब्जि हुंद छुम छाव
शेहलन् खा'तुर प्यठ् कनि छकतम
अक अमृत ज़ल् चाल   "

ईश्वर म्यान्यन पा'पी कर्मन कुसु करि शुमार
च्यय छुक अब्निन'य अन्ञघट् कासान
च्यय छुक वखशुन हार
यमि किब्नि सारिय छिय च्यय वखनान
दीनन हुन्द दयाल   "

पां'छ् दोह यावन'नि श्रावण'नि सूरी
यी बूल त्यागु कस्तूरिये

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मतु वुछ़तु संसारचि शूभायि कुन
गतु बुछ़तु देह् सो'नु लंकायि कुन
व'दि व'दि गयि ल'दि ल'दि लूयं लूरी यी०

संसार वन छु कस लारि क्या यस छु तस
ज़ेठुन छु ब्रेठुन बस करु बस
यति प्यव सारिनुई पुशि पूर्यं पूरी ,,

व्यवहार बोज़ स्वस्त अनु धनु द्यार स्वस्त
गाटुजार स्वस्त ब्रह्म विचा़र रु'स्त
मुनि ह्यिव गयि हूञ्य ज़न वूर्यं वूरी ,,

ज्ञानु वैरागुक बन चु अधिका'री
संकल्प विकल्प सा'रिय त्राव
ममता पो'त थाव वथ युथ ना दूरी ,,

मोह् ज़ालु मंज़ु नेरनुक उपाया
कर राज़हंसुन साया त्राव
अमर नाथुचि जानवर जूरी ,,

क्रियायि खोतु छुय शौ'द्ध वासनायि फल
पूज़ायि खोतु प्रेमस तु मायि फल
"कृष्णस" रायि चाञ्य आयि मंजूरी ,,

——

चि़त गोम शान्त चोन प्रेमु अमृत म्य चोम
ओमु श्रीमतु नारायण नारायण ओम

यमि संसारु मंज़ु पतु लार्यम क्याह
दय नाव स्वरण रोस्त थावुम मु ज़ांह
चात्रि भक्ति भावु खो'तु कांह परम सो'ख छा
पतु बनु भिक्षुका ह्यु़व बादशाह
त्रोंठुय म्य हु्यस फिर घरिकुय भ्रम गोम ओम०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मन वाजि नारायण नाव खनतम्
संकट घटि मंज़ अनतम गाश
रायि मंज़ घनतम मो'क्ष पद वनतम
प्रकट बनतम परम आत्मा
क'ञ्य हिश बो'द्ध छम थ'ञ्य ज़ान करत् मोम ओम०

नज़ि ज़ांह् ज़्यव्हा नाज़ि ज़ांह् मर्हा
नारायण् नारायण् क'रहा निथ
चाञ्य नाव् सू'त्य भव् सागरस तर्हा
ध्यान चोन स्वर्हा थव म्य स्मृत
होश दिम व्यवहार राग द्वेश इथ प्योम् ,,

हकरे वनि मंज़ अनुगगुराह् चाव
योर् ह_यथ क्या चाव ख्यत क्या द्राव
कायायि म्याञि मंज़ छु आश्चर्य वथ्वाव
रूप छुस क्युथ क्याह् छुस स्वभाव
निर्लेप द्रास पत् क्याह् ख्योम क्याह् चोम ,,

योर् अथ् वा'हरित तोर् आख वटिथय
कोलि मंज़ फटिथय छुय हो'ख पान
क्या लारि धन् सोंबरित पान चटिथुय
धर्म व्यवहार कर खटिथय पा'ठ्य
जन्मस इथ कर्नाव धर्मच का'म ,,

ब'डि ब'डि कार क'र्य क'र्य क्याह् प्रोवुम
ध्यक्नोवूम छुम बो'ड खानदान
यश पुछि मान पुछि दोह् राव्रोवूम
लूकन होवुम देह् अभिमान
ह_यस फिर म्य मोह् मस् च्यथ पान व्यसुरियोम ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मृत विज़ि अज़ामल गंज़ रावतम्
मशरावतम ज़न्म'क्कि करतूत
यम् किंकर बुथ मत् वछिनावतम
नारायण् नाव थावतम याद
युत छु त्युथ च्यथ "कृष्णु" प्रेमु दो'ध ओम ज़ोम ओम०

इमुय पतु दिमुय नाद
क्यथो याद म्य प्योहम

च'य छुक ज़पु यज्ञुक ज़प
च'य छुक तपु वनुक तप
च'थ छुक साधन हुन्दुइ साध क्यथो याद०

च'य छुक योगियन हुन्दुइ योग
च'य छुक प्रा'णियन हुन्दुइ प्राण
च'य छुक सत्तुकुई संवाद ,,

च'य छुक ड्यकु च'य छुक टिकु
च'य छुक दूर च'य नज़दीक
च'य छुक सार्यनुई हुन्दुइ आद ,,

च'य छुक दो'ख च'य छुक सो'ख
च'य छुक परम आनन्द मो'ख
च'य छुक कम च'य छुक ज़्याद ,,

च'य छुक साधन हुन्दुइ संग
चान्य तनि सफ़ेद रंग ,,
पंपोश ह्विव्य छि चा'ञी पाद

वेदन मज़ छुक सामुवेद
देवन मंज़ यन्द्राज़ह ,,
दैतन मंज़ छुक प्रह्लाद

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रजोगण छुक ब्रह्मा
सतगोण विष्णो भगवान
तमो गो'ण गालान व्याद कथ्थो याद०

धर्मंचि ल'रि कर्म'क्य बर
चोञ्जे सू'त्य अच़ुन छुम
च़'य छुक क'न तय च़य बुनियाद „

लोल'नि साज़ प्रेम'क बंग
वायय सोज़ दमा रोज़
इतम योर ह्‌यतम दाद „

य'मि युस ज़ोन सुय त'मि मोन
च़'य छुक म्योन कर्मंय लोन
वनय च़'य वु लानिन वाद

संकल्प त्रावि रटि मन प्राण
वासना गालि दियि समाध
चाञ्य दयायि प्रावि विन्दुनाद „

"कृष्ण" प्राव'नावुन ध्यान
सुय ध्यान यथ दपान ब्रह्म ज़ान
ह्यथ शिवराग दित समाध „

धर्मु'क धैर को'र खुति हा'रवनसुय
रंग रंग पोशन क'र्य अंबार
मादलि तुलसी आ'रवलि व्यनसय
नारायणसुय छु जय जयकार

घरि द्राय भावनायि सू'त्य दर्शनसुय
चाय प्रबंत राज़नुय दरबार
आयु चक्रेश्वरसय प्रदक्षणसुय नारायणसय०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

समेरू पर्वत कोह् ख'ति सो'नसय
सिद्ध पीठ सार्यं'वय प्रोव अधिकार
नाश गव द्रारिद्रस अ'किस् क्षणसय   नारायण सुय॰

जय जय छु गूकोलुस तु बिंद्रावनसय
जय जय छु नो'न द्राव कृष्णु अवतार
जय जय छु गोपियन त' गोवर्धनसुय   ,,

जय जय छु वासुदेवनिस च़यड ह्‌यनुसुय
जय जय छु देवकियि यमि च़ोल बार
जय जय छु दुखु अदंबंद रोज़ुनसय   ,,

जय जय छु बल भद्रस त' अर्जुनसुय
भक्तिय मंज़ा इम द्रायि सरदार
जय जय छु तथ विश्वरूप दर्शनसुय   ,,

जय जय छु दशरथ राज़निस गुणसुय
माजि कौशल्यायि बारम बार
जय जय छु अजोध्यायि रामजुव ज़्यनुसुय   ,,

जय जय छु रामचद्रस तु लक्षमणसुय
सीता मातायि जय जयकार
जय जय छु भरतस तु शत्रुघ्नसुय   ,,

जय जय छु वाव लोकपाल नन्दनसुय
यमि गों'ड लचि सू'त्य लंकायि नार
जय जंय छु सुग्रीवस विभीषणसुय   ,,

मन म्योन पतु लारि मधुसूदनसय
काम क्रोध कंसस दिवनावि मार
होश कति हारि मारि मोह रावणसुय   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कोह् आव ब्रोंठ दोह् वोत प्यठ खनुसय
तार दियि करि पंचालस पार
सतचि स्थित थावि शो'द्ध चित्त मनसुय
नारायण सुय०

वनुवुन सोन गव मंज्ञ त्रिभुवनसुय
थवनुय तस प्यव ग्यवनुय सार
मानवुन छु भक्त राज़स तु निर्धनसुय ,,

हीतु अकि मायातीत निर्गुणसुय
महामायायि सू'त्य विवाहकार
श्वेत पीत वर्ण सो'रन टोठ रातस द्यनसुय ,,

वनवुन यि केंछाह ओस प्रथ वनसुय
ती वातुनोव गोपियव गुपकार
वारु आव शंकराचार उलसनसुय ,,

अनुग्रह चोन मंज़ अन्नसय धनसुय
वां'सि ताम्न पोशनाव होशु व्यवहार
"कृष्णुस" तोषि मंज़ पोशि वर्षणसुय ,,

मेव कनि मो'क्त वो'थ चंदन बागस
नागस प्यठ लो'ग हंस दरबार
ज़लु कनि अमृत नो'न द्राव नागस
बागस मंज़ चाव सन्तु अटहार
(हंस दरबार परम हंस दरबार)

बोद्ध क्या वाति अथ रागस तु त्यागस
वरनि आव शक्तियि त्रिभुवन सार
तस रोस्त क्याह छुम ती बु पूज़ि लागस नागस०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

त्युथ दशुहार कर तिथिसुय प्रयागस
यथ दह इन्द्रिय छी दह अवतार
का'हिम द्वादुशांत तस पूज़ि बु लागस नागस०

नामुरूप कल्पित ज़ोन ह_यथ रागस
असि ति भाति प्रियरूप पथ द्राव सार
शरमन्दगी च़जि मंज़ वैरागस ,,

प्रियमु कर्म फलन'य यम नियम द्रागस
प्रावुनावि अनुग्रह की अंबार
तृप्तीयु पंपोश फो'लि ललु त्रागस ,,

होश पोश फो'लि उद्योगु पोशु बागस
दासु भाव किञ्ज आस खदमतगार
"कृष्ण" सेवा कर आत्मरूपु आगस ॥

लथ लाइथ संसारसु पतु लारस लतिये

हंस नादस किस जानावारस
ना'लि छ्सि जामु छतिये
वुफि तार्यम हंस द्वारस पतु०

सूर को'र तमि अंधकारस
युस वो'र सूरु मतिये
व'ति धारणायि ध्यान धारस ,,

अथ तेजरूप आकारस
फेरु ब्रोंठि ता'य पतिये
पोंपुर ज़ न गथ मारुस ,,

लोल फंबकिस अंबारस
रहे म्य दिच़ सूर मतिये
स्नेह म्य छुम वो'न्न कति वु प्रारुस ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आरुवल मंज़ लोलु नारस
दज़ुमच् प्रेयम सूंतिथ्य
शेहजारस मंज छि आरस पतु०

नित्य लगुहा सत विचारस
सथ भासनाव सूंतिये
स्वर फिरतु चित्त सेतारस ,,

वंदुन छुम पान यारस
अंदुन छुम यतिये
चन्दुन गोम देवुदारस ,,

ग्रज़ व'छ़ सोंद्रय नारस
यति आ'सिथ छु ततिये
वनवनसुय कन वु दारस ,,

छाल मा'र्य मा'र्य लोकचारस
कर्य म्य पोशन फतिये
शेरि लागस जटा धारस ,,

"कृष्णन" दो'प बालुयारस कर'हस नालुमतिये
मेलि शस्तर तु संगि पारस ,,

मधु कैटभ मारवुनि युद्ध वेष धारवुनि
शुद्ध शांत दोध च़ूरु गूरु गूरु करयो

शहर शहर गामु गामु
राम राम परयो
दक्षण उत्तर पछम पूरु गूरु०

छिय बसंत रंग जाम
इन चात्रि फोजम श्यामु
लंजि लंजि पूरु पूरु ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कर हृषी केशु राग द्वेषकिस शीशस
खंजि खंजि चूरु चूरु गूरु०

बंबूर गीता छय गोपीय गावान
स्वर्ग मंडलुचि हूरु ,,

सियं दर्शन दितु मोह घटि मंज़ नितु
इतु नूरुकि नूरु ,,

होशु अ'लिशि पोशकिस गोशस प्यठ वेह
श्यामु रंगु बंबूरु ,,

तुलसी छावय हिय तन नावय
फलिल मश्कु कोफूरु ,,

मनकि तेलन निध्यासुन टोठ
श्रवणुकि कनुदूरु ,,

राज़ योग राज़ु बोज़ सा'नि ताज़ु ताज़ु स्वर
प्रेम साज़ु संतूरु ,,

देह आभिमानुक कुल ह_यथि छो'नुनुय
तीव्र वैराग सूरु ,,

हे हरिहर ! पाप हर 'कृष्णस' वर
अनुग्रह पूरु पूरु ,,

——

यस छु हटि वासूक तस छु जटि पोन्न
गो'सोन्न हाय गो'सोन्न हाय गो'सोन्न हाय गो'सोन्न

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

युस देव सर्व देवन हुंद छु आद
सुय वरि पाप हरि करि प्रसाद
यस देवस छि पंपोश हिव्य पाद
हरमो'ख बरु तलु लायोस नाद
पादन त'लि छुस पकान सिध्य वोत्र गो'सोञ।

युस थ्यकनुय छु दीवयन तु देवन
तस देवस छि सर्व देव सेवन
आत्म रूप आसुवुन छु मंज़ जीवन
प्राण धा'रियन क्युत छु संजीवन
सूय नंगु नो'न च्योन दियि गंगु वोञ ,,

पूर्णायि सोस्ता छु नूरु भरि थुय
ब्रह्माडन पालना करिथुय
सुख मुख सू'त्य छु दुख हरिथय
वर अभय सू'त्यन छुय वरिथुय
यमि सू'त्य पानस न्युव सोधि वोञ ,,

ज़न्मन हंज़ व्या'ध ज़ालवुन छुय
ज़्यन मरणकि गुण गालवुन छुय
माजि मा'लि संदि खो'त पालवुन छुय
साञि कर्म भुतुरा'च़ वालवुन छुय
आत्म बोधक रूद शंतियि शोञ ,,

प्रेम मस चावि म'शरावि हन हन
सत भावि नित थावि निष्कल मन
मोक्ष दावि करनावि आनन्द गण
सन्मुख न'ञ हावि ज़ोतन तन
'कृष्णस' प्यठ त्रावि शांतियि शोञ ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

तारि छुस गोमुत तार दिम भवु सरु
शंकुर इयिनय आर म्योनुय

यावुन ह_यथ गोम यिथ प्योम बुजुर
स्वपनु वत ओस लोकुचार म्योनुय
न्यथ ह्राव शिवु रु_प मंज़ च़ यथ मंदरु शंकुर०

माया ज़ाल वठ रठ चठ अकि दरु
लबि कनि थाव परिवार म्योनुय
अन्तर मो'ख सो'ख भरु दो'ख हरु ,,

वैराग मछ़_ ज़ो'रु सू'त्य त्यागु खंजुर
दीह् अभिमान मदु मार म्योनुय
ज़िदु थाव वां'सि सू'त्य स्यज़ुर पज़ुर ,,

वासनायि म्यानि मंज बस प्रकृति परु
यछ़ि पछ़ि स्वसुत थव आचार म्योनुय
लछ़ि प्यठ प्योमुत छुस करतम खरु ,,

क्याह् करु सारी वां'सि को'र म्य घरु घरु
कस अकिस वोत वोपकार म्योनुय
नशुनुकि वेलु पशुनुय ब्यथि अरुसरु ,,

वासुनायि अरुखोरस करुनाव दरु
च़न्दुन कर देवदार म्योनुय
यारि ह्युव सब्ज़ कर अदु वदंस दरु ,,

अनु दानु ज़ानि मंज़ ख्यनु च्यनु उदर
सुय आहार पूर्णु व्यच़ार म्योनुय
अस्तुथ च़य कुन करु शांती श्रुकि परु ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सास् बज् वल्ट् रायि कोह् ज़न गयि खर्
घास् कच्चि ह्युव व्यस्तार म्योनुय
दय छुख लय कर निर्णय सर्   शंकर०

प्राक् जन्मचि खडिथय आयि गयि खर्
अति क्याह् पकि गाट्जार म्योनुय
थो'द तुल पथर प्योमुत प्यठ् थर्   ,,

प्रारब्ध फल भूगनुय छुम त् क्याह् कर्
पो'त फेरनस छुमन् वार म्योनुय
प्रानि वैर् मंज़् कड नवि धैर्य सू'त्य दर्   ,,

दोह् आयि छ्ोह् दिथ अन्दर् न्यवर्
अज़ ननि कुस आसि यार म्योनुय
परद् थाव कोंग पोश हरद् क्यथ गछ् बर्   ,,

छ्योट न् श्रूच् मत् वुछत अछ्त् म्योनुय घर्
शिवलूक् ह्युव बनि द्वार म्योनुय
यम् दैत खोचन सू'त्य अभय वर्   ,,

छ्य्ट वासना म्या'त्रि छल निर्मल सर्
काम क्रुध चमार मार म्योनुय
व्यल् पत्र् सू'त्य वा'तिज ज़ान वर हर्   ,,

विचित्र पूज़ि च्यत् नेत्र कमल् कर्
इन्द्रेय शुत्र रुग हार म्योनुय
व्यल पत्र् सू'त्य प्रधान् करनेश्वर्   ,,

पाद थ'कि प'कि प'कि नाद करत् अन्दर
खलवत बनि दरबार म्योनुय
ज़गत'चि रक्षायि हंज़ व्यनथा कर्   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

उपकार सू'त्य पनुनुय छुख वो'पर
र'चि़ वति लगि रोज़गार म्योनुय
दातु नाव कडनावतम ज़ागतईश्वरु शंकरु॰

घटि मंज कमज़ोर को'त तरु संगरु
गगरायि खो'त गो'ब वार म्योनुय
मेघु वर्णु तीज़ दिम वुज़मलु ज़न तरु ,,

अमृतु वर्षणु चाञि गंगा धरु
व्यत च़यतु गछि़ नर्कु बार म्योनुय
धर्म राज़ु शेहजार फिरि वडि आदुर ,,

उरुदु गथ तिछ़ दिम युथ उदवु गथ हर
ज्यूति रूप थव आकार म्योनुय
रेह ज़न गगनस खसुनुक सु्ह बरु ,,

वदनस मंज़ असुनुकि मो'ख ध्यान दरु
योगु ह्यसु थव व्यवहार म्योनुय ,,
दज़नस मंज़ शेहजारा करु

प्रेम बागस मंज़ पान बडि अम्बर
फो'लनाव च़यथ सुफार म्योनुय
अन्तुकालु हरदु वावु सू'त्य क'ति गछ़ु बरु ,,

प्रतेक्ष भास चन्द्रु कला शेखरु
कास अगिन्यानु अन्धकार म्योनुय ,,
देवु दीह प्रावुनाव ज़ीवु भाव थव मु ज़रु

थानु थानु प्यठ ही विश्वम्भरु
च़यथ बो'द्ध मन प्राण खार म्योनुय ,,
छ़युन मातर मुच़राव क्षणु मातरु

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

नवद्वार त्रो'परन यलि पत् व्यसुर
ब्रोंठ शमरावती छु सार म्योनुय
च्.यथ ज़ेनु नाव आश्चर्यकि आश्चुर शंकर्०

अनुग्रह अनकूट् हे दयासागुर
तृप्ति कर भर घर्_वार म्योनुय
कर्म्_हीनुन वर दयि घरसुय छु लूट हर् ,,

भक्ति भावु वाज़रस मज़ चाञि आसुर
यो'क्त भाव प्रावि मो'ख्तुहार म्योनुय
देव लूक फलि फलि रटि हटि गंडि लर् ,,

दीह भ्रमु रोग छूम पनुनी सू'त्यनु जर्
आवागमन आज़ार म्योनुय
च्.य मकुन्दु वासना चरणु कमलन जर् ,,

भूत प्रीत पिशाच् डींशित क्याज़ि डर्
वेह कासे'ख शेहजार म्योनुय
आवेश करतम वरतम महीश्वर् ,,

कर्पूर् गौरव करुणावु तार् तर्
भवसुर वो'न्य च्.यय मटि तार म्योनुय
च्.यथ फिरनाव वेहनाव न्यथ सत्गुरु ,,

ज्यो'न मरुण युन गछ्_न भ्रम ओस प्योस पर्
मोह घटि खो'ट आधिकार म्योनुय
गाश दिम च्.यथ आकाश वुछ् ज़र् ज़र् ,,

कम कार करनि आस गम कास दम भर्
यार छा यि भ्रम सम्सार म्योनुय
हे अगम अपार हे दिगम्बुर हर् ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लूक् हन्ज़ि ज़्यवि परनाव्र परात पर्
पर नय महिम्नापार म्योनुय
पुष्पदन्त आचार्य बन नन्दुकीश्वर शंकरु॰

सत्संगु रंग दिम रायि मो'ख बंग परु
ध्यानु सू'र्य प्राण संधार म्योनुय
यति तति शूभ अन इनु वति प्यठ मर् ,,

अज्ञानु काठ ज़ालिथ भस्माधर्
तीज़ रूपु थव प्रकार म्योनुय
दीह कतुरिस दु'ह कास भास भास्करु ,,

चित् पीडा कास नतु यति क्याह कर्
मृत विज़ि छांड हितकार म्योनुय
हे इष्टदेव भ्रष्ठ प्रकृत थव मु ज़रु ,,

पाप गाल अग्न नेत्र सू'त्य जटाधरु
च़यय छुक विघ्न हर्तार म्योनुय
निवरथ दिम अछ क्याज़ि लगनम दरु ,,

शुर्य तु बा'च़ वुछि-२ ओ'श त्रावान जर्
कुस वो'न्य सिद्ध करि कार म्योनुय
इनु त्युथ मरु ध्यानु निशि गछ़् व्यसमरु ,,

वां'सि हुन्द करतूत व्रोंठु कनि गछ़ि खरु
मृति विज़ि ती निवार म्योनुय
मन निम परम सुख दिम परमीश्वर् ,,

ही महेश जगतईशु ही विशेष ईश्वर्
छति कीशु बोज़ ज़ारु पार म्योनुय
दीश-२ फिर मु वातुनाव पनुनुय घरु ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मोह्मस च़ यथ छुस दूश् लद फिर म्य स्वर्
आशुतोषि कें‌छाह् च़ यार म्योनुय
"कृष्णस" मोक्ष प्राव्नाव अमरीश्वर शंकर्०

सतज़न वन मन कर कैलासै
बस्तिथि मंज़ वनवासुय रोज़

चित्त किञ भस्म मल वल अ'तलासुय
साधु प्रकृच़ सन्यासुय रोज़
ॐ शिव शम्भू कर अभ्यासुय बस्तिथि०

विषय त्यागुक धर माघु मासुय
सत्संगु कुय उपवासुय कर
आत्मु तीर्थ मन नाव मोह मस कासुय "

पान प्रज़ुना'विथ पानुय मु आसुय
सर्व संकल्पन ग्रासय कर
तल प्यठ त्रा'विथ त्राव तलुवासुय "

महामाया ह्_यथ रछुवुन दासुय
शिव नाथु हृदुयावासुय छुय
तोति तस नाव द्राव साधु सन्यासुय "

श्री कृष्णु महाराजन ख्यूल रासुय
गोपीय शुराह सासय ह्_यथ
बालु ब्रह्म_चा'री तोति नाव द्रासुय "

'कृष्ण' अं'दरिमि त्यागु मल सूर्_ सासुय
न्य'बरिमि रागु उल्लासुय कर
शुकदेवस गव यी वनिथ व्यासुय "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

संसार अपुज़् आसनुख उपदेश

सर् को'र सम्सार नदुरुय द्राव
डल मु होशि च़यतकी पम्पोश छाव

वन्द कर लूभ् संक्लपुक वाव
पानै पकि प्रारब्ध्चि नाव
कर पूर्व कर्म् वयन पम्बुछन क्राव डल मु०

सम्सारस मंज रोज़ निर्मल
वुछ तु ख्यलु वथुरस लारि मा ज़ाल
पा'ञ्जिस मंज़ आ'सिथ त्राव् त्राव ,,

मायायि मंज़् निरमाया रोज़्
सो'र रोज़् वैराग् राग् स्वर बोज़
सत्संग् क्यऩ बंग् न'य कन थाव ,,

मायायि ह्_यलि खोच़् पत् छस खे'ज़्
समद्रष्टि छ़ट्वारि पक् नावि तेज़
धर्म् उद्योग् कर्म् खूरि वायुनाव ,,

सूऽह्म हम् वाय मोहने शा'ठि
ज़ा'नि नाव पक् नाव स्यज़ि वति पा'ठि
सहस्रदल् डल पद्म् आसन प्राव ,,

अन्दरि वैर छोर रोज़ नरकी पा'ठि
सूह भो'रतुय पख सतज़न् गा'ठि
लाभ प्राव प्यचि़् ह्यु_व छो़'च़रय मु हाव ,,

परद् तल्य क्रय कर वुछि व_यवि जूजि
अन्दरी प्राव गोर ज़न गन्यानच गूजि
न्यबरी देह_ अन्धकार_ कों'ड फुटराव ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अतु गतु कुकिलि पोट युत्रि ज़ान मु येर
जुवर् कि पा'ठय कोसंगु मंजु नेर
मो'ख्तु छुय सतज़नु बाज़रुक भाव डल मु०

मनु क्यनुवो'बि दयि लोल लाभ भर
म्येलि सत्गुरु सौदागर
भावु वावु होशु बुमि पोश फो'लुनाव „

सम्सारु बोर लोच्_राव त्राव फ़ूख
गिलि हन्दि पा'ठि डल ज़ालु प्यठि पख
राज़ हमसु पानस अ'ंज़ मु गंज़राव „

शो'द्ध वासनायि शम रटु नय कम
शमु दमु वुफ त्राव दि मु किसि दम
थदि होशुकि गोशु पान वुफुनाव „

ज़बि कुकि हन्दि पा'ठय थो'द मु तुल फो'द
बोध रोज़ सूद छुय आत्मु बोध
पोशनूल सन्दि पा'ठि कृष्णु गीत गाव डल मु०

ज़गतचि तापु तचि वुड़रि निशि चल
सायु कर सतज़नु कुलि स'य तल
ज़ाल च्यथ फल ख्यथ लाग डुलिकाव „

गुरु शब्द कुकिलि ज़ान वूल शम्भू
कर मु को'कुर सन्दि पा'ठि कुकुरो कू'
रंगु दूशि संग दूशि दीह मु रावु राव „

वासनायि गाडि लूभु वो'टु मो द्याव
मनुची तृष्णा कुत्रि कित्र त्राव
बो'ज़ु भ्रगु सन्तोषि ताज दिथ थाव „

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ज़ीवु दयायि हुन्द कर व्यवहार
अविद्यायि हारवुचि भेदु न्याय हार
अविनाशु नीलु क्राशि बाशि करुनाव डल मु०

वो'दरकि लूभकि क्र'म तय मच्छ़
शो'मरिथ सन्तोषिच्चि गो'फि अछ़
कामनायि सीमञ्चि बारव मु द्याव ,,

रज़ि छुय सर्पु भ्रम नज़ि छुय नाश
पज़ि पज़ि वुछतु च़यथ आकाश
दुज़िथ रज़ि ह्युव बन तीज़िथ न'टि भाव ,,

वीरु कुबीर छुख छी नु धनु ध्यार
समुयिकि सो'ख दो'ख वीरुत मु हार
वीरु चाञ्चि दारि निशि बो'वि नु माव ,,

सो प्रकाशु बो'ज़ सोनुलांकि व'थुराव
वेचार न्येत्रव नज़राह त्राव
रंगु रंगु बेरंग वुछतु क्युथ द्राव ,,

शांत शालमार छुय शिवु अनुग्रह
अन्दरिमि त्यागु न्यवरिमि रागु बेह
सन्यासु व्रच़_ अतलास पा'राव ,,

राज़ ऋषि नगरु मंज आस वनुवास
निषकाम रोज़ां स्त्रिय आ'सिथ दास
जनखराजु राजुसीय मंज़ याद पाव ,,

शक्ति पातु निशातु शिव मंडल
प्रावि छावुन भख्च़ यवु ख'च़ शख्च़ हुन्द डल
आत्मस परमानन्दु मस चाव ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

निषकलु रूपु कुय पो'लावा खे
निरमायायि हंज़ चाया च्य
मुह_ वति थकनुक रोज़ी नु ताव डल मु०

च्.यथ तकियि दिथ प्यठ सथ फर्शस
बो'ज़ भारिया आत्मा पुरुषस
योगु बालादरि प्यठ लरि साव ,,

विवे_क वयु सर_ मंज़ कर सान
अद्वयोतु पान्नि नाव मन तय प्राण
तुरिया बागु योगु न्येन्द्रा त्राव ,,

हमसु नादु स्वर कर शाह तूल्य तूल्य
मांडक शब्द मिनि मूडख बूल्य
पवनस तु गगनस सू'त्य मिलनाव ,,

अनजल भोगनि ग्रटु ज़न फेर
कर्म_ फलु छ़ल तलु ओट ह्यु व नेर
ग्रख दीयि लख त्रख चा'न्य अख पाव ,,

स्यज़रुकि सो'थि पख सतु स'य सूत्य
अज़ ताञ्य वतु गथ आयि गयि कुत्य
त्यागु खोरन लाग वैरागु खाव ,,

भवु सरु सा'रुक कड अरमान
मुह ग'ति क'दुलस नीरिथ ज़ान
कर्म स्यज़ बो'ज़ नाव स्यज़ पकनाव ,,

यकजा मिलविथ पां'च'वय तो'थ
दोह अग्नबोटा सू'त्य ह_यथ
राज़ु नेर सा'रस कुस छुय वाव ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

परज़ुना'विथ अमर पान आस डल मु०
ख्यथ च्यथ ह_यथ दिथ भाग्यवान आस
सू'त्य बाजन हंज़ु थविज़ि नु ग्राव ,,

राज़ु योग अभ्यासु मनु डूंगु रठ
हठ कर्मु इन्द्रेय वगुव्यन मु चठ
फटुनकि खोफ़_ गाल वासनायि वाव ,,

दोरि फिरि मो'कलख वुछ वावु माल
बाल पानु आलुविथ बालु रठ बाल
पूर पख दूर छुय नखु पा'रि त्राव ,,

मन ज़ेन सो'ख प्राव स्यध गछ़ि योग
इन्द्रेय खलु त्राव भूगन भोग
निर्मल आस कास दीह भ्रमु भाव ,,

साधु प्रकरच़ शाहज़ादु घरि नेर
रादु २ सा'रा क'रिथ पथ फेर
सू'त्य आख ह्यथ यि ख्यथ ति आनन्दु प्राव ,,

पछ़ि वछ़ि सू'त्य प्राव ग्यानु गूरि भाव
च़यथ च़_डि मंज़ु आत्मु दो'ध परज़ुनाव
निर्णयु खो'र ख्याव चाव वीदु गाव ,,

कर्मु के ध्यानु दानि धर्म_ दो'ध मंद
औशध नेरि तथ जसुधानंद
तस छु भोग भूगिथ ब्रह्मचा'रि नाव ,,

यिछ़ि प्रकृच़ मोक्ष दायक नाम
व्यवहारस मंज़ रुद निष काम
ल्यम्बि मंज़_ युथ सु पम्पोशा द्राव ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मोह स्यन्धि तारी करुनाव तार
"कृष्ण" बो'ठ खारि गंगाधार
भवुसरु आवुलुनि कीशव नाव

डल मु०

---

*लगता है कि यह 'नज़म' राज़दान सा० ने डोंगे में डल झील की सैर करते करते फी-अल-बदी (extempore) कही है, जबकि उनको अपने गुरु भाइयों ने इसकी फर्माइश की।

काश्मीरी भाषा के काव्य साहित्य में यह कविता प्रकृति के सुन्दर दृश्य के वर्णन का एक अद्वतीय नमूना है। मुकबूल कराल वारी जैसे कवि भी राज़दान सा० के सामने इस मामले में असमर्थ लगते हैं, हालांकि उन्होंने प्रकृति के वर्णन के लिए 'गुलरेज़' में फार्सी के रंगीन शब्दों का भरपूर प्रयोग किया है। इसके विपरीत, राज़दान सा० ने स्वच्छ काश्मीरी भाषा और चुस्त शब्दों के चयन से ऐसे लुभावने, रमणीय और सुन्दर दृश्य पेश किये हैं जो कोई अनुभवी चित्रकार भी सैंकड़ों रंगों के प्रयोग से नहीं कर सकता।

झील की वनस्पति, फल-फूल और पक्षियों के वर्णन से स्वतः घाटी के इस आकर्षणीय जलखंड का मस्तिशक पर एक अमिट सा सुहावना नक्शा खिच जाता है, जो भुलाया नहीं जा सकता। अध्यात्मिकता और भक्ति दर्शन का पहलू तो अलग सी बात है।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पां'छ़ बंद

भ्रम गोम डींशिथ सो'रमस तु साज़स
नीलिस माज़ास प्यठ ओस पोस्त
विनथा क'र म्य राज़ु योगु राज़स
शरण गछ़ित म्य त'म्य मोह कोस

सर्व आत्मु भावु व्यच़ार दितुनम
सत च़यथ आनन्द अमृतु खोस
दो'पनम चो'न ह्यतु वो'न्य प्यतु पायस
दामा च्यथ शान्त निष्काम गोस

ज़ोनुम पा'लस तु पाकस मंज़ छु कुस
बूज़िथ मदु निशि प्योस कां'प्योस
दो'पनम च़यथु शुर को'छि क्यथ ललुनाव
दिस योगु दो'धुहन बो'ज़वान लोस

पुरुष तु त्रिय यमि ज़ोन एकु रुपय
तथ व्यच़ारु द्रष्टी लगुहोस
यन्द्रेय शत्रुय तमि सन्दि मित्रय
नेत्रय च़रणु कमलन वो'थरोस

मामस व्यकार त्रा'विथ ज़ोनुम
पानै दीह_ भ्रमु निशि व्यसुरियोस
यमि युथ विशेषु उपदेश को'रनम
सुय पा'न्य पानस श्री 'कृष्ण' ओस

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वाख

दमी ड्यूंठ'म सो'न्दर त्रिया
दमी ड्यूंठमस हो'खमुत पान
दो'पमस कति छुय गहन् तु यावुन
कति शुर्य भा'य बन्ध कति सामान
दो'पमस नाव क्याह छुय हे त्रिये
दो'पनम नाव आसुम भाग्यवान
वाव प्योम फ'किरा'त्रि ज़न छस भासन
प्रथ कुनि चीज़ _ किञ्न छस हैरान
दो'पनम कु'त्यन योनि छुम छ़ुनुमुत
कु'त्याह करिम'ति छिम कन्यदान
द्राम'ति कु'त्य आ'सिम रोज़ गारस
कृत आ'सिम तिम कमु नावान
दो'पमस थोक छ'न यथ संसारस
प्रावुन गव त्रावुन अभिमान
दो'पनम मनु किञ्न सो'रनुय त्रोवुम
"कृष्णन" होवुम करनुय मान

समिव करव अथव वास
पकिव रास गिन्दुने

शे रे'थ सांपुनि कुनिय राथ
गोपीनाथ नच़_न्य लो'ग
वहर दोह गुव पहर मास पकिव०

यथ बालु पानस दिमव छो़हा
युथुय दोहा छु गुनोमथ
सासस युगस करव सास ”

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

शुर्यन बा'च्न लबि कनि सा'विथ
वछि तलु त्रा'विथ नेरव ना
सू'त्य सू'त्य ह_यथ वे'नि पो'फ मा'ज मास पकिव०

वनिव कस छु कृष्णन लोल
ज़ावुक ज़ुव तय क'मि क्याह् चोल
निवुवुन मन दिवुवुन विकास ,,

तो'हि कति सोन ह्य_ुव बन्योवु हाल
अदु कति ज़ा'न्यून तुहि नन्दुलाल
नेरव ना पा'रिथ बियि उल्लास ,,

अ'सि कमि बापथ करव त्याग
अ'सि गुछि आसुन कृष्णु राग
सुय गव तप ज़प योग-अभ्यास ,,

कथु साज़ि महामन्त्र ज़ान
वुछुन सोन मान उत्तम ध्यान
ख्यो'न चो'न सोन गव बो'ड उपुवास ,,

बर दारि व'छ़_ त्रा'विथ नेरव
वथ ल'ब तु मस्ताना वति फेरव
दयि लोलु रोस्त क्याह् लयि अ'तलास ,,

ह_यस ह_यथ गव मुरली वायन
दीवच्न तु गन्धरवु कन्यायन
य'म घरि रोज़ु तिम गयि उद्दास ,,

अपा'रि नादा यपा'रि वादा
चोपा'रि राधाकृष्ण छुय
प्रथ कांसि सू'त्यन करिथ अथुवास ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

जसुधा माता गुरुस छय मंदन
नन्द् गोप् नन्दुन गिन्दन छुस
दोधस तु थ'ञ्य छुस करान ग्रास पकिव०

अथ् छुस कुयि मंज़ न्यबर कडन
चखि मंज़ प्रेयम बडन छुस
खोश इवुन छुस करान ग्रास ”

कन्युन थ'ञ्य गयि पलन पोञ्
नचन छु मुंज़ नारद गो'सोञ्
शीन ज़न मोह गो'ल तु चो'ल तलुवास ”

रातस दोह गव तु व'हरस राथ
शामस वो'छिनि आव प्रभात
पानय सांपनुन कालस ग्रास ”

असि मंज़िम्यन छुस बो'ड पास
करुणावि अ'सि शुराह सास
"कृष्णस" तु श्री कृष्णस अथ् वास ”

——

सत्संगुक महिमा

सतुक श्रवण कनन मंज़ गव शब्दा वूज़ चो'ल घरुयुक गम
अगम अपार दिगम्बर स्वर सम्सार व्यवहार भ्रमय ओस
सत पुरुषन हुंद शमय तु दमय सत्संग समागमय ओस

——

वागा सोन्दर ज़न स्वर्ग द्वारा वज़ान सन्तूर सितारु साज़
आश्चर्य वत सामु वेदुक स्वरा मदुहम ह्यथ ज़ीरु बमय ओस
सत पुरुषन हुन्द शमय तु दमय सत्संग समागमय ओस

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ठाकुरजी मनवटी

गा'फिल म़ बन पायस प्यतो
तस जानि जानस वो'न दितो

दो'र च़यय़ पनुन मो'र ज़ोनथुय
रज़ि गोय सो'रुफ पो'ज़ मोनथय
सत्संग गंगि अमृत च्यतो

दिल साफ थावतो आईनै
मल गाल तुल तस च़_ खय
छो'टि पा'ठि कथ मटि च़यय ह्यतो

दिलनय सहल को'र मुश्किलय़
ब्रेठ्योक त़ ज़ेठ्योक मंज़िलय
स्यज़ि वति पकनस प्यठ इतो

यलि चय़ दिलस सैंकल करख
चलनय चय़ शक त्रावक च़_ फ्रक
शो'ध सात्वकी भोज़न ख्यतो

ज़ान ज़ानी जान छुय वान पनुन
छयनो च़यय केंह छां'डिथ अनुन
सत्संग द्वार वाऱ पय ह़्यतो

वननुय छु केंह बननुय छु केंह
'ठोकुर' पान पन'नुय छु केंह
गुरू मो'ख सऱ कर वर दितो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

राम लीला चा'त्रिय वनय
श्यामु सो'न्दर नारायणुय
तन मनै अर्पण बनय
श्यामु सो'न्दर नारायणुय
निर्गो'णय निरञ्ज़नय
श्यामु सो'न्दर नारायणुय

चात्रि लोलुक छुम होल गोमुत
देहकिस ज़िसिस'य मंज़ ब' प्योमुत
वन कस दुख म्य छुम क्षण' क्षणुय

यमि योनीय छम ह्'ज का'रय
गोसु त्राव वोत्र म्य छम को'स ता'रय
मो'ख हाव दुख कित्र आस ह्_यनुय

नट बनि बनि नाटक हा'विमु
ईश ! कम कम वेष बदला'विम
नि'नु आस ग'छ़ि ग'छ़ि इनु इनय

का'तिस कालस वो'न्य ब' प्रारय
बोज़तम आ'र्च़र ज़ारु पारय
आर इयिनय रघुनन्दुनय

यथ वेषस म़ज मो'कलावुम
योगानदन्स मज़ म्यं सावुम
मोच़्_ आनन्द निर्बन्धुनय

नाश सस्तिस यथ संसारस
कमि बापत पतु पतु लारस
अतुगतु पठ च़टुम पनु पनुय

काल'स छुनु करार क्षणस
ग्रास करान रातस त' द्यनस
चात्रि दर्शनु अमर बनुय

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कालस निशि उपदान संसार्‌य
का'लि तथ बनान आहार'य
मंग' क्याह् तंग आस मरण-ज़्यन्‌य

भोगन मंज तृप्ती म्य न' आये
युथ मृगिञन मृग तृष्णाये
अमृत च़नकुय छुम म्य विन्‌य

श्वान नीरस हडन टकान
ट'कि ट'कि पनञ्नो ज़्स्म् ञकान
रस र'तकुय हे रसगण्‌य

कोमल पाद्‌य कमल मलय
हे शरणागत वंत्सलय
को'त ब् च़लय च़्यय निशि रो'ज़् छ़्यन्‌य

सो'ख केवल चा'ञीय स्मरण
सो'ख केवल चोनुय दर्शन
हे निर्द्वन्द्‌ आनन्दगण्‌य

'ठाकुर' च़्यय हृषी केशय
बोद्धि पर युस निश्चल रागुद्वेषय
सर्व आत्मा च'व सनातन्‌य

प्राव कैवल्य हा केवलो
योग् चाञ्नो बनि आज़ादी
भोग् सो'खा हा निष्कलो
यलि च़लनं पाप'नि लादी

चोन दूरिर कव ह्‌यक् ज़्'रिथ
कमि वलै ह्‌यक च़्यय निश् इथ
छुमन् करार ग़म चाञि गलो भोग्॰

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गर्भ नयन मंज़ फीरि फीरी
वुछ म्य लो'कचार यावुन तु पीरी
बांड बनि बनि कम जामु वलो योग०

पय अज़ताम लो'बय न चोनुय
धर्म हीनस म्य ओस कर्म_ लोनय
नठ छम वति निशि मा डलो ,,

मनु दर्पण छुम मा'लु गोमुत
मोहकी मदिरा छम म्य चामुच़
ज्ञान गंग ज़न मलु कलु छलो ,,

नारायण कस गछ़_ शरण
छो'टनम क्यथ पा'ठि ज़न्मु मरण
हे शरणागतवत्सलो ,,

यच़ कालि चान्नि वते द्रासय
बुजरूकुय प्यनय पासय
बुजरस त्रा'विथ वोन्य मु चलो ,,

मनु को'फूर अनु चाणि वेरे
रत्न ज्योती आलवे शेरे
गाल मल "ठाकुरस" निर्मलो ,,

सो'ख शब्द दर्शन चाने_ आनन्दगणु टाठि म्याने

रात द'यन करान छुस चिन्तन
क्षणु क्षणु छुम च़ंच़ल मन
ईश्वर दूरि'रु चाने

राग चोन युस छुम मनुसय
सातु सात' रातस दु'यनसुय
म्योंन दो'ख च़यय रुस्त कुस जाने आनन्दगणु०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

राज़न हृन्दि महाराजे
टाठि म्यानि आदन बाजे
लीखित म्य क्याह् ओस लाने   आनन्दगण्०

योदवै च़' म्यात्रि कथ वोज़ख
दूरि दूरि च़ूरि क्याज़ि रोज़ख
रोज़ च़ूरि यथ गुहायि म्याने   ,,

यच़कोल च्य त' म्य दूरिर
क्यतु ज़ोरूत इथ करूथ न' पूरिर
अदु कर यि ज़'ट यलि प्राने   ,,

ओसुस ज़ल बो'य निर्मल
मोह् कठुकशि कोरनम छ़ल
वचुनम कन्चि शीनु माने   ,,

त्रेश हृतिसुय मनस त्रेशा
अमृत वर्षन बु' डेंशा
वनि शीतल अकि कटाक्ष चाञ्ने   ,,

कर्मु किञ्य वेष कम दा'रिम
गर्दभ बुथि बा'र्य सा'रिमु
वृषभ वेष् तल अलुबाने   ,,

कामनायि ओतुर को'रनस
अमृत भास्योम वेह् रस
श्रोपरोवुम दानि दाने   ,,

कन थवुम नु सतगुरु शब्दनु
ज़ुर छ़ुनुम खो'टि प्रारब्धन
कर्मव को'डुस पर्यनि छ़ाने   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

'ठाकुरस' चाव अमृतु रस
संसार निश बनि बेह्यस
बनि नो'न अनुग्रह चात्रे

——

हे निरंजन कष्ट भंजन
भक्तरंजन हे दयाल
ज्ञानकुल लाग अछि म्य अंजऩ
अज्ञानकुय पोह म्य गाल

भवसरय फो'टमुतुय छुस
मोह मायाइ वो'ल म्य नाल
छुस ना ज़ानान बो'ठ खसित
वोञ्य अथ रोट करतम दयाल

सन असत विच़ार छुम ना
काम यन्दिलि छिम पतै
असतुचि हां'कल म्य च़टतम
हावतं सतुची वथय

काम क्रोधन लोभ मोहन
छुस ब' को'रमुत ज़ेरिबार
भवसागर दु:ख घरु मंज़ु
अथ रो'ट करतम दयाल

दीन वत्सल रछ पद्यन तल
आनन्दुक अमृत म्य चाव
यव किञ शांती म्य बनिहे
वैर भावस गछि़ अभाव

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

विष्णदास जी

पादि कमलन तल ब़ आसय
करनि चा'त्रिय अस्तुती
मोक्ष दिम बो'ड वर्गं दिम
भर्ग़ शिखा भगवती

गोम नेत्रन खून जारी
छुस च़यय कुन ज़ारी करान
भास प्रत्यक्ष कास ख्वारी
अ'सि छि पापव व'लिम़ुती मोक्ष०

चात्रि आशायि योत ब़ आसै
नाउमेद नेरै ऩ ज़ाहं
या म्य वर दिम मोक्ष़ दामुक
नत़ छुसै प्रारान यती ,,

लोल़ बागस पोश फो'लि म्य
वेरि चान्ने चा'र्यं चा'र्यं
शेरि लागै भाव़ कोसम
शोल़ वनि कारेप़ुती ,,

क्या वंनव अ'सि मंद़छेम़ुति
चन्द़ छ'न्नि सौदा करान
कर दया वो'न्न वुछ म़ तथकुन
शर्मि सूत्य अ'सि गलिम़ुती ,,

चा'न्न गुण विस्तारनुक ताकत
अनि कुस कस वनीय
छुय च़य जय जय शाम़ सों'दरी
जाम़ शूभान छी छती ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ज्ञानु दाता मोक्षु दाता
छख ज़गत माता च़ छख
हे भवानी कर म्य वा'णी
स्यद्व मुखस दिम सरुस्वती मोक्ष०

पज़ि मनु युस भक्ति च़ा'ञ्नी
करि निष्कल रातु द्यन
क्याह छु संशय तसंदि बापत
मोक्षु दामु कि बर वथी ''

चा'ञि गुण छुस बो' विच़ारान
पन ओमु कि खारान बु छुस
अबसनु कि वरु दो'न कुनुय कर
नतु छु आछुर क'ति क'ती ''

सर्वु व्यापक छख च़ो' पा'री
अ'सि छि शारी कया वुछव
वन च़्य रुस्त कुस बोज़ि ज़ा'री
हाव मो'ख प्यठ परुबती ''

कर्म हीनुन धर्मु होनन
कर्तव्यन सान्यन मु वुछ
डालु स्योधु अथु कर्मु ला'निस
प्रक्रमस चा'ञिस खती ''

वील्यु ज़ा'री बोज़ "विष्णस"
रोज़ सन्तुष्ट सर्वदा
छुय च़्यय रोशन छुस बु तोषण
च़्यय म्य बख़शक थ'ज़ गती ''

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

प्रात: काल आव म्य'ति अनतु गाश मति
छम चा'ञ आश मति पूरण कर
लटि मुख हाव मोह् घटि करतु नाश मति
छम चा'ञ आश मति पूरण कर

ज़न्मादि ज़न्मन ग्यूर आम फेरान
छुस हालि हा'रान डेंशत कर
जल हाव मुख पनुन छुमनु बरदाश्त मति छम०

भक्ति भावु सू'त्यन वति चाञि नेरयु
कति छुख आसान पैग़ाम सोज़
नतु दिम पनुनुय प्रोन यादाश्त मति ,,

मोह् घटि मंज़ छुस वथ छमनु ईवान
सत्गुरु हावतम सतु चिय वथ
वथ हाव नो'नु त्राव सिर्यं प्रकाश मति ,,

हनि हनि फ्यूरुस ह्यथ मनि कामन
शहरन तु गामन कति आसि यार
छुख पाताल किनु छुख आकाश मति ,,

निर्वासिन वनतु कति चोन आसन
अन्धकार कास्तम वन्दयो प्राण
करतम सो'ध्य वाञिञ्य हिश बा'श मति ,,

क्रल्पनायि रोस्तुय कलु हो वन्दयो
कालि चाञि रा'वुम न्य'न्दुर तु नेह
वो'लु वो'ञ "विष्णस" च़लि अभिलाष मति ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हे दयालु छुस ब़ चञ्चल़ लोलो
अनुग्रह चा़त्रि बेमार बल़ लोलो

कर्म_हीन छुस आमुत संसारस
चन्द़ छो'न छुस लो'गमुत व्यवहाऱस
अविद्यायि हन्ज़ा छम गांगल़ लोलो अनु०

लय़ विक्षेप भय सू'त्य छम आवर्ण
मल खो'त़मुत छुम अन्त: करण़न
विवेक़ पा'त्रि पान बो' छल लोलो ,,

ज़ा'नि ज़ा'नी ज़ांह तिनो ज़ोनमक च़यय
ज़ान दिम तिछ़ ज़ा'नित यव़ गलि़ द्वयि
दिम निश्चय युथ ऩ ज़ांह डल़ लोलो ,,

छुस ब़ लो'गमुत संसाऱ सऱसय मंज़
रोवमुत छुस पत़निस घऱसय मंज़
ध्यान सू'त्य ज़ाल ज्ञाऩ मशअल लोलो ,,

प्योमुत छुस घटि मंज़ अनतम गाश
त्युथ गाश हाव युथ नो'न छु सिर्यि प्रकाश
का'फी चा'ञ अख वुज़़मल़ लोलो ,,

बाऩ हीन बो' द्रास खानै गदाये
अंग़ हीन छुस फेऱ को'त जायि जाये
दिम भिक्षा अनुग्रह खल़ लोलो ,,

यम्बरज़ल बो'म्बरो छस ब़ प्रारान
वेरि चाञे पान छस पा'रावान
व'नि व'नि छस ब्रच़ आरवल लोलो ,,

लोल़ बागस फो'लिमो गुल त़ गुलज़ार
पोशनूलो अज़ा वलो छाव़ु सब्ज़ार
होश दिम युथ पोश़ वा'र फो'लि लोलो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ह्रा "विष्णो" पन॒नुय पान ज़ानतन
यलि ज़ानक त्यलि बनि सरत'लि सों'न
चि़त आ'नस करत॒ सयकल लोलो अनु०

हे दय॒ । बोज़ कैन च़्यय रो'स्त कस ब॒ वनै
करयो आ'च़'नै च़्यय रो'स्त कस ब॒ वनै

संसार आवल॒नुय यि छु सनि खो'त सो' नुय
अ'थि मंज़ आस ह्यनै च़्यय०

चोवनस मोह॒ मसै रुदुम न ध्यान ह्यसै
उन्मत गोस तनै ,,

हरुम म्य कष्ट ह्रन ह्रन ह्रि ह्रर छुक थवुम कन
आ'च़'र आलवनै ,,

सूक्ष्म निर्मल करुम वृत प्रत्यक्ष पा'ठिन ब॒ बुछहत
सू'त्य ज्ञान॒ लोचनै ,,

चि़त्तस सयकल करुम पूर आज्ञान॒ मल गछ़'य दूर
हे टाठि निरंज़नै ,,

पादन तल ब॒ मेरे चा'ञि स्तुता करै
वार॒ वार॒ आर अनै ,,

वासनायव नाल॒ रो'टहस संकल्पव ब॒ चो'टहस
कोडहस पन॒ पनै ,,

दितं सत्संग म्य ह्ररदम इयं शांती त॒ शम दम
ब'नित आज़ाद बनै ,,

"विष्ण" थावतन समाधान च़ल्यस यव॒ देह॒ अभिमान
मंगन छुय क्षण॒ क्षणै ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

मास्टर ज़िंद् कौल

पं० जिंद कौल जिनको जन साधारण मास्टरजी के नाम से जानते हैं, कल तक हमारे साथ थे। एक महान योगी और साधक होने के अतिरिक्त मास्टरजी एक उच्च कोटी के कवि भी हैं। पहले पहले मास्टरजी ने उर्दू भाषा में कविताऐं कहीं, उस समय आप "साबित" की उपादी से जाने जाते थे। उनका उर्दू कलाम भी "देवान-इ-साबित" के नाम से प्रकाशित हुआ है। उनकी काश्मीरी रचनाऐं "स्मरण" के नाम से छप गई हैं, जिंस का अनुवाद अंग्रेज़ी भाषा में साथ साथ उस संकल्न में दिया गया है, जो बड़ा आकर्षक और रोचक है। इस पुस्तक पर मास्टरजी को साहित्य अकादमी का पुरस्कार भी मिला था।

मास्टरजी की कविताओं में निर्गुणवाद की बू-बास मौजूद है। वह पहलु वदल बदल कर यथार्थ तत्व और वास्तविकता की महान सचाई का बखान करते नहीं थकते। इस प्रकार वह दूसरों के मुकाबले में ललुद्यद के बहुत करीब हैं। इनकी कृतियों की शैली भी कुछ अपनी ही है।

मास्टरजी ज़िन्द कौल का जन्म 1884 ई० में श्रीनगर में हुआ था। आपने अपना बचपन और यौवन का कुछ काल भी अत्यन्त निर्धनता में गुजारा। कविता के साथ आपको वचपन ही से लगाव था। आपने 19 वर्ष की आयु से ही कविता कहना प्रारम्भ कर दिया था। उर्दू और काश्मीरी के इलावा आपने हिन्दी भाषा में भी काव्य कहे, जो "पत्र-पुष्प" के नाम से एक पुस्तक के रूप में छपी भी हैं। पर अब उपलब्ध नहीं है।

मास्टरजी 1965 ई० में स्वर्गवासी हो गये।

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आमुच़ मनस र'च़ वासना
ईश्वर सफल करिनासना

एकांतकिस गुहलिस अंदर
उपरामकिस शिहलिस अंदर
पंपो'शु पादन दो'न मलान
पनुनिस गुरुस बो' आसुहा ईश्वर०

पूज़ायि विध केंह ज़ानु मा
लोलस निषध केंह मानु मा
छ़ यपि च़ूरि कुनि म्यूठा दिवान
लो'त तथ खो'रस बो' आसुहा ,,

यच़ लोलु अ'छि व'छ़ थावुवुन
अ'छि टींटि रुस्त ओ'श त्रावुवुन
सुन्दर मुखचि कांती वुछान
तस सुन्दुरस बो' आसुहा ,,

वाणी तसंज़ विज्ञान मय
ज़न साम ग्यवनस पानु दय
तन मन ब'नित कन बोज़वुन
मधुरिस स्वरस बो' आसुहा ,,

सतु शब्द नो'न विस्तारिहे
उदुगीत स्वर थो'द खारिहे
करवुन मनन स्वादुल चवान
श्रवणुक सु रस बो' आसुहा ,,

बूज़ित श्रवण पादन प्योमुत
संसारु निशु मो'कलित गोमुत
पुशरित पनुन सोरुय ज़गत
परमेश्वरस बो' आसुहा ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वुज़ तात' व'नि व'नि गारिहेम
कर् पद्म हृदयस सारिहेम
ज़लु बिदु ज़न मीलित गोमुत
सुखु सागुरस बो' आसु'हा ईश्वुर०

——

अज़ वाति वूज़म मोलु म्योन
कोसम वतन वथुरावुसाय

लछ़ ज़न डुवित संताप ताप
अंत: करण गरु नावुसय
ठोकुर कुठिस मंज़ रंग रुत
प्रंग आदुरुक पा'रावुसाय कोसम०

सों'बरित र'सिलि र'ति कर्मु फल
मस खा'सि भर्य भर्य थावुसय
अशि गंगु वाञ्जे खोर छलस
रुमालि गुमु वो'थुरावुसाय ,,

तिम पाद हृदयस प्यठ र'टित
दुख दा'दि ज़न्मुकि भावुसय
कोछि क्यत रछुन लोकु चारुकुय
स्मृत चितस अदु पावुसाय ,,

भावुक घन्यर लोलुक सन्यर
वा'लिज मुच़रित हावुसाय
नो'व नागुरादस सोन्त ज़न
स्नेह मायि हुंद वुज़नावुसास ,,

गुरु भावुनाये सू'त्य शेर
नो'मरित खो'रन तल त्रावुसाय
घरु बार ता'य आसुन बसुन
सोरुय पनुन पुशुरावुसय ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

घट् प'छि चन्द्र जन नाम्र रूप
अख अख कला व्यगुलावुसा'य
सिर्यस अन्दर लय प्रावि जून
सार्य वनन त्यछ़्_ मावुसा'य कोसम॰

स्मरण पननुञ दिचा'नम
प्रेमुक निशानु व्यसिये
रछ़्_रुन तों'गुम नु रोवुम
ओसुम नु बानु व्यसिये

पतकालि छुम नु द्युतमुत
सो'न मो'ख्त दानु व्यसिये
अ'त्रि सारि क्या लवक वो'ञ
तिम मोख्तु दानु व्यसिये रछ़्_रुन॰

वा'लिजि मंज़ थवुन गो'छ़
हावुन थो'वुम अथुस प्यठ
राह कस छु को'र म्य-पानस
नुकसानु पानु व्यसिये ,,

हावुन छु रावुरावुन
चावुक समर छ़ु खामय
थावान छि छावु वापत
बानन ति ठानु व्यसिये ,,

यनु सुय निशानु रोवुम
तनु म'चु गयस बु फलुवाल
न्युन ह्योन नु कोंह्ति फेरान
छस वानु वानु व्यसिये ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

व्यसरुन पनुन वनस क्या
वनुनस ति वार मा छुम
बुथ मा सम्यम दोहस त्युथ
गछ़_ को'त शबानु व्यसिये रछ़_रुन०

यछ़ पछ़ मु हार ब्याखा
ह्यत यूर्यं वाति कांछ़ाह
तस छा कमी निशानन
भर्यं भर्यं खज़ानु व्यसिये "

डोलान कोहन वनन मंज़
शोलान छि गुलशनन मंज़
ज़ोतान छि तारकन मंज़
कुत्याह निशानु व्यसिये "

व्यसुरित डलित पथुर प्यथ
वुथ क्या दिमव तमिस निश
पो'त फेरनुक पकान छा
युथ ह_युव वहानु व्यसिये "

मानव ज़ि अ'सि ह्यमव पो'त
छोर्या तसुन्द मुहब्बत
पेवंद यि आदुनुक छा
शुर्यं कारखानु व्यसिये "

दिल फुटिमुत्यन छु तोषन
यच़ गरिम'त्यन छु रोशन
गछ़ वर्यमुत्यन सुदामन
प्रछ़_ गा'यबानु व्यसिये "

अंदि प'खि यती छु आसान
बो'दु ब्रोरु सूर दासुन
बोज़ान छु माय लागित
लोलुकि तरानु व्यसिये "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वुछित गथ चा'ञ्य दैवागत
च्.य बिन द्वयि नो सरै लोलो
म्य अन्दर कर पनुन मन्दर
बु च्.यय पूज़ा करै लो लो

बु चाञ्ो वेरि सों'बरावय
अछिव किञ्ा रंगु रूपुक रस
कनव किञ्ा शब्दु साजुक मस
अनित खास्यन भरै लो लो म्य अंदर०

म्य कुन वुछि वुछि असान छुक
दूरि रूज़ित आस्मानन मंज़
गुपित छुक दासतानन मंज़
बु दूर्यर नो ज़रै लो लो „

फिज़ा त्रा'विथ म्य खनिमुति ज़िसि
ज़मीनस तल तु पूरुणि छिम
स्यठा देवारु लूरनि छिम
च्.य रोस्तुय क्या करै लो लो „

बु छुस पोंपुर च्.य दीपस पत
च्.टित इमु जामु करहै गत
दिहुनै जामु च्.टुन'चि वृत
क्यो'मा ह्_युव मा मरै लो लो „

म्य निम पम्पोशु पादन तल
तिमन हुंद बों'बरा सूज़ित
कंडयुन प्यठ छुस मरे रूज़ित
बु चाञ्ो आसरै लो लो „

ज़मीनस ज़न्मक्रिस व'विमुति
अशिकि दुर्दानु कँह ब'विमुति
अछिन मंज़ छिम रछित थविमुति
तिमै खावे जरै लो लो „

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

इमन जोयन अन्दर यो'दवय
छु चाञ्नो सहज़ु धर्मुंक ज़ाल
बठ्यन हुंद छुक सम्योमुत मल
म्य चावुम आगुरै लो लो   म्य अंदर०

पनुन मय तेज़ कुय आगुर
इमन ज़ारन अन्दर भासुम
कुन्यर भा'वित द्वई कासुम
घटे हन्दि गाशुरै लो लो   ,,

पानै म्य पान हा'वित   आशायि धारना'वित
तन्हा चो'लुक म्य त्रा'वित   कस ? म्याञ्नि जोगि रायो

वुछुनोवथस मनुक मल
सो'न म्योन द्रावु सरतल
वुछुमक नु वारु को'रथम
चस म्याञ्नि जोगि रायो   तन्हा०

ह_यकखै वुछित च_ तिम छो'ख
मुचरित बु सीनु हावय
चय वन चय रुस्तु भावय
कस ? म्याञ्नि जोगि रायो   ,,

यव किञ्न वे सुम छि कोमल
हृदयस कठोर वा'णी
ग्रावन दिमव यतिय छ_यन
वस ! म्याञ्नि जोगि रायो   ,,

लो'बुमक तु वो'ञ्न मु रावुम
बालन कोहन मु छावुम
सत्संगु प्यालु चावुम
मस म्याञ्नि जोगि रायो   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भगवान् सोन बूज़िन
असि आश चा'न्य रूज़िन
ह्_थ वां'सि माजि मा'लिस
लस म्याञ्नि जोगि रायो तन्हा०

नित्य इष्ट् देव् सं_द्यन
पंपोश् पादन्य तल
बंबुर ब'नित चवान गछ्
रस म्याञ्नि जोगी रायो ,,

पज़ि प्रेमके प्रभावय
भोगान सुख त् सावय
नीराग् राज़_ योगस
खस म्याञ्नि जोगि रायो ,,

दय सुंद प्रसाद सत्ज़ान
भक्तिन छि बा'गरावान
प्रेमुक चवान त् चावान
मस म्याञ्नि जोगि रायो ,,

ब् ति चा'न्य दा'सिया छस
च्यय मूल् माल् अर्पण
युथ छुक च् इष्ट् देवस
तस म्याञ्नि जोगि रायो ,,

कार म्याञ्नि बापत यमि क्रिय च्_ परम त्यागी
ंद योग् पीठ् त्रा'वित लो'गमुत राज़्_ द्वार्न
सि निशि ति क्यूँच् काला यथ फुटिमतिस मनस मंज़
स म्याञ्नि जोगि रायो बस म्याञ्नि जोगि रायो

भाषण मधुर मधुर कर
फुट्राव शकुरस मो'ल
अभिमान कोसमन हर
अस म्याञ्नि जोगि रायो ,,

—

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

यार् संदे दादि दो'दमुत   दिल बहारस क्या करे
वाव योदवै सोंत कालुक   आसि नारस क्या करे

कां'सि प्रारान दारि प्यठ युस
वां'सि हारे धारि ओ'श
आवशारुक तस हवस क्या
शालुमारस क्या करे   वाव०

कां'सि पलज़ुन कां'सि हुंद ज़ेवर
बनुन यस यो'छ़ नु ला'न्य
सो'न बना'वितन संगि पारस
तस विचारस क्या करे   ,,

होश् ड'ज़ुमच् जोश् व'छ़ुमच्
पोश गहनस तोषि क्या
रोश् यस चो'ल ओश त्रा'वित
गोशुवारस क्या करे   ,,

कालिदासस तालि क'न्य
पत कालि वो'नमुत गाट्ल्यव
तालि यन युस लोग ज़ालस
गाट्जारस क्या करे   ,,

लोलु मस ज़ाल्यम तु गाल्यम
यस बुडित मा'लूम गव
बीमु नशुके त्राविहे मस
चोन खुमारस क्या करे   ,,

रंगु हा'वित भ्रम दिवान ओस
कहवचन खो'त म्योन सो'न
अ'मि को'डुस अंदर्यम खोचर नो'न
लोलु नारस क्या करे   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

डालि निमु क्या बालु यारस
ओ'रु तु शुद्ध पाथ्यम नु दिल
छ़्_यनिमतिस यत दाग़दारस
नावुकारस क्या करे वाव०

ब्रोंठु छुय चो़'र क्रूठ मंज़िल
गा'फिलो बस कर मु ज़ेठ
यस म'तिस माघस जिगर
शेहल्यव नु हारस क्या करे ,,

—--

तरवुन छु करनोव हक दित छु वनन
कांह़ मा सु त'रिव अपोर
पतु तार बन्यव नु आलुच़ मु क'रिव
उद्यमु त'रिव अपोर

करनावि तार छु नु गरि गरि बनन
वुन्यक्यन छय वेला जान
निश्तुर तु यि सात मु रावुरिव
वुज़िव तु त'रिव अपोर पतु०

घरुवेठ सों'बरान छिव मारु गा'मति
छ़्_य'नित थ'कित पेमुति
घरु रोज़ि यति तय कथ क्_युत भ'रिव
छ़री तरिव अपोर ,,

अन अन वनुनस कन मो था'विव
गो'बुराविव क्याज़ि पान
गो'ब बोर ह्_यत वति प्यठ क्या क'रिव
लो'तय त'रिव अपोर ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च़ूर युस क'रिव सु पानस फ'रिव
कर्मुक छु अटल नियम
सो'न रो'फ छ़ारित गो'डुक'र्यं मु ग'रिव
संतोषु त'रिव अपोर पतु०

प्रछ़ु गा'र य'लि लगि बर दित ख्यनस
इसबात सुय गयि च़ूर
थरि थरि मा हुरदु थ'र ज़ान ह'रिव
उद्धा'र्यं तरिव अपोर ,,

प'ज़ि पान होव रुशि रस्त्यन ऋषण
पशुन ति भ'रक प्रय
अथ ऋषि धर्मस प्यठ तोहि ति द'रिव
सम दृष्टि त'रिव अपोर ,,

रुति भाव था'विव रुतिय ब'निव
रुती क'रिव कार
यी यति क'रिव ती तति सो'रिव
सत्कर्मु त'रिव अपोर ,,

अपारि वदलै विद्या छि परुञ्ज
योगुच छि तत बोल चाल
प'रिवै यति श्री गीता प'रिव
योगै त'रिव अपोर ,,

अपारि ब्रह्मय छु छ़ारान तु गारान
यच़ छुस ज़ि तंहंद लोल
यति क्या छु प्रावुन ज़ि वियोग ज़'रिव
पज़ि प्रेमु त'रिव अपोर ,,

वाव तस क्या करि तारुक मन्त्र
यस आसि दय सुंद नाव
पानै छु करना'वि चिन्ता मु भ'रिव
ड'रिव मु त'रिव अपोर ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

नील कंठ जी

सीता विलाप

रमा छस बु अशोक वनस
अमां सु कोनइ आम

यमिसुन्द राग छुम मंज़ बाग मनस
तुमिस छु नाव श्री राम
दोहस तु रातस विलु ज़ार वनस अमां०

व'नि छुस दिवान ज़नारधनस
सो'नस म्य गोमुत त्राम
ब'ति काव ला'गित गछ_स वनस ,,

मो'खतै आ'सिथ बु फोतु बनस
या पो'खत आ'सिथ खाम
नतु लोलु सू'त्यन हनि हनि छो'नुस ,,

कुति लो'ग आनन्द आनन्दगणस
सूज़नम नु कांह पैगाम
वरदायकस बु शरण बनस ,,

विलुज़ार वुनिमस दोहस तु रातस
दो'ख हरिह्यम श्रीराम
"निलुकंठ" प्रारान शो'भ दर्श'नस ,,

द्रौपदी विलाप

हा कृष्ण मनसि वासन क्वासी यादव नन्दनै
इमां अवस्था संप्राप्तं अनाथं किं न रक्षसि

वलो श्यामु लालो बु कोताह इ चालै
सभाये अंदर छिम कडान जामु नालै

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ल़्'जिस वो'परन मंज़   व'ज़िस क'मि व़ु शापन
ग'जिस शर्मि दावै   ल'जिस गिल ब़ु ज़ालै   सभायें०

म्य वुञक्यन करान   छ़ुमऩु कांछ़ा हिमायत
यि क्या ओस दयन   ल्यूखऩुमुत म्य कपालै   ,,

च़य रुस्तऩुय रछ़म कुस   अबल छ़स ब़ु ना'री
च़_ रछ़तं तऩु वुछ़तं   छ़सै कमि हालै   ,,

प्ययि मा न्यंदर च़यय   सदा छ़ुक ऩु बोज़ान
गयी को'त दया   वुञक्यनस हे दयालै   ,,

च़_ छ़ुक दीऩु बन्धु   मऩु' म'शराव दीनस
हृषिकेशऩु अशने   हरान छ़सऩुया चालै   ,,

म्य वो'ञ रूज़ामच़ छ़म ऩु   कांसि हंज़ आशा
तमन्ना म्य टाठि छ़ुम तऩु   रटऩुहत वऩु नालै   ,,

सभासद वनेम'ति छ़ि   मौनिक चित्र ज़ान
दया छ़कऩु वुञक्यन   इवात हे दयालै   ,,

दया सागरो कर   दया "नीलऩु-कंठस"
च़_ दिस पाऩु दर्शुन   इतस अन्तऩु कालै   ,,

कर सनऩु कुनुय बनि सू'त्य तस
जानानसऩुय जानानसऩुय
तन लोलऩु नारन ज़ा'जनम
अनज़ानसऩुय अनज़ानसऩुय   ।

मयकिस दुकानस व'थि छ़ि बर
पैमान भ'र्य भ'र्य क्या ज़बर
च़नऩु रुस्त बऩु छ़ुस आ'सित अंदर
खुमखानसऩुय खुमखानसऩुय   तन लोलऩु०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

निश आ'सिथ्य दूर्यर म्य प्योम
रूसिस ऩ पय नाफ़्कुय नन्योम
छ़ांडान सुगंध़ दिल तारि गोम
नादानस़ुय नादानस़ुय तन लोल़०

गोस नज़ि पयस मो'कजारकिस
कोचस ब़ गोस व्यवहारकिस
सों'बरनि लो'ग़ुस संसारकिस
सामानस़ुय सामानस़ुय ,,

देव आ'सिथय ज़ीव़ नाव प्योम
सो'न आसिथय म्यज़ि त्राम गोम
पो'क्तस़ म्य फोतय खाम गोम
दुरदानस़ुय दुरदानस़ुय ,,

अद्वैत अमृत़ कुय सु मस
चऩ सु'त्य ब़ बनहा एक रस
द्वयि रोज़िहे कति म्य त़ तस
कुनि आनस़ुय कुनि आनस़ुय ,,

यच़ काल़ कुय तस निश जुदा
गोमुत ब़ छुस मेलि ना सना
तस रुस्त म्य आराम ज़रा कर
देवानस़ुय देबानस़ुय ,,

यथ दा'दिस़ुय गछ़ि बैद्य बनुन
तस भाव़हा बो' सीर पनुन
नत़ राज़ि दिल क्या छुम वनुन
बेगानस़ुय बेगानस़ुय ,,

"नीलकंठ़" प्रेम़ चि वति च़_ नेर
वातक मुकामस पो'त म़ फेर
प्रावक च़ अद़ केंह लगि ऩ च़ेर
निर्वाणस़ुय निर्वाणस़ुय ,,

——

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

देवी अस्तुतिः

पादुय कमलन तल मा'जि म्य'ति वरतम
अनुग्रह करतम मा'जि अनुग्रह करतम

कष्ट दूर करतं संतुष्ट रोज़तम
बालुकस नालु ता'य फरियाद बोज़तम
पाप शाप कास्तम संताप हरतम अनुग्रह०

म्योन हाल पानस छुय ना रौशन
बे होशस म्य'ति अनतम् होशन
तोषतं तु मनि मंज़ लोलु रस भरतम ,,

कन थाव म्यान्यन आ'रत्यन नादन
आसय शरण बोज़तं फ'रियादन
सार छक च़य मा'जि धा'रणायि धरतम ,,

भय दूर करतं य'मि संसारुक
मटि बोर वालंत खो'टि व्यवहारुक
तंग आस यमि निशि वासना फिरतम ,,

च़ोदहान भवनन माता च़य छक
दाता च़य छख त्राता च़य छक
रोगु ता'य शोकु निशि जल जल म्य कडतम ,,

वदवुन बालुक मा'जि छुस प्रारान
थो'द तुलतं इतु लारान लारान
दिलासु दितु म्य ओ'श वो'थरावतम ,,

दीनुस तु क्षीणस सत छम चा'त्रिय
भास्तं हृदयस मंज़ हे भवानी
दासस त्रास ता'य वसुवास हरतम ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

संसार् द्वैतन बुय रो'टमुत छुस
दुख सागरस मंज़ बुय फो'टमुत छुस
खारतं आवलुनि मतु म'शरावतम अनुग्रह०

पाय म्योन च्.यय रुस्त कांह करिनु माता
उपाय रो'स्त्यन च्.य छक त्राता
कास्तं अन्धकार दास गंज़ुरावतमु ,,

वीलु ज़ार मा'जि बोज़ च्.य "नील कंठस"
शील हर च्.य छक आशा चा'ञि छस
भक्ति भाव पननुय म्य'ति पुशुरावतम ,,

शिव लीला

मस्तानु हा मखमूरु मते सूर मते लो
मनि मंज़ करय गूरु मते सूरु मते लो

जटि छय च्.य गंग, हटि वासुकुई
ड्यकि चन्द्रमय शूभान
रो'पु तन च्.य मनि च्.रु मते सूरु मते लो मनि मंज़०

शक्ति च्.य सू'त्य छय, छुक त्रिलोचन
छुय वृष्भु वाहन
भवनन अन्दर मशहूरु मते सूरु मते लो ,,

बो'जह चोर छय मंज़ चो'न अथन
आयुध शूभा'नी
असुरन च्._ करवुन चूरह मते सूरु मते लो ,,

हटि छय च्.य शूभान रुद्राक्षमाला
मृगछाला ना'लि
अमर हा आगूरु मते सूरु मते लो

हा राजु त्रभुवनके म्य वो'थूरुई
हर दिशाये च्.य्य
वृच् म्यात्रि वनुवान हूरु मते सूरु मते लो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

निर्मल यि तनु चा'ञ, बो'ई ज़ि मलुहन
भक्ति भावय सू'त्य
कुस्तूरु कोंगु कोफूर्र मते सूरु मते लो
मनि मंज़०

आकाशस मज़ इम छि ज्योती
रूपु तिम सा'री
प्रज़लान चाञ्नि नूरु मते सूरु मते लो ,,

शिन्याशियन मंज़ वास चोनुई
अविनाशो छुय
हा मनु के कनु दूरु मते सूरु मते लो ,,

हा आशुतोषो घटि मन्ज़ हाव
सिर्यकुई प्रकाश
हरदु कमलके बोंवूर मते सूरु मते लो ,,

यथ ज़िन्दगा'नी मन्ज़ बो' क'रहा
राग हा'सिल चोन
अन्तस ब' मा अथु मूरु मते सूरु मते लो ,,

मतु त्रावतम थवतम च पनुन्यन
पदमु पादन तल
ज़ान्ह युथ ना च.यय निशि दूरु मते सूरु मते लो ,,

आर्थी बो' क'रहा चाञ्न करिथ
च.यय स्यठाह सन्तुष्ट
सेतारु वियि सन्तूरु मते सूरु मते लो ,,

छुक रामु ध्यानस मंज़ मग्न
संसारु निशि दूर
छुक मस्त क्याह मसरूरु मते सूरु मते लो ,,

हा नीलुकण्ठो "नीलकण्ठस"
राम भक्ति दिस
अनुग्रह करुस वों'न्य पूरु मते सूरु मते लो ,,

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आफताब जी कारिहामी

"भास्कर"

पो'त ज़ूने मो'त सुल् नोवुम
लल् नोवुम नारायण

प्रयि तमिसंज़ि ह्यि तन म्य ना'वुम
पोश वथुरस प्यठ गोशन
रोश् इयि ना होश राव् रोवुम ललनोवुम०

बाल् पान तस पत् राव् रोवुम
हाल् कमि सूय नाल् रट्हन
शिव् शम्भो शुन्य बोल् नोवुम ,,

काम् देवस नाम् लेख् नोवुम
पाम् थविनम कर डेशन
रुम् रुमै राम् रम् नोवुम

द्वार्. पत द्वार् वार वुछ् नोवुम
ज़ूनि छोंडुम मंज़ तारकन
मारकन मंज़ लाल् उल्लसोवुम ,,

लो'लि मंज़लि लाल् लल् नोवुम
बोल् नोवुम सुबह शामन
चीर्य सोवुम सुलि वुज़नोवुम ,,

ज़ीर् बम् कुय सीर वुज़् नोवुम
फेर् नावुम तति हेरि बो'न
वेरि त'मिसंजि शेरि वात् नोवुम ,,

ज्यव नार् सू'त्य वार् छल् नावुम
तव् लोलुन नार शोलुन
अछिव बूज़ुम कनव वुछ् नोवुम ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कंदु नावद ओरुद नोवुम
फंदु क'रित यूयं अनतन
अंद लो'बमस नु वोंदु फोलु नोवुम ललुनोवुम०

हंसु द्वारय वारु प्रज़ नोवुम
प्रारि प्रारोस रामु रादन
ब्रह्म_सर पान सरु करु नोवुम ,,

अथवासय रास खेलु नोवुम
श्वास उश्वास नो'न छु भासान
सास "भास्करु" विकास भासुनोवुम ,,

ओम परुवुन हंसु ताजदार
कमि वनु कुय जानावार

ज़ालु लगिना सुय अनका
मालु गंडहस छुम तमुन्ना
नालु रटुहन सुय बालु यार कमि०

को'छ़ बु दिमुयो हा कावो
गछ़तु वनतस दिपि दर्शुन
व'छ़ि वां'लिजि़ भावस असरार ,,

पोशनूलव पो'रयि हंसो
कुकिलु बोलान गोविंदगो
हरु मुख छा किनु हरुद्वार ,,

प्यठ गोशन रटुनम जाय
का'लि पोशन प्ययि मो हाय
वोंदु हंदयंस तु रोशु च़लि यार ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

खत वु लेखस हटिके रतु
ज़ा'विलि खतु सुति शूभिदार
इयि नतु छुस वु दावादार कमि०

बा'लि अनतने दूरि मा का'लि
का'लि जिगरस गा'म परगा'लि
ना'लि जामै तस छि ज़ारकार ,,

हंसु पखुवय पतु लारोस
प्रारि प्रारोस डंडक वन
दोह दरि गछि़ सोरि लो'कचार ,,

दरदु सोज़ुक संतूरु साज़
सासि परदु ग्यवि कस्तूर राज़
ब'ति ती ती वनान कोलुतार ,,

"भास्करु" चे़नतु सासन मंज़
रुमु रुमु खास़ छु भासानी
तलवुन छुम सु सिरि असरार ,,

ललवान सिरि हक ज़ारि ज़ोरि ह्यरि बो'न
छम वज़ान ज़ीरु बमु तार

ह्यसक्ल मयखानु मस य'लि वु चोवनस
भोवनम सिरि असरार

आलव तोरै गोक द'रियाव दामु चोक
शौकन को'रुख मिलुचा़र

सतवय आकाश सतवय पाताल
तल प्यठ दित कुनुय ठान

गाह घटु गाह गाश गाह प्रकाश नरान
यक्सान सोरुय सामान

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

रंग् रंग् बेरंग सूरत सों' मूरत
न'त्र द्रायि दर बाज़ार हासक्य०

गगुनयि पवुनयि लागुनयि भागुनयि
सत नयि ब्ययि नवद्वार

सुय हज़ार दास्तान बोलान नयि नयि
मो'लवान ह्यथ खरीदार

पननुय ह्यो'न द्युन पनुनुय बाज़ार
पानै ग्राक सौदागार ,,

हरद् सोंत् कुन्गरस वोंत कुनि लो'बमस न्
दरद् नयि फयूर शह्_जार

सत परद् च'टिथय हूर् द्रायि वनुवान
पोशन क'रिख तूमार

ग्रक ल'जि सो'दरस दरवाज़् खुल् गयि
अनुग्रह द्युतुक अंबार ,,

कंद पूरी जून् डवि शश त् रव सा'विथ
ना'वित अंदरिम तोंदुर प्राण

घटि मंज़् "भास्कर्" सास भासना'वित
सुय प्रावि शांत आकार ,,

फुल वनि सोन्त् छुय म्योनुय सालो
लालो अज़ वलो माल्युन म्योन

आरवल आर् क'च् गयि कमि हालो
चालि चालि ओ'श धारि हारान छस
यच् काल गव वो'त्र प्रार् कूत कालो लालो०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

यमबरज़ल लजमच़ बुमबरुनि ज़ालो
प्यालु ह्यथ मसवल प्रारान छस
दूरिरुक दाग दिलस ह_यथ छुय गुलालो ,,

माय़ु चानि सुलि विलि फो'ज़ु ही मालो
ल'यि लोसु इयु कर दियु दर्शुन
द्र्‌य चा'ञि छम वो'ञ यूत नो बु चालो ,,

रोशु रोशु करहै पोशन मालो
रोशि मति गयि ना गोशन म्योन
रोशि मा पोशु नूल दोह गछ़ि वो'बालो ,,

आदुनुक याद पाव वादु मो डालो
नाद लोय कुकिलव गोविन्दु गू
आदन बाजि म्याञि त्रात्र शूरि ख्यालो ,,

बा'लि वन्तु इयना ना'लि छस मालो
वा'लि छिस कनुन्य ग्राय़ु मारान
का'लि मा रा'वव कस क्या मलालो ,,

साकया प्यालु चाव माला मालो
युथ नु सु बाकी रोज़ी ग्राव
मस चथ रसु रसु बनु मतवालो ,,

सासु मंज़ु ख़ास सुय रटुहोन नालो
सास मलि सन्यास मेलि गोपाल
"भासकरु" सास छुय ना'ली नालो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अन्य भक्ति काव्य रचनायें

- मा० शिवजी "दास"
- आनन्दजी
- केशवदास जी
- मकुन्दराम जी
- दीनानाथ जी 'नादिम'
- अर्जुनदेव जी 'मजबूर'
- मोती लाल जी 'साकी'
- प्रेमनाथ जी 'प्रेमी'
- काशीनाथ जी 'बागबान'
- जियालाल 'सराफ'
- त्रैलोकी नाथ 'हुशरू'
- अज्ञात और इत्यादि

इस भाग में अन्य कवियों के काश्मीरी भजन और लीलाऐं सम्मिलत की गई हैं। यह लीलाऐं काफी जनप्रिय हैं और बड़े चाव और लग्न के साथ धार्मिक उत्सवों पर और नित्य पाठ-क्रम के रूप में गाई जाती हैं।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

गो'डुत्र गणपत जियस कुन कर नमस्कार
पतय रठ राजुरे'त्रि हुंद खास दरबार

व'नित क्या ह_यकु बु देबी चा'त्र लीला
करै वो'त्र मूर्खं_ गियि कित्र मूर्खं_ खेला

चु माता शारिका संतुष्ट म्य प्यठ रोज़
गदा आमुत बु दर्गाह छुस सदा बोज़

वहा'रित ज़ाल संसारन वो'लुम नाल
करुम वो'त्र घारु नतु क्या म्योन छुय हाल

मदुन लोभन मोहन क'र मचु छनम जाय
कृपाय कित्र करुम मो'कलावनुक पाय

अहंकारन स्यठाह ह्योत'मुत छुनस तल
इमन चो'न मुशकिलन माता करुम हल

बु दर्शन छुस नु वातान न्यथ भवानी
क्षमा पापन म्य करतम मा'जि भवानी

को'ठयन शक्ती अ'छिन थावतय पनुन गाश
दरईं दुनिया फ़कत चा'न्नि म्य छम आश

म्य मूर्खस गछ़तु बूज़ित मा'जि भवानी
सिवाये चान्नि वनु कस कुस छु म्योनुय

दिलुक तमन्ना म्य कडंत छुस बु चोन दास
रक्षा करतं पद्यन चान्यन तलुय बु आस

कर्मफलु कित्र अगर केंछा म्य छुम पाप
क्षमा सागर चु_ य'मि कित्र छक करुम माफ

कलम तुल पानु लेख म्या'न्न कर्मु लेखा
करुम स्यज़ कांह अगर ह'जि छम म्य रेखा

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

क्रपा सागरु जगत माता छु चोन नाव
शरण आसै पद्यन पनन्यन तलय थाव

सिवाये चान्ति छुम नु कांह रछन वोल
च देवी म्याञ्जि छखना मा'जि तय मोल

भुजव अष्टादशव सू'त्य कर च रक्ष_पाल
च यमि किञ्ज आसुवञ्ज छख दीनु दयान

च़य रुस्तुय कस वनै कुस बोजि म्योनुय
वु छुसना नाबुकार संतान चोनुय

यि अक मशहूर कथ प्रथ कांह छु ज़ानान
कु पुत्र छुय कु माता छय नु आसान

मंगुन छुम नय तगान बोज़ुन तगान छुय
चवुवुन शुर मा'जि इथ पा'ठि दो'धु मंगान छुय

दिलस य'च़ कोल अमिकुय छुम म्य हावस
दितम दर्शुन लगय पा'यें पायें बु नावस

वु चान्यन पादुय कमलन रथ वंदय ना
शरीर अर्पण पनुन च़यय पत करुय ना

पनुन जुव जान वां'लिजि ख़ोंठ वंदय ना
पनुनि इम टा'ठि छिम सा'रिय वंदय ना

लगय ना चान्ति मायाये लगय ना
लगय ना वजि दयायि लगय ना

इमन पंपोशु नेत्रन च़यय लगय ना
मुकट धारी सो'न्दर शेरस लगुय ना

यि केंछा़ छुम म्य' चोनुय च़यय वंदय ना
क्षमा करतम क्षमा करतम च़ क्षमा

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च़ छकना. राज्ऀयञ्न राजन दिवान राज
अतीत आमुत छुस म्य बख्शुम ज्ञानकुय ताज

गछ़ान दिथ छक अमीरन च़्य अमीरी
दरईं दुनिया म्य करतम दस्तुगीरी

च़्य निश शाहो गदा प्रथ कांह् बराबर
म्य पादन तल कृपाये पनुञ्य किञ्ञ वर

वु ज़ा'री छुस करान च़्यय दस्त बस्तै
करय अर्पण जिगर ज़न पोशु दस्तै

दो'युम ब्याखा च़्य ह_युव छुमनु कांह् ति दाता
बहर कुस्मुक मददु करु म्योन माता

परेशा'नि यि म्याञ्नी करतु वो'ञ्न दूर
इच्छाये दिल करित गछ़ु_म म्य मन्जूर

च़_ छख म्या'ञ्न इष्टु देवी कष्टु कास्तम
सदा संतुष्ट रूज़ित मनि भास्तम

वनान सा'री छि चाञ्नो जायि सिद्ध पीठ
सिद्धत करतं म्य ह_युव मो'कलित गछ़िम कीठ

बु कश्मीर कुत्य व'थि नेकनाम सतुज़ान
कृपाये चा'ञ्नि किञ्न सरतलि बन्योक सो'न

मूर्खु बो'ज़ किञ्न नु छम शक्ती नु भक्ती
दयालु छख गछ़ु_म बख्शित म्य' मुक्ती

बु छुस आरुत बन्योमुत आरुवल ज़न
गछ़र च़लिहेम बनिहेम आ'नु ह_युव मन

अगर रछ़ुहं पद्यन तल कुस म्य पोर्यम
तवै किञ्न चा'ञ्न भक्ती ज़ांह नु सोर्यम

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

कबूल गछ़_तम क'रित वो'ञ्न म्या'ञ्नि ज़ा'री
वंदय रत पादु॒य कमलन मा'जि चो़'पा'रो

यि लीला परि युस सुबहन तु॒ शामन
त'मिस देवी सफल करि मनि कामन

दपान "दासस" छि चा'ञिस टा'ठ भक्ती
बु॒ दुनिया सुख बु॒ उकबा दिम म्य मुक्ती

लालु॒ लगयो वाल भावस
रामु॒ नावस पा'रि लगु॒य
रामु॒ नावु॒स चा'निस नावस रामु॒ नावु॒स पा'रि लगु॒य

तंग ओनु॒नस व्यवहारन
रंग बुलबुल गोम को'ल
गंगु॒ वोञ्न चाव मंजं यथ वावस रामु॒०

भक्ति भावय नाद लायय
अर्द्ध रा'तन सो'न्दु॒रो
चाञि दर्शु॒न कुय छुम म्य हा'वस ,,

हे मुरारी ! वील ज़ा'री म्या'ञ
बोजक ना कनव
छुक च़ टोठान भक्ति भावस ,,

त्रटि हुन्दि सायवानो
घठि हुन्दि गाशरो
मोह अग्निघटि मज़ लो'गुस दावस ,,

गो'व गोमुत बोर पापुन
दोह लो'गमुत छुम दरु॒य
नावु॒ लजिमुच़ मंज़ व्यथु॒ वावस ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

हे शेव छुक सर्व् व्यापक
ब्यि छुक विश्वम्भरय
केशव तार दिम वर्जिनिस वावस

क्रूठ प्योमुत छुम म्य पानस
संसारुक लंगुरय
ख्यम् क्या छुम न केंह्ति छावस

बाल् भावय वज़ि म्य दितिमय
वनि नो आहम च़् ज़ांह
वनि इतमो ती छुम म्य हावस

शयि शये शय च़्यय छुक
शय न ब्यि रोज़ि कांह
शयि रूद यलि टोठ्योक कावस

"आनन्दो" भक्ति तमि सुन्ज़
ज़ान पनुनुय मोक्ष उपाय
व्रत तमिसन्ज़ दर च़् मावस

———

हे कृष्ण दया छय ना गछ़न
भ्रम् दिथ म'च़न गोख

क्याह् रुत समय ओसुय त्यले
यले च़् राधा ह् यथ
प्रेम सू'त्य रास मंडलस मंज नच़न भ्रम् दिथ०

अन्तग बहिर रातस दो'हस
असि भाति वुठव सु'त्य
तोलान प्रेयम बो'ज़ तारच़न ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दर्शन दि करुणाकर् भक्त वत्सल
उद्दास करिथ गोख
अथ् रो'ट कर वृच़् गोपीय कच़न भ्रम् दिथ०

गोपीय शुराह सास ह्यथ
शुराह छु खेलान रास
आश्चर्य कस ओस वो'ज़ा मंज़ अच़न ,,

माया मोह्न चा'न्य मन मोह्न
मोह्न भ्यो'न भ्यो'न ओस
मोह्न रंग रूप आमुत मुनियन ,,

अमृत रूपी दर्शन मो'खय
व्याकुज़ि गा'मच़ छिय
शुर्य ज़न बो'छे ह्यच़न ब्रछ़न ,,

छ्यऩ कमि सो'नि साञ्नि द्युतुय करिथ
कन कमि भरियु सा'न्य
मन सोन इनस छुय ना पच़न ,,

अमृत वर्षण् नारायणो
शेहलाव मनुय सोन
सन्ताप भव् सागर दज़ु मच़न ,,

असि लोल चोनुय घन्योमुतुय
कमि सो'नि द्युतुय च़ य डोल
सुय लोल सन्योमुत असि कच़न ,,

वरुय च़य करिथ विश्वम्भरय
ब'रय अचख ना
छुय ना सोन ज़रु ज़रै गछ़न ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

त्यागिथ लजायि क्र'निस द्राये
सेवायि आये च.य्य
पज़्या अनह_योत लागुन ह्य_च.न   भ्रम् दित०

आ'दीन अनाथ भक्त आर'ती
पालान छि धर्म तु दान
हितकर उपकार करान गछ.न   "

श्रीधरु करुणाकरु श्यामु सो'न्दर
ज़.नान च.य छिय भास्कर
भ्योन छुखनु सू'त्य सू'त्य आ'सिथ ज़.च.न   "

प्रेमन तु वीणायिं आनन्द स्वरण
भ्रम दिथ न्यून मन सोन
व्रजवा'सीय दा'सो म'लि ह_यच.न   "

प्राणो यी च.य क'रथ वा'णी
फीरिथ बु इमोव यूरि
दुबारु मो'ख होवुथ नु मोह हच.न   "

केशन त्रा'विथ भूषण पा'रिथ
डेंशन छिनु मो'ख चोन
दर्शन करन वाजे मच.न   "

ज़ा'नी न असि चा'नी सीवा करिथ
पूज़ा तु तोताह केंह
दया कर असि व्यच.ार रछ.न   "

पज़िहे नतय छा धर्म करुन
फीरिथ नु नज़.र दित्र
त्या'गिथ मथुरायि गोख अछ._ रछ.न   "

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च़यथ बो'द्ध मन प्राण अर्पण करिथ
धरिथ छु चोनुय ध्यान
सुय ध्यान खेलान असि़ ज्ञान् वच़न   ग्रम् दित०

रछ असि क्षण् क्षण् सा'री निशे
सा'रीय ज़न राज़ ह्यथ
"केशव" आव आप्दायव त्रच़न   ,,

करुम म्य हे प्रभो मंगल
वरुम च़रणार् बिन्दन तल

शरण आसै व् दयि नावस
च़ टोठ्योक शरण्य भावस
गंडित छुस़ भक्ति हुंद अंज़ल   वरुम०

वुज़ान छुम चात्रि प्रेमुक स्नेह
करुम अनुभव म्य नो'न अनुग्रह
गछ़_यम युथ वासना निर्मल   ,,

दि म्य शक्तिपात्कुय प्रसाद
वुछान छुस कोन् चा'न्यो पाद
तवय छम च़थथ गा'मुच़ चं़च़ल   ,,

छु चोनुय आस्नुय सन्मुख
छ़_यनन दु:ख प्राव् निर्भय सुख
म्य सो'य भक्ति गयम सुफल   ,,

छो'च़र छुम ओसमुत कर्मुक
यि ब्रह्मण ज़न्म छुम धर्मुक
तुलन प्रारब्ध छुस अंजाल   ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ब़ छुस पुनर आवृती कालन
फसोवमुत वास़नायि ज़ालऩ
म्य कास अविद्यायि ह्न्ज़ा गांगल वरुम०

गछ़ि_यम सत्ज्ञान त्युथ उपदुन
इयम युथ दृष्टि मंज़ा दो'न कुन
छ़ु सोऽहं नाव़ युथ केवल ,,

म्य रोज़ुन गछ़ि ऩ रज़ा तै तम
बनुन तत़ सत़ गो'छुम उत्तम
छ़ुसै स्वभाव किञ्ज शीतल ,,

दयायि ह्'न्ज़ा दृष्टि कुञ्ज केवल
करुम अन्तर बहिर निर्मल
डलस मंज़ा युथ ज़ालस कंवल ,,

दितम विचार अग्नुक बल
दज़ान कामांदिक़की ज़ांगल
वुछन स्वप्रकाशचोय वुज़ा_मल ,,

हे केशव! "केशव" अर्पणै
सदा निर्मल सुदर्शनै
म्य फो'ल़नाव द्वाद़शान्त़ मंडल ,,

प्रये चाञ्ने दयो नेरय
ब़ फेरय दरद़ नयि हो हो

ह्_यतन सू'त्यन पनुन रहबर
गछ़ख को'त रठ च़ पऩनुय बर
न्यबर मो नेर च़ अछ़् अंदर
दिल़ुक दिलबर छ़ु सोऽहंसो

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च़ अछ़ अन्दर पनुन वुछ ओल
च़ पानय छुख घरुक घर॒वोल
ग्रट॒य फेरान महीन नेरान
व॒ ज़ोरे आबि सोऽहंसो

छ़॒ गफलत घटि गाशस ठो'र
तमी गाशे धरिथ छुय मो'र
शवस खसान दो'ह॒स वसान
शबय रोज़ान छु सोऽहंसो

छुखय रिंदान॒ कत॒रस प्यठ
छु कत॒रय कुलि दरियाव च्यथ
छु दरियाव दूरि अरफानय
गुहान पानय छु सोऽहंसो

रब॒य छुय सब सब॒य छुय रब
सपन रिंदान॒ बाज़ानै
छु हा'सिल वा सफा गा'सिल
छु ह'ासिल आशके हो हो

हुवल अव्वल हुवल आ'खर
हुवल ज़ा'हिर हुवल बा'तिन
हुवेदा शाहि शाहानय
वज़ान पानय छु सोऽहंसो

अथव पन॒न्यन ल्युखुम नामै
"मकुन्द रामै" पनुन अहवाल
यि केंह वव्याम ती ज़ामै
म्य आरामै छु सोऽहंसो

दीनानाथ 'नादिम'

ज़गत जन्नी भवा'नी माज्य पन॒नी
दिमय मीठय पाद॒न॒य माता नमस्ते ।।

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ह्लम भ'र्यं भर्यं छि मो'ख्तकि वाव मालन
थवान फिरि फिरि छि यिम चाञ्यन गुलालन ॥

वुज़ान छुय नागुरादन पोञ्य कोताह
स्यंधन आरन कोलन दो'धु वो'ञ्य कोताह ॥

च़य क'मि वो'नुनय च़ छखु बेकस तु बेबस
च़य क'मि वो'नुनय च़ छख इछ़ या ति तंगदस ॥

च़य क'मि वो'नुनय छि बुलबुल चा'ञ्य हा'रिथ
विहिथ वा'रानुनय मंज़ का'र मा'रिथ ॥

च़ छख ह्मालच जि़ठ टा'ठ ह्शि कूर
तवय छु नूरु आजोशुन च़यय भर पूर ॥

दयस आव न्यन्द्रि मंज स्वपना मनस मंज़
वुछिन अख अपसरा निशिबो'द्ध वनुस मंज़ ॥

यि डींशिथ आव असुन तस द्रायि वुज़ुमल
संगर मालन खटिथ रुज़ छ़ायि तल तल ॥

यह्य वुज़मल तिहिंदि मो'ख याम द्राये
वनिथ कश्मीर दीवी पा'नु आये ॥

लीला

अजु'न देव 'मजबूर'

करख ना सा'नि रक्षा ही भवा'नी
छ़य असि सथु चा'ञ्नि च़य कुन छी नमा'नी ॥
रछांन भ'क्तयनु च़ छख ही मा'ज दीवी
थ'विथ आशा मनसु अन्दर छि चा'नी ॥
यो'गस व्यखुतिस अन्दर ह्यनु आय सा'री
दुखी-दिल अ'सि छि ज़ा'री बोज़ सा'नी ॥

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

खता र'सित्यन च़_ हावख ना वथा कांह
कृपा कर ही स'ती कर मेहरबा'नी ।।
च़_ छख़ु शखुती त' असि दितु एकुत्युक वर
समय कोताह कठयुन आमुत भवा'नी ।।
सपुद़ु क्याहताम़ु छ'करनुह आयि सा'री
च़य छुई मोलूम सोरूई छख च़_ ज्ञा'नी ।।
पन'नी सन्तानु र'छज़्यखु जायि जाये
कलस प्यठ सायि क'रि ज़्यख राज़ु रा'नी ।।
सत्तुच वथ हा'विज़्यख करिज़्यख न' ज़ाह बंद
बो'धी बल मान दिथ ब्ययि अन्नु त' पा'नी ।।
वनौ कस चानि रुस कुसु बोजि़ सोनुई
दया कर च़ई फकत छख सा'न्य वा'णी ।।
व' छुस 'मजबूर' क़लमस आय बखुशुम
व्यच़ारनु था'विज़्यमु व्यथि ह्'ज़ रवा'नी।।

——

मोती लाल "साकी"

ज़ारु पारु

कर्म चठ पतु बुथि छुम वज़ुन वाव
तार दिनु वालि आवलुनि ता'रज़्यम नाव
वानु ज़ोनथम ज़ांह ति मा क'रमय ग्राव
तार दिनु वालि आवल'नि ता'रज़्यम नाव ।।

फुटि म'ति ज़ुवु पाथुन छु मंज़िलस दूर
अनुग्रह नय आसि कथ मलनय सूर
दर्द नयि ह्'ज़ लय बोज़ा छु न टाव टाव
तार दिनु वालि आव'लनि ता'रज़्यम नाव ।।

घटि ज़लि मंज़ु कडतम अनतम गाश
चा'न्य सथ छम प्रोवुम ज़ानमुक राश
काल गंडितन का'त्याह छि गिंदनस दाव
तार दिनु वालि आवल'नि ता'रज़्यम नाव

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ज़ुगि व्यवहार कर्तव् क्यथ ह्यम् पथ
डखि रूज़म अंद् वंद् चा'न्य दय् गथ
शान रुज़म ज़ि़ दोह्दिशि कोरथम भाव
तार दिन् वालि आव'लनि ता'रज़्यम नाव

छ़ोर ओसुस त् था'विथम बान् भ'रि भ'रि
ह्यछि नोवथस ह्यछि हा न् ज़ांह् ति प'रि प'रि
चानि वति कर अ'शि वाज़ि म्यूठ छिर्काव
तार दिन् वालि आवल'नि ता'रिज़्य्म नाव

ब्रह्म् रूप् छुम प्रथ रंग् चोन दर्शुन
छ़ाय ब्रह्मांड सोन छुन् रछ़ ति कर्शुन
नाद् बिंद् छुम थ्यकनस चोनुय नाव
तार दिन् वालि आवल'नि ता'रज़्यम नाव

आनंद गण् मुच़्रुम बन्यंन ता'रि
अर्सर् छिम वा'च़म ग्रट् अन्'वारि
नाम् स्मरण चा'न्न छ़म शोक् पा'राव
तार दिन् वालि आव'लनि ता'रज़्यम नाव

शिव अस्तुति: "साकी"

का'लास नाथ् काल् सम्हार् शंकर
ज़न्मकि भैरव बाल् दिज़ि - तार
यूग् न्यन्द्रायि वो'थुहै योगीश्वर
ज़न्मकि भैरव बाल् दिज़ि तार

समसार पोशि कस यि छु वां'गुजि घर्
नाम् स्मरण् चानि बनि मोकजार
सोरन मर्नकि त् लसन्कि अर्सर्
ज़न्मकि भैरव बाल् दिज़ि तार

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

सूहम शब्दु छुख हनि हनि ईश्वर
वनि-यस आख तस रोज़ि मा लार
न छु तस मरु मरु न छु तस ज़रु ज़रु
जन्मकि भैरव बालु दिजि-तार

निर्गुणु निर्दोंषि हे भस्माधरु
शक्ती नाथ छुख प्राणादार
क्षणु क्षणु तोतनस अ'सि छि हरु हरु
जन्मकि भैरव बालु दिजि-तार

प्राद चा'न्य रटि म'ति असि अमरीश्वर
भक्ति भावु छ'डिम'ति कम छम्ब छार
शीशु नागु तन छ'जि अदु चायि यमि बरु
जन्मुकि भैरव बालु दिजि-तार

अमरनाथ लीला

"साकी"

कमलजि नाथ वो'थ नारायणुसय
शिव दर्शनसय पख अमरनाथ
महिमा प्रावनुक' गो'ण यथ क्षणुसय
शिव दर्शनसय पख अमरनाथ

भक्ति भावु सो'धि वा'निस सतजनुसय
कोसनस जन्मन हुंद अभिलाश
पान पुशुरोवुन वृशाभसनुसय
शिव दर्शनसय पख अमरनाथ

अंधकारु हयनु आय मरनस न ज्यनुसय
दीवु आदि दीवु छय जगतस आश
पूज कर तनु मनु शंकरशनुसय
शिव दर्शनसय पख अमरनाथ

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अछ़ रछ़ द्रामच़ छस वन् वन् सय
सायि करनस आव पान् आकाश
भैरव नाथ छुम रुज़िथ मन्सय
शिव दर्शनसय पख अमरनाथ

यारुन केन्ह छुन् द्यारन त् धन्सय
नाल वलि सारिन्य काल् बा'श
लथ दिथ नेरव जन्म् कृष्णुसय
शिव दर्शनसय पख अमरनाथ

देवी अस्तुती: "साकी"

छि ह्यति मुति शेरि प्यठ असि पाद चा'नी
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी
जगत जननी च़ माता राज़् रा'नी
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी

तोता चा'नी यिमव क'र तार् तिम त'रि
रोट्य दामान् च़य छख कासवुनि ठ'रि
च़ बखशनहार छख कांह् छुय न सा'नी
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी

म्य सहस्र नाम् वुछुमय सास् ब'दि रूप
घटन मज़ चा'ञ्य सथ प्रजलान छि धूप
च़ दुर्गा शारिका छख मा'ज सा'नीं
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी

च़ तुल मुलि राज्ञा च़य शारदा छख
च़ छख हेमावती च़य अबिम्का छख
छि व'लि म'ति क्रीड्जालय कर्म ला'नी
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी

Colleotion of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

च़ पालन हार छख असि पालना कर
दया करत़ु च़य छुय असि शाफ वो'नि ह़र
दिवान मुक्ती छि चा'नी मीठ वा'णी
क्षमा असि कर क्षमा माता भवा'नी

दिल फोंलि दर्शन चाने सूऱुमति सफ़ुं गोसाञ्
दिमुयो गो'ड अशि वाञ्ञो सूऱुमति सफ़ुं गोसाञ्ञो

शिव छुख कैलास वा'सी शक्ति छय चा'ञ दा'सी
तति छय वज़ान शीऩु शाञ्ञो सूऱुमति०

जटि छुय चन्द्रम लोभान ह़टि छुय वासुक शोभान
गौरी शंकर साञें सूऱुमति०

मृग़ु छाला छुख वलिथ़ुय पानस भस्मा मलिथ़ुय
खुर कास असि ङयक़ु लाने सूरमति०

जटि छुख गंगा ञावान पापव निशि मोकलावान
यमराज़ु भय चोन माने सूऱुमति

छुय त्रिशूल काल़ु संह़ारी पाऩु छुख कल्याण का'री
चानि क्रोध ज़ग मा फाने सूऱुमति०

नन्दकेश्वर चोन वाह़न पूर्ण कर मन कामन
कुस ऩु चोन मह़िमा ज़ाने सूऱुमति०

रुद्रगण छिय चा'ञ्ञि संगी सा'री चरसी भंगी
काम़ुदेव दो'द च़खि चाञ्ञो सूऱुमति०

आ'रति छिय अ'सि छ़रान कोऩु छुख भवस़ुर तारान
प्रारान तन मा प्राने सूऱुमति०

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

भोलानाथ् सोन संकट आवागमनुक च़य च़ठ
इत् गछ़ रोज़ि वेमाने सूर्मति०

ओस कस रुज़ित अ ंदरी वैर
क'मि निय् प्रा'टित म्या'न्य पन् पहा'र
मुरलीदर् सुन्द छुम यी खैर
क'मि निय् प्रा'टित म्या'न्य पन् पहा'र क'मि०

थो'कमुत सुदामा घर् यलि आव
नेत्रव त्रो'वुन आ'शि दरियाव
यति कुस राज़ा रोज़ान गैर ,,

क'ति छुम घर्बार यो'त को'त आस
फ़ाकै वा'लिजि गोम तलुवास
गा'मच़ को'त म्याञ्जि तुलसी वा'र ,,

क'ति गय पा'दु इम गुल तु गुलज़ार
आय क'ति यो'तुनस मोख्तु फं'वार
रंगु मंदोर्यन ल'ज ना ता'र ,,

आय कर यो'तु इम दास दा'सीं
शुर्य म्याञ्जि गय मा वनवा'सी
मायि ह्'च़ भा'र्या द्रायि ना सा'र ,,

को'त गयि मा'सूम सुन्दर पोश
लोल आम वुछ्हक रोवुम होश
मूरान गुलि ओस प्राटान दा'र ,,

ओरुत सुदामा गव परेशान
व्य'ख्च़्_य माया ओस डेंशान
द्रायस सुशीला बुथि वनहा'र ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

म्य सोंगों पान दर्शुन चोन
बन्यमना शारिका दीवी
मनस मंज़ राग चोनुय वों'न्य
सन्यमना शारिका दीवो

म्य प्यना मा'जि पायस मन
वु करह_य चा'न्य आराधन
म्य अन्दरी चाञ्नि लोलुक शूह
घन्यमना शारिका दीवी

यि दिल म्योन ज़न छु क्रेंखा अ'ख
लगिथ क्रेंहञ्‌ार छु अथ प्यठ सख
अक्षर अख पनुनि भक्ति हुन्द
खनखना शारिका दीवी

व छुसना क्रूर अज्ञा'नी
स्यठाह मूर्खा तु अभिमा'नी
म्य माता गाश ज्ञानुक सुय
अन्यमना शारिका दीवी

लगान कोताह मधुर दुनिया
यि खा'ली आसवुन स्वपना
म्य सोरुय सिर ज़्यनुक मरनुक
नन्यमना शारिका दीवी

दिवान भ्रम आयि मोह माया
दया करिना महामाया
म्य संसारुचि यि मोह_ माया
छे'न्यमना शारिका दीवी

वु "प्रेमी" छुस तसुन्द अभिलाष
करय्मना मा'ज्य पूर्ण आश
उपाया भवसरस तरनुक
करिमना शारिका दीवी

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

काशी नाथ 'बागबान'

घन्योमुत छुम मनस चोन भाव
ज़गत माता म्य दर्शुन हाव
म्य आमुत लोलु वानन छाव ज़गत माता०

ज़गत माता च़ टोठान छख
भगत सन्तानन'य वेशक
ह्यवान युस लोलु सूंत्य चोन नाव ,,

म्य वोल शानव प्यठै बोरुय
म्य पुशुरोव पान च़्य सोरुय
म्य केवल चोन छुम चिकु चाव ,,

बु छुस प'ज़ि किञ स्यठाह् नादान
करान छुस पाप छुस अनज़ान
करूम माफ छुय च़्य माता नाव ,,

प्रियम नगरस अंदर चामुत
बु चाञ्नो डेडि तल आमुत
प्रियम अमृत पनुन दो'ध चाव ,,

तमिस क्या गम यमिस यावर
च़ आसख ताज दिथ बरसर
शत्रु सुंद पोरि क'ति तस दाव ,,

वदान छुस चा'ञ्य घनेयम कल
दलिस तल मा'जि ह्यतम जल जल
म्य सतुचे प्रेमु न्यन्दरे साव ,,

वनान छुस वीलु तय ज़ारी
थो'कुस यूत काल प्रा'रि प्रा'री
म्य लोकुचार गव बुजर वो'ञ आव ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

ज़गत माता म्य संतुष्ट रोज़
वनान ज़ा'री छुसय च़्य बोज़ा
पनञ दयगत दयालु हाव ज़गत माता०

वु छुस हि़यि गोंदि च़्य कित्य सारान
प्रे़यम सान डेंडि तल प्रारान
च़ प्रे़मकि भाव़ हि़यि गोंदि छाव ,,

छु "बागबान" च़यय परन प्योमुत
गंडिथ गु'लि च़यय शरण आमुत
छु स्मराण चोन हर दमु नाव ,,

टाठि राधायि दर्शुन दितुमो
वोम्बरो कमल छसय लारि इतुमो

मो'ख हाव सिर्यि ह्यु व तीज़ नो'न त्राव
राधायि वुछ मनस कोताह छु भाव
प्रारान छसया कृष्णा लारि इतुमो वोम्बरो०

यथ ज़गतस मंज़ छम चा'ञ आश
अनुग्रह चाञि सू'त्य नेरय्म अभिलाष
कृष्णु गा'मच़ छसय तारि इतुमो ,,

भावु पम्पोश फो'लिम'ति चो़पा'री
क्राव करनि इखना ही मुरा'री
ओश छुम वसान धारि धारि इतुमो ,,

ग़म छुम कृष्णा क'त्यू गारुथो
दूरय्र चोनुय क'त्यू ज़रुयो
डालु दितु बालु लाचारु इतुमो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

वनस मंज़ राधा छसया प्रारान
ब्रा'ति छिम गछ़ान कृष्णा च़यय छ़ारान
तोतो वनुचे हारि इतुमो बोम्बरो०

कन्द तय नाबद भरुयो थाल
राधा वति प्यठ प्रारै कोताह् काल
कृष्णु गा'मच़ छसय तारि इतुमो ,,

लोलुचि लीला प'र म्य सा'रय
त्रन भवनव हुंद छुख स्वामी
भवुसरु च़य रोस्त कुस म्य तारि इतुमो ,,

मा'जि शारिका'यि कर दया वर दया ही भवा'नी
कर दयायि हुंज दृष्टी सु'य छम ब'ड मेहरबा'नी

आयि लारान च़य निश योर कर्मु खुरि भावा'नी
मतु वुछतु कर्मन कुन सो'य छम पशैमा'नी

को'तान रोजि़ युन तय गछ़ुन को'तान रोज़ि क्रेशुन वदुन
तार दिवान स़ारिनुय छख असि ति रोज़ तारा'नी

कोपुत्र छु माजि आसान मा'जि छनु तस ति रोशान
अ'सि मंगान चा'ञी दया ज़गतुचि राज़ु रा'नी

नखि छख डखि छख च़य च़य सिवा कांह ति छुनु ब्याखु
दोह तु रात चोनुन फिराक़ अख अज़ाब रुहा'नी

ओ'श वसान च़ालि च़ाले मा'जि भवा'नि हावि दर्शुन
केन्ह ति छुनु तगान बोज़ुन केन्ह नह छि अ'सि ज़ाना'नी

बूज़मुत छि हलि मुश्किल वो'ञ अ'सि तवय आयि योर
अख रछ़ा करतु वोञि गौर हिमालुचि राज़ु रा'नी

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

लो'कचारस मशिथ गोम बुजरस वो'ञ्न च.यतस प्योम
कांह न गा'फिला म्य ह्यु.व क्रंज़लि पोञि सारा'नी

पाप शाप कास्तम चय वालतम वा'रि पाप'नि
गीर को'रहस ब़ पापव केन्ह् नय छुम वो'ञ्न तगा'नी

"दास'' छु दर इन्तिज़ार भव सागुरस दिस तार
ल्यम्बि मंज़_ पम्पोश खार बोज़तय म्या'ञ्न ज़ा'री

हे सदा शिव अज़ हा म्योन बोज़ख ना ज़ार् पारय
कांह् ति निराश गव ना चाञ्नि ब'डि दरबारा'य

शो'द्ध भक्ति भावुनायि सू'त्य युस चाञ्नि डेढि तल आव
गछि़ तस मन निर्मल ब्ययि गल्यस अहंकारा'य

चाञ्नि नामु मात्र सू'त्य पा'पियव ति प्रोव मोक्षुदाम
ज़न्मन ह्'दि पाप अंबार नखु वसन यकब़ारा'य

मन छल ज्ञानु ज़ल सू'त्य अज्ञानु मल वो'थराव
निर्मल करो पा'राव प्रोन त्राव दागदारा'य

ईश्वर माया चा'ञ्य शूभु'वनि तु लूभव'नि क्याह्
रंगु रंगु आकर्षण कुनि प्यठ नु एतिबारा'य

अंदुरी अच़_ अंदर तथ अन्दर छु शिवु मुर्तीमान
तस सू'त्य मिलुनावु ज़ान मुसु फेर आवा'रय

भक्तीवत्सल छी वनान छुख च़ भक्तयन दया करान
दयायि ह्'दि बर मुच़_राव पापन कर उद्धारा'य

ज्यूति यलि ज्ञानु दीपक मोह्_ अनिघटु गछि़ म्य दूर
सूर गछि़ अभिमानस द्वैतु गलि यकबारा'य

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

जन्मु ज़ाल वलुनय आम तमि सू'त्य ग'ज म्याञ्य क्राम
दर्शुन दितम लोल आम ब्ययि करसु म्योन चारा'य

धनु दौलत तु भा'य बंघ सा'री छि दो'ख बैगुरान
सोर छुय अखु दयु नाव मिथ्या संसारा'य

म्यति दिम लोलु वुज़्या प्रेमु ज़ल च्यवु म्य वुज़िहे
फो'लि म्योन भावु पम्पोश खारु हा'य अंबारा'य

च़ति गछ़ गछ़ दिवान कनु डोल ब'ति नु सा छोरत ज़ांह
वर म्य पादि कमलन तल अथ नु सु छुय कांह चारा'य

राधा कृष्णा छम चा'ञ्य लादन पादन वन्दुयो पान
दीना नाथा कन थाव नादन पादन वन्दुयो पान

ओरुत आदि प्रभातन द्रामुत आमुत मंगने योर
तन मन अर्पण को'रमुत पादन पादन वन्दुयो पान

अथु छो'न न्यथु नो'न ब्ययि ननु वोरुय वातान सो'दामा योर
मनि मंज़ करिम'ति लोलु आराधन पादन वन्दुयो पान

नेत्रव त्रावान अशुने च़ालो लालो दर्शुन हाव
सुय ज़ाल अशि कुय खो'त कोलु रादन पादन वन्दुयो पान

शरणागतु वत्सल मुरलोधर च़राच़र रक्षपाल
पूर्ण कर वो'ञ्य पनुन्यन वादन पादन वन्दुयो पान

डींशिथ हर्षस गव ब्रजुनन्दन बन्धन कासन वोल
अनुग्रह को'र तस त'मि शाहज़ादन पादन वन्दुयो पान

बख्तावारा आमुत लारान प्रारान डेढ़े तल
बख्शित गव तस वो'ञ्य अपराधन पादन वन्दुयो पान

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आधारु ज़गतुक कुनुय छु मन्त्र
शिवायि नमः ओं नमः शिवाये

त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो
जटा मुकट छुय गंडिथ च़्य दीवो
चन्द्र अर्द्ध शेखुर त्रिलोचनाये शिवायि०

च़्य नील कंठो जटन छय गंगा
च़ मोक्षदायक गोसो'न्य नंगा
अलक्ष अगोचर छ़्य्पन गो'फाये ,,

विहित छय गौरी च़्य सू'त्य नालय
व'लिथ छुय सर्फन हुंदुय दुशालै
सहस्र सिर्यि तीज़ च़्य मंज़ जटाये ,,

बो'ज़न विछन हन्ज़ च़्य ना'लि मालय
च़्य योनि कनि छुय नागु कालय
अगौर यि रूप चोन इतम दयाये ,,

अथस च़्य डाबर च़ बीन वायान
कपालु मालु त्रिशूल धारान
भक्तयन अभय छुख दिवान यछ़ाये ,,

रटिथ च़ अंकुश खडग धा'रिथ
धनुर धनुन मंज़ पिनाक चा'रिथ
वो'दनि वु डंडुवत करय हा माये ,,

भवायि दीवो शर्वायि दीवो
भस्मायि दीवो सोरान च़्य ज़ीवो
च़्य ज़ीवु पूज़ान छी भावुनाये ,,

सम्सारु सो'दुरस म्य तारु तारुम
अज़पा गायत्री म्य पान यारुम
वो'लुस कोकर्मव कोवासुनाये ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम
शिवो शिव अर्पण शिवुय बनावुम
ही आषु तोशो इतम दयाये शिवायि०

भक्त यि चोनुय कटाक्ष चाञो
स्वरूप चोनुय चो'पारि ज़ानय
श्रधायि भक्ति इतम दयाये ,,

गणेशस मंज़ छि स्यठाह् यि खूबी
न छुय सु यूगी न छुय सु भूगी
भक्ती म्य प्रावनावतम धारुनाये ,,

अनाथ बन्धो दयायि सागर
संसारुकी दो'ख म्य यिम छि तिम चुठ
ज़गतस दया कर चु ह्यथ ओमाये ,,

———

सो'न्दुरो सोनु संदल गरुय
हो हो करय श्यामु सो'न्दुरय

गूपीय प्रारान गोकुलै
वेरि चाञि फेरान निर्मलय
खेलव तु मेलव अमुरै हो हो०

जसुधा वुछितोन भाग्यवान
टोठेय यस यिम ज़ु सन्तान
बलुभद्र तु ब्ययि कृष्णु गों'दुरै ,,

अतरे पलंग पा'रावयो
पा'टोय करुचु वथुरावुयो
अंजुलि दशन मो'ख्तु हो जरै ,,

गलि गलि दो'द्य बो' चावथो
फलि फलि नाबद ख्यावथो
बादाम कंदु चंदु हो भरै ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

आसान छुख कैलासु कोह
भासान छुख तति रात तु दोह
हरमोंख के गंगा धरै हो हो०

ना'लि मालु खा'लि कनुवाली
रंगु रंगु जामु ज़रुका'री
शीतल स्वभाव पीताम्बरै ,,

अर्धुह रातुन गुलि गन्डित वोज़ ज़ारु म्योन
मा'ज्य भवा'नी अज़ करुख ना चारु म्योन
आदि म्योन तय अन्तु म्योन आधार म्योन
सायि म्योन तय सार म्योन शह_जारु म्योन

अ'हमका तय अनपढा जा'हिला
गा'फिला तय शरमसारा ना'दिमा
होलु जिगरुक कास़ अन्धकार म्योन मा'ज्य०

जान निसारा दर्दु दिल ह्यथ दरजिगर
पापु कर्मव आ'र क़'रम'च़ छस मगर
पापु घटि अथुरो'ट क'रुयम सरदार म्योन ,,

हां'गिना छुस मो'लु म्योनुय छुय पता
अख कतरा चा'न्य नज़रा छम सय्ठा
च़य हय गोहर च़य दुरे शहवार म्योन ,,

रूसि क'टह नाफु ह्यथ छस दरबदर
असलुची माता म्य मा छम कैंह खबर
च़य ज्ञान तय च़य हय मो'ख्तयहारु म्योन ,,

तन्गदस्ती शरमसा'री तय हच़्च़र
सोरवुत्रय दोह अन्तु रो'स्तुय छुम सफ़र
आदिशक्ति जानुवञ्न इसरारु म्योन ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

दोह कलस प्यठ योर वोतसुय शामनुइ
मुर दा'रिथ त्र'थ बु ला'यिथ जामुनइ
खा'लि बु नेरा य'ति भ'रिथ दरबार चोन मा'ज्य०

दामनस तल माता रछतम परदु सान
लुकु पामन युथ नु लगिहे म्योन पान
चय हय सम्पत चय हय भवसुर तार म्योन ,,

सा'यला छुस शान्त रूपी बोज़ सदा
अथु छो'न तय न्यथुनो'न आमुत गदा
शक्ति रूपी वो'न्य च.य ईतुनै आरु म्योन ,,

सर पथर पादन तलय म्य त्रोवुमय
होल जिगरुक हाल पनुनुय भोवमय
दयारूपी जय च.य बारम्बारु म्योन ,,

सनियासय हा गोसाञ्नो कुञ्ज कने इखना वञ्नो

जटि मंज़ छय गंगा जा'री
ज़न छि वसान अमृत धा'री
सूरु भस्मा मलिथ तने कुञ्ज०

डयकस प्यठ छी त्रु न्यथुर
शूभुवनि ज़न पम्पोशि व'थर
वासुक नाग छुय योञ्ज कञ्नो ,,

जाय च.य र'टथम शिन्या शयन
छायि छ._यफ ह_यथ रुदहम नयन
सर्वु व्यापक छुख हनि हने ,,

खासु वृषभा छुय वाहनुय
सैर करान छुख त्रिभवुनय
छय च.य ओमा खोव'रि कञ्नो ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

पान् म्यान्यो मो नाज़् तने
काल वलिथ यथ सूर् बने
शिव च़ गारुन मंज़ बाग मञ्ो . कुञ्ि०

आ'रतिस कास्तम आ'रचर्य
घट् कास्तम अमरीश्वरय
मो'ख म्य हावतम हर्मुख कञ्ो ,,

चो'न भुज़न छी आयुधा
शंख च़क्र कपाल् गदा
सारिनुय मंज़ छुख अन्द् कञ्ो ,,

——

वाद् करिथुय यति हा'य द्रामा'य
च़े'र क्याज़ि गोस योर ना'य आमा'य

वर् गयस क्याह कर् ला'निस
तीर ला'यनम जिगरस म्या'ञ्जिस
सन् कोरनम तु तनुनय आमा'य च़े'र क्याज़ि०

व'छ़ वा'लिज हावस मुच़्_रिथ
क'छ़ पन ज़न त्रा'वुनस पुच़निथ
हृदयस दोदुर हा'य च़ामा'य ,,

स्वर्ग मंडलचि स्वर्गचि हूरे
दिल ह्यथ गोम च़ूरे च़ूरे
च़ूरि निसफ शबन द्रामा'य ,,

बुम्ब् खंजर ब्ययि तीरि मिजिगान
दूरि प्यठै हूरन छु लायान
दिल छुम करान बे आरामा'य ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

राधा छस तन बु ना'विथ
सों'नु महाराज़न ज़न पा'रा'विथ
तनि गंडिमं'ति स्वर्गंकि जामय चे'र०

बन्सी वायान लायान कम तीर
छोकु लद छी गछान कम कम वीर
तीर लायान लायान द्रामा'य ,,

पासु सो'नस क'रुनम सरतल
बालि ला'यनम ला'निन करतल
ख़ून पनुने सोज़स नमा'य ,,

दो'धु च.ूर ह्य मक्खन च.ूर म्योन
वनिवी सखियव तो'हि मा बी ड्यूंठवोन
नाव तमिसुंद छु राधे श्यामा'य ,,

———

दान मनुसा'विथ अथु धारुनोवुथस
अथु पथ निथ म'च._रोवुथस
यच. को'रथम अवमान मदुनो ईछा जान०

रसु रसु कमिताम वति पकुनोवुथस
कुनं ज़ो'न वति प्यठ त्रोवुथस
अनज़ान सरिगरदान मारुमति ,,

मनुवाजि म्यात्रि आशु पोश रुवुना'विथ
सग दिथ वारु फोलुना'विथ
पानै को'रथस फान मस्तानु ,,

———

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri

*पंचस्तविः

आसय शरण च़यय पादन विनयु किञ्ज नमिथुय
व्याकुलतायि मंज़ माता रछतम च़यय
व्याकुलतायि -मंज़ ब'ज़ि आपुदायि मंज़
गृह_ पीडायि मंज़ माता रछतम च़यय

सरुस्वती त्रिपोरु सो'न्दरी ज़गतमाता
भवानीश्वरी छक आसुवुन्य च़यय
ब्रह्मा रुद्र इन्द्र सिर्य चन्द्रमु कुमार
विष्णु गणेश छि पूज़ान च़यय
अन्दरु न्यबरु वा'तिथ त्रिभुभवनस सा'रिसुय
गुल्य गंडिथ म्योन प्रणाम आ'सिनय च़यय
आसय०

यमि सुन्द प्रभाव छुय हद रो'स्त आसुवुन
भगवान तु शेषुनाग छिनु वनिथ ह्यकान
ब्रह्मा तु शंकर तिम ति छिय हा'रिथ
चात्रि ताकुतुक महिमा नु ज़ानान
सो'य चण्डी दीवी रछतन म्य
यो'स सा'रिसुय ज़गतस छि पालान
दीतन म्य तिछ़ बो'द्ध यह'य ज़गतमाता
यमि सू'त्य अशुभ भय छु नष्ट सपदान ,,

ही दीवी छक च़_ त्र्यम्बकु पत्नी
च़यय वनान सती च़यय पार्वती
त्रैलोकी हन्ज़ माता भगवती
च़यय वर दिवान छख च़_ मृडानी
च़यय त्रिपोरु सो'न्दरी च़यय रुद्राणी
च़यय भयानक रूप च़यय शरवरी
च़यय चंडी छक च़यय त्रिशूलु धारा'णी
का'ली च़यय कालस नाशु करान ,,

Collection of Late Arjan Nath Handoo, Rainawari. Digitized by eGangotri